बीच की दरार

बीच की दरार

से० रा० यात्री

प्रिय सुदर्शन चोपड़ा के नाम
जो हमेशा यादों में रहेंगे।

एक

मैं विख्यात पत्रिका 'पर्सनेल्टीज़' का लम्बे अर्से से प्रतिनिधि हूँ। इस पत्रिका में संसार की उन हस्तियों की बाहरी और भीतरी ज़िन्दगी के अन्तरंग पहलू होते हैं जो किसी भी क्षेत्र मे अन्यतम स्थान ग्रहण कर चुकी हो। साधारण पाठक महज उनकी ख्याति से चकाचौंध होते हैं; उन्हें यह कभी आभास तक नहीं मिल पाता कि यह व्यक्तित्व कितने तरह के उतार-चढावों को पार करके प्रसिद्धि के शिखर तक पहुँचे हैं। यह है भी नामुमकिन कि उन लोगों की अन्दरूनी परिस्थितियाँ कोई जान जाये। वह इतनी तरह के मुखौटे अपने चेहरे पर चढाए रहते है कि मामूली आदमी उन्हें न भेद पाने का अवसर पाता है न दृष्टि।

मेरे मालिक मुझे हर प्रकार की सुविधा देते हैं और चाहते हैं कि जिस व्यक्ति के सम्बन्ध में मैं लिखूँ उसके व्यक्तित्व का कोई कोना अन्धकार में न रह जाये। यह सही है कि हम साधारण लोगों के जीवन मे इतनी एकरसता होती है कि हम दैनिक जीवन-क्रम के चक्र में पिसकर रह जाते हैं। हमें कभी यह अवसर नहीं मिल पाता कि मौज में आकर खुल खेलें। हम जिन्हें उत्तेजनापूर्ण तेज़ जीवन जीते देखते हैं उनसे सहज ही ईर्ष्या करने लगते हैं लेकिन वह अपने दैनिक जीवन में कितने खतरनाक जोखिम उठाते है इसका हमे कोई परिचय मिल जाये तो हम घबरा उठेंगे। जैसा कि मेरे पाठकों को याद होगा मैं जब तब चोटी पर पहुँचे लोगों की जीवनियाँ 'पर्सनेल्टीज़' के माध्यम से उनके सामने रखता रहता हूँ।

इस बार अखबार के चीफ़ एडीटर मिस्टर ग्रेवाल ने मुझसे कहा कि प्रसिद्ध सिने निर्देशक मिस्टर नागपाल के सम्बन्ध में जानने की बहुत पाठकों की इच्छा है। पिछले कई वर्षों से इस विषय में पाठकों के हज़ारों

पत्र आ रहे हैं आप विस्तार से उनके बारे में कुछ लिखिये। साथ ही मिस्टर ग्रेवाल ने मुझे यह भी याद दिलाया कि नागपाल एक अत्यन्त व्यस्त निर्देशक हैं। वह आज भारत में हैं तो कल फ्रांस या ब्रिटेन में भी हो सकते हैं। उनसे मुलाक़ात तभी सम्भव हो सकती थी जब मैं पूरी तरह उनके पीछे लग जाऊँ। ग्रेवाल साहब ने यह भी कहा कि यह शख्स अपने बारे में बहुत कंजूस है—बोलता बिल्कुल नहीं है सिर्फ एक रहस्य-मयी मुस्कान बिखेर कर रह जाता है। और जहाँ तक इसके परिवार का प्रश्न है वह एक शब्द भी नहीं कहता और सबसे अजीब बात यह थी कि इसने किसी भी पत्रकार को अपने घर आमंत्रित नहीं किया था।

मैं ग्रेवाल का उद्देश्य पूरी तरह समझ गया। दरअसल मैंने नागपाल के साक्षात्कार को एक चुनौतीपूर्ण मुद्रा में लिया और अवसर की तलाश करने लगा कि कब नागपाल मेरे हत्थे चढ़ता है ताकि मैं उसे पूरी तरह घेरकर एक ज़ोरदार इन्टरव्यू पाठकों के सामने रख सकूं।

कई माह की दौड़-धूप के बाद मुझे एक अवसर मिला—नागपाल महज़ कुछ मिनट की फ़ुर्सत में थे और 'सिचुएशन' समझने की कोशिश में सारी भीड़-भाड़ से अलग बैठे सिगार पी रहे थे। मैंने एक बड़ा जोखिम उठाया और लपककर उनके पास जा पहुंचा। यह भी सम्भव था कि मुझ पर एक तेज़ झाड़ पड़ जाती या वह सिरफिरा इतना बौखला उठता कि 'पैक' करने का हुक्म दे देता। 'अब जो भी हो' का फ़ैसला करके मैं नागपाल के पास पहुंच गया और बग़ैर भूमिका बनाए बोला—"मिस्टर नागपाल, आप बहुत बिज़ी लग रहे हैं। क्या आप सच में इतने 'बिज़ी' हो सकते हैं कि व्यक्तिगत जीवन के लिए आपके पास एक भी क्षण बाकी न हो? क्या कोई आदमी इस दुनिया में ऐसा हो सकता है जो अपने से एकदम बाहर हो यानी खुद में कम्पलीट हो?"

अभी नागपाल ने मेरी तरफ अपनी आँखें पूरी तरह उठाई भी नहीं थीं कि उनका 'पर्सनल सेक्रेटरी' टेलीफ़ोन का पूरा यंत्र उठाकर चला आया और बोला—"सर बर्लिन से मिस्टर 'विल्सन हूस्टर' आपसे बातें करना मांगते हैं।" सेक्रेटरी की बात सुनकर मिस्टर नागपाल का गम्भीर चेहरा और भी गम्भीर हो गया। उन्होंने सेक्रेटरी के हाथ से रिसीवर

लिया और कान से लगा लिया और वह घोर व्यावसायिक बातों में फंस गए।

मैंने इस विघ्नकारी प्रसंग से समझ लिया कि अब मेरी बातचीत का सिलसिला महीनों क्या बरसों तक के लिए पीछे खिसक गया। लेकिन मैंने अपने मन में उम्मीद बनाए रखी और साहस के साथ वहीं डटा रहा।

टेलीफोन पर मिस्टर विल्सन हूस्टर से ज्योंही नागपाल की बातें खत्म हुईं और सेक्रेटरी कुछ क्षणों के लिए उनके सामने से हटा मैंने फिर से उन्हें छेड़ दिया—"मैं आपके बारे मे जानने को बहुत वक्त से क्यूरियस हूँ कि क्या आप वाकई इतने मसरूफ हैं या यह एक लबादा आपने ओढ़ा हुआ है। आखिर वह क्या चीज हो सकती है जो आपको कभी अपने तईं भीतर नहीं घुसने देती।"

पता नहीं उस भले आदमी ने मेरी बात सुनी भी या नहीं, हाँ हाथ में पकड़ा हुआ टेलीफोन का चोगा वह ज़रूर हिलाने लगा। मुझे लगा कि वह बर्लिन से अभी-अभी हुई बातचीत के विभिन्न पहलुओं पर सोच-विचार कर रहा है लेकिन मुझे उसके शब्द सुनकर घोर आश्चर्य हुआ, "मिस्टर मलिक! आप शायद मुझे 'प्रवोक' करके झिंझोड़ना चाहते हैं। मैं आपका 'ट्रेड' समझता हूँ।" इतना कहकर उसने सिगार का लम्बा कश खींचा। उसकी आँखों में व्यंग्य-विद्रूप की एक बहुत महीन रेखा उभर आई जिसे सिर्फ गहरी नजर से ही समझना सम्भव था। मुझे घोर अचम्भा हुआ कि वह मेरा नाम सही-सही जानता था। इसके माने यह होते थे कि अपनी घोर व्यस्तता के बावजूद वह इतना समय निकाल ही लेता था कि हम अखबार वाले उसके या अन्य बड़े लोगों के बारे में क्या कुछ लिखते हैं वह पढ़ लेता है। वह फिर मेरी तरफ मुखातिब हुआ और बोला—"हाँ जनाब, आप मेरे बारे में क्या जानना चाहते हैं?" मैंने अभी कोई उत्तर नहीं दिया था कि स्वयं उसने मेरे सामने ऐसा प्रस्ताव रख दिया कि मैं विस्मय से उसका मुँह देखता रह गया। वह सिगार हाथ में लेकर बोला—"मिस्टर मलिक! आई नो योर ट्रेड—मैं जानता हूँ कि आपको लोगों के भीतर तक उतरने में कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं। आल राइट,

आज रात आप मेरे साथ चल रहे हैं ?"

अन्धे को क्या चाहिये—दो आँखें। मैं पहले तो यह नहीं समझ पाया कि नागपाल मुझे कहाँ साथ ले जा रहे हैं। हो सकता है वह किसी मीटिंग या पार्टी में मुझे साथ ले जाने के लिए कह रहे हैं लेकिन यही क्या कम है कि वह मुझे अपने साथ ले जाने के लिए तैयार हैं। मैं उनके प्रस्ताव को सुनकर एकदम सावधान हो गया और उत्सुकता से नागपाल की मुद्रा देखने लगा। मुझे अपनी ओर देखता पाकर वह बोले "आप एक रात मेरे साथ मेरे घर पर बिताइये। 'कोज़ी कार्नर' में 'नीना विला' कोई इतनी छोटी जगह नहीं है जहाँ आपको एक रात ठहरने में असुविधा महसूस हो—मैं समझता हूँ आपको थोड़ी-सी राहत वहाँ ज़रूर मयस्सर हो सकेगी। इसके अलावा मेरे साथ एक रात रहने में जो आप जान जायेंगे उसे बरसों तक साथ रहने पर भी नहीं समझ सकते।"

अपनी बात खत्म करके नागपाल ने मेरी तरफ़ अपना दाहिना हाथ बढ़ा दिया। इसका मतलब यह निकलता था कि फ़िलहाल मुलाक़ात का समय समाप्त हो चुका है। मैंने अपना हाथ तत्काल आगे बढ़ाकर उनका हाथ गर्मजोशी से दबा दिया और सभ्यता के नाते बोला—"आप कितने व्यस्त हैं यह मैं अच्छी तरह जानता-समझता हूँ। आपको मेरे साथ से असुविधा भी हो सकती है।"

नागपाल खुलकर हँसते हुए बोले—"असुविधा और सुविधा को छोड़िए—कुछ लोगों का काम ही ऐसा होता है कि उसमें किसी की सुविधा-असुविधा देखें तो अपना काम कभी पूरा कर ही नहीं सकते। जहाँ तक फिजिकल असुविधा का सवाल है वह तो आपको नहीं होनी चाहिये क्योंकि 'कोज़ी कार्नर' के 'नीना विला' में पच्चीस कमरे हैं—यह किसी छोटे-मोटे होटल से कम नहीं है। 'विला' में अनाप-शनाप चीज़ों के अलावा नौकर-चाकरों की एक पूरी पलटन है। आप जिस अखबार के नुमाइन्दे हैं उसके लिए मेरे दिल में खास रेस्पेक्ट है। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी लाइफ़ के हर कोने को देखें, परखें और जो कहना चाहते हों बेलाग कहें—देखता हूँ आप मेरे साथ कितना 'जस्टिस' करते हैं।" यह कहकर नागपाल ने अपनी आँखें छोटी करके मेरी ओर देखा और न

जाने क्यों खुद ही ठहाका मारकर हँस पड़े।

मेरे लिए बातचीत के ये कुछ पल वास्तव में स्वर्ण अवसर से कम नहीं थे। मैंने घनिष्ठता का सूत्र पकड़ने के लिए कोई ऐसी बात छेड़नी चाही कि नागपाल साहब स्वयं ही बेखुदी की हदों में चले जायें और कुछ ऐसे सूत्र दे जायें जो मेरे इन्टरव्यू के लिये विशेष महत्त्वपूर्ण बन जायें लेकिन यह सुयोग मुझे उस समय नहीं मिल पाया। उनका सेक्रेटरी फिर आता दिखलाई पड़ा। उसके हाथों में ढेर सारी डाक थी। ज्यादातर पत्र खुले हुए थे—कई लिफ़ाफ़े बन्द भी थे। खुले हुए पत्रों पर सरसरी निगाह डालकर नागपाल ने पत्र सेक्रेटरी को वापस कर दिये और लिफ़ाफ़ों को अपनी गोद में रखकर एक-एक लिफाफा उठाकर खोलने लगे। सम्भवतः यह पत्र अधिक महत्त्वपूर्ण थे और सेक्रेटरी महोदय को उन्हें खोलने की मनाही थी। जो भी हो वह प्रत्येक पत्र को पढ़ते समय अधिकाधिक गम्भीर होते चले गये और मुझे लगने लगा कि अब वह एकदम बदले हुए नागपाल हो गये जिन्हें व्यवसाय ने अपने में पूरी तरह उलझा लिया था। मैंने सोचा कि अब मुझे उठकर चल ही देना चाहिए। अभी शाम होने में खासी देर थी। कैमरा वगैरह सब लग चुके थे—रोशनी की व्यवस्था हो रही थी—कोई क्षण ही जा रहा था जब वह उठकर चल देने वाले थे। उनके निमंत्रण से यह तो साफ ही हो गया था कि मैं ज्यादा देर के लिए वहाँ से नहीं हट सकता था लेकिन यह भी मुमकिन नहीं था कि मैं बगैर जरूरत वहीं डटा रहूँ।

मैं अभी असमंजस में ही था कि मुझे अपना बाकी वक्त वहीं बिताकर शाम होने का इन्तज़ार करना चाहिए या दो-तीन घंटे के लिए दफ्तर की तरफ़ चला जाना चाहिए। मैं उठने ही वाला था कि नागपाल ने सारे पत्र सेक्रेटरी को लौटाते हुए कहा—"विवेक बाबू जरा दो प्याले गरमागरम कॉफी तो भिजवाइये, हम अभी थोड़ी देर यहीं बैठेंगे।"

"आल राइट सर" कहकर सेक्रेटरी चला गया तो नागपाल ने नया सिगार सुलगा लिया और मौज में कश खींचते हुए बोले—"दरअसल कई बार ख्वाहिश होती है कि कोई आदमी मुझसे बातें करे और इस दुनियावी-धन्धों से थोड़ा अलग-थलग निकाल ले जाय मगर मिस्टर

लिक, कोई पास आकर छेड़ने की हिम्मत ही नहीं कर पाता। यह ठीक है कि दुनिया में कुछ लोग गले से ऊपर तक काम में डूबे हुए हैं लेकिन सिर्फ़ उसी की खातिर जिन्दा है यह मैं नहीं मानता। जब कोई आदमी काफ़ी बड़ा या मशहूर हो जाता है तो लोग खाहमख्वाह उससे कतराने लगते हैं। होते-होते यहाँ तक हो जाता है कि उसकी इस मामले में कोई राय नहीं ली जाती; लोग-बाग खुद ही कहने लगते हैं फलां साहब बहुत मसरूफ़ है, उनको डिस्टर्ब न किया जाय। बट यू नो इट इज़ मोर डिस्टर्बिंग टु शन एनी बडी (लेकिन किसी को उपेक्षित करके छोड़ देना उसके लिए ज्यादा दुखद है)।"

यह वास्तव में एक ऐसा छिद्र था जो मेरे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। इस सूराख के सहारे मैं नागपाल के भीतर तक उतरने को तैयार था मगर तभी उन्होंने यकायक बात का रुख दूसरी तरफ़ मोड़ दिया "आपको मेरे गरीबखाने पर पहुँचकर अपने परिवार से मिलने जैसी ही खुशी हासिल होगी—मेरा मतलब है आपको ऐसा लगेगा गोया आप अपने ही लोगों से मिल रहे हों।" अपनी बात कहकर उन्होंने एक पुरज़ोर ठहाका लगाया। मैं इस ठहाके की थोड़ी देर में ही पुनरावृत्ति देख चुका था। इस दौरान यह बात भी साफ़ हो गई थी कि नागपाल साहब बगैर दूसरों को हँसाये अपने परिहास पर स्वयं ही हँस सकते थे। मैंने उनका ठहाका रुकने पर कहा—"मुझे दिली खुशी है कि आप मुझे अपने 'स्वीट होम ले जा रहे हैं वर्ना मेरे जैसे अविवाहित लोगों को यह मौके कहाँ नसीब होते हैं।'

"ओह यू आर बैचलर (अच्छा तो आप अविवाहित हैं ?") नागपाल ने अचम्भा प्रकट किया और फिर मुस्कराकर बोले—"तब तो आपको मेरे साथ एक रात श्योर ही रहना चाहिये—मुमकिन है आप 'कनवर्ट' (बदल जायें) ही हो जायें।"

मैंने नागपाल की मुस्कराहट में शामिल होते हुए कहा—"आम सारी! काश आपके साथ जा सकने का मौक़ा मुझे कुछ सालों पहले मिला होता! अब तो खासी देर हो चुकी है मिस्टर नागपाल।" और मैंने अपने सि की ओर संकेत करके कहा—"अब तो आप देख ही रहे हैं कि मेरा फो

हैड (माया) मेरे सारे सिर पर हावी होता जा रहा है—कुछ वक्त बाद मुझे लगता है मेरा सारा सिर आईने की मानिन्द चमकदार हो जायेगा।"

मैंने अपने सिर पर फैलते गंजेपन का जिस मसखरेपन से वर्णन किया था उसमें नागपाल ठठाकर हँस पड़े और बोले—"इट इज़ ए वंडर-फुल डेसक्रेप्शन अबाउट योर बाल्डनैस (अपने गंजेपन का आपने बहुत दिलचस्प ब्योरा प्रस्तुत किया है), बट इट मेक्स हार्डली एनी डिफरेंस—बाल्डस क्रिएट ए क्रेज़ फार फेयर सैक्स (लेकिन गंजेपन मे कोई खास फ़र्क नहीं पडता ; गंजे लोग औरतों में अपने तईं एक खास किस्म की दिलचस्पी पैदा कर देते हैं।।" अपनी बात की पुष्टि में नागपाल ने संसार के प्रति प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण गंजों के नाम गिनाने शुरू कर दिये और अंत मे उन्होंने अपने सिर पर भी हथेली फेरकर जता दिया कि वह भी स्वयं उन गंजों की फेहरिस्त मे मौजूद हैं।

मैंने नागपाल को हल्के मूड में देखकर कहा—"देखिये कब किसकी इनायत होती है इस चांद जैसे अपने सर पर—वैसे तो शायर मरहूम पहले ही फरमा गये हैं "कौन जीता है तेरी ज़ुल्फ के सर होने तक।"

इसी समय बेयरा 'ट्रे' में दो प्याले कॉफी लेकर आ गया और उसने ट्रे लॉन पर रखकर प्याले हम दोनों के हाथों में थमा दिये। मैंने अपनी कॉफी नागपाल से पहले खत्म करके प्याला नीचे रख दिया और आज के अप्वाइन्टमेंन्ट्स की तारीख देखने के लिए बैग से डायरी निकालने लगा।

डायरी मे मैंने देखा कि 'सिनी मिनी' हॉल में आज एक 'न्यूवेव' फिल्म का 'ट्रायल शो' है जिसकी रिपोर्टिंग का काम मुझे ही सरंजाम देना था—जिस संवाददाता को उस फ़िल्म की समीक्षा लिखनी थी वह यकायक बीमार हो गया था।

ज्यों ही मिस्टर नागपाल ने कॉफी खत्म करके प्याला नीचे रखा उनका सेक्रेटरी दौड़ता आया और बोला—"मिस्टर दिनशा आ गए हैं—नाव एवरी थिंग इज रेडी सर (अब सब मामला तैयार है)"

"आई सी" कहते हुए नागपाल उठे और व्यस्ततापूर्वक मुझसे हाथ

मिलाकर चल दिए। अब उनकी व्यस्तता दो-तीन घंटे तक चलने वाली थी। मुझसे जाते-जाते बोले—"हज़रत शाम तक के लिए मुझे छुट्टी दीजिए—आप आ जाइये और मेरे साथ मेरे गरीबखाने पर तशरीफ़ ले चलिये।"

मैं ओ० के० कहकर मुड़ गया और टैक्सी की तलाश में बाहर सड़क पर आ गया।

दो

मुझे फिल्म देखने और बाद में एक छोटी-सी सेमिनार में भाग लेने में खासा वक्त लग गया। पिछले तीन दिन से मेरी अपनी गाडी 'वर्कशाप' में पड़ी थी इसलिए टैक्सी के सहारे काम चलाना पड़ रहा था। मैं हॉल से बाहर निकला तो मैंने देखा खूब जमकर बारिश हो रही है। मैंने घड़ी देखी तो मुझे हौल-दिल होने लगी। घडी में सवा पांच बज रहे थे। मुझे बना-बनाया खेल विगडता दिखलाई पडने लगा।

मैंने अपने कपड़े-लत्ते भीगने की कतई परवाह नही की और बारिश अपने ऊपर झेलते हुए सडक के बीचों-बीच खडे होकर सडक पर दौड़ती टैक्सियाँ रोकने की कोशिश करने लगा। ऐसी घनघोर बरसात में बम्बई मे टैक्सी पकडना भी एक विकट समस्या हो जाती है। खैर ज्यों-त्यों करके एक खाली टैक्सी आती दिखाई पडी। मैंने उ। रोका और टैक्सी मे बैठकर उसे पता बतलाया।

आगे जाकर बारिश की वजह से सड़क पूरी तरह समुद्र बन गई थी। हालांकि ड्राइवर ने आगे जाने की बहुत कोशिश की लेकिन उसे कोई विशेष सफलता नही मिली।

मैं बहुत बड़ी दबसट मे फँस गया। अब मुझे अपने फिल्म देखने और उसकी चर्चा मे भाग लेने पर रह-रहकर कोपत होने लगी। महीनों से दौड-धूप करके एक मौका हाथ आया था और वह भी महज मेरी मूर्खता की वजह से हाथ से रपट गया था। इस तरह के महत्त्वपूर्ण इन्टरव्यू करने वाले मेरी निराशा को बखूबी समझ सकते हैं।

जब बारिश का वेग किसी तरह कम होता नजर नही आया तो मैंने टैक्सी ड्राइवर को अपने कार्यालय का पता देकर पीछे मुड़ने के लिए कहा।

दफ़्तर में चीफ़ एडीटर अभी बैठे हुए थे। मैंने उन्हें अपनी समस्या बतलाई तो वह भी बहुत दुखी हुए। उन्होंने कहा आप 'हाई वे' साइड से एक मौक़ा लेने की कोशिश कीजिए—या फिर सीधे 'कोजी कार्नर' इस्टेट चले जाइये। आप 'स्टाफ़ कार' ले जाइये—जैसे भी हो सके इस महत्त्वपूर्ण अवसर को हाथ से न जाने दीजिये ?"

क़रीब आधे घण्टे बाद बारिश रुकी तो मैं स्टाफ़ कार लेकर 'लोकेशन' की तरफ भागा। हालाँकि अब वहाँ किसी के मिलने की उम्मीद नहीं थी, पौने सात बजे तक वहाँ किसी के होने का सवाल ही नहीं उठता था। सिर्फ़ सौ में से एक फ़ीसदी यह आशा की जा सकती थी कि बारिश के कारण वहाँ भी स्थितियाँ बदल सकती हैं और लोग किसी वजह से लोकेशन पर ही हों।

जिस समय मैं लोकेशन पर पहुँचा सब कुछ पैक हो चुका था और लोग जाने की तैयारी में थे। मिस्टर नागपाल निर्माता हशमत भाई से अपनी गाड़ी के पास खड़े कोई ज़रूरी बात कर रहे थे। कैमरे और दूसरे सरोसामान से लैस 'वान' चली गई तो नागपाल का सेक्रेटरी उनके पास मेरे पहुँचने की सूचना लेकर पहुँचा, "सर मिस्टर मलिक आ गये हैं।"

"ठीक है, उन्हें गाड़ी में बैठने के लिए बोलो।" सेक्रेटरी को आदेश देकर वह फिर हशमत भाई से बातें करने लगे। मैं जैसे ही गाड़ी के पास पहुँचा सेक्रेटरी ने मेरे लिए गाड़ी का अगला दरवाज़ा खोल दिया।

दो-तीन मिनट बाद नागपाल भी गाड़ी में आकर मेरी बगल में बैठ गए और गाड़ी स्टार्ट करने लगे। सेक्रेटरी अभी बाहर ही खड़ा था—वह बोले—"विवेक बाबू डिस्ट्रीब्यूटर मनजीत का फोन रिसीव करने के लिए आज रात 'तार देव' आफिस में कौन रहेगा ?" और फिर उन्होंने गाड़ी स्टार्ट नहीं की।

उनकी यह बात सुनकर सेक्रेटरी एकदम सिटपिटा गया और बोला, "सर आज रात उधर लोग ज़रूर रहेंगे मगर मैंने मनजीत साहब के फोन की बाबत किसी से नहीं कहा है। आज रात मैं वहीं रह लेता हूँ मगर आपको दिक्क़त होगी।"

मुझे उम्मीद थी कि नागपाल साहब के माथे पर सेक्रेटरी की ग़फ़-

रात से शायद चल पड़ जायेंगे·· मगर वह सहज रहकर बोले—"कोई बात नहीं, फ़ोन करके मिस्टर व्यास को इस काम के लिए 'डेपुट' कर दो और तुम मिस मीर चन्दानी से फ़िक्स कर लो। हशमत भाई अगली फ़िल्म के लिए उनको 'एगेज' करना चाहते हैं।"

अपने सेक्रेटरी से बातचीत समाप्त करके वह मेरी ओर मुख़ातिब होकर बोले, "मिस्टर मलिक, अब हम लोगों को फौरन चल देना चाहिये। मौसम अच्छा नहीं है, इसके अलावा वक्त भी काफ़ी हो गया है। हालांकि मैं चाहता था कि हम लोग जल्दी निकल चलें तो आपको खुशगवार रास्ते का भी कुछ नज़ारा मिल जाये लेकिन अब तो सिर पर रात पूरी तरह आ गई। मुझे डर है कहीं घर पहुँचते-पहुँचते बच्चे सो न जायें। आप जानते हैं मेरे चार बेटियाँ हैं? मैं जानता हूँ कि किसी कुँआरे आदमी से बच्चों का जिक्र करना बेकार है लेकिन यह शादीशुदा लोगों की कमज़ोरी होती है कि वह अपने बच्चों का गुणगान इस शान से करते हैं गोया दुनिया में बच्चों से ज्यादा खुशगवार और फ़ख्र करने की कोई दूसरी चीज़ ही न हो।"

मैंने नागपाल की बात से सहमत होते हुए कहा, "आपका ख़याल एकदम दुरुस्त है—हमारी ज़िन्दगी में बच्चों की वही जगह है जो चमन में फूलों की। मैं कभी-कभी सोचा करता हूँ कि इस दुनिया में इतने प्यारे से नन्हे-मुन्हे न हों तो यह दुनिया कितनी भौंडी और बोर हो जाये। बच्चे तो फिर बच्चे ही हैं।" और मैंने हँसते हुए कहा, "बच्चों को फ़ख्र की चीज़ समझना तो हर तरह ठीक है लेकिन कुछ लोग तो अपनी पत्नियों को भी इस तरह साज-सम्भालकर रखते हैं गोया वह कोई नुमाइश में रखने वाली जिन्स हो।"

"यह बात आपने एकदम सही कही है मिस्टर मलिक। इसमें आदमी को दो तरह का सुख मिलता है। एक तो यह कि देखिये मेरी बीवी कितनी खूबसूरत और सलीकेदार है और दूसरे यह कि गौर कीजिए मैंने इसको कितनी 'हैन्डल विथ केयर' (सावधानी से इस्तेमाल किया है) करता है।"

मैं पत्नी जैसी जीवित वस्तु को 'हैंडिल विथ केयर' मुहावरे में इस्तेमाल होते देखकर हठात् हँस पड़ा। मेरी हँसी में नागपाल ने भी भरपूर

योग दिया। मैंने देखा कि नागपाल एक अत्यन्त व्यस्त कारोबारी होने के साथ-साथ खूब मज़ाकिया और हँसोड़ भी है। उसमें व्यंग करने की भरपूर क्षमता थी। अपने से अलग हटकर वह स्थितियों का विश्लेपण भी बहुत अच्छा करता था।

मैंने यह भी महसूस किया जो लोग प्रत्येक क्षण व्यवसाय में लगे रहते हैं और सामाजिक सफलता की ऊँची चोटियाँ लांघते चले जाते हैं उन्हें साधारण तौर पर सूखा-सड़ा और मनहूस ख़याल किया जाता है। मैंने यही बात नागपाल को बतलाई तो वह हँसते हुए बोले, "अब इसी नागपाल को लीजिये। इसे फ़िल्म व्यवसाय की महीन उलझनों में फँसे देखकर और इसकी चुंधी आँखों और सख्त चेहरे पर नज़र जाते ही हर किसी की हिम्मत जवाब दे जाती है। कोई यह सोच भी नहीं सकता कि यह इतना ममतालु बाप है कि तहेदिल से कोशिश करता है कि बच्चों के सो जाने से पहले ही अपने दड़बे में पहुँच जाये।"

नागपाल अपने को स्वयं से अलग करके अपनी ही इतनी धुनाई कर सकता है यह मेरे सोचने-समझने से परे की बात थी। मैं उसके इस विश्लेपण से घबरा गया—वह खुद को चुंधी आँखों और सख्त चेहरे वाला आदमी कह रहा था। यही वह क्षण था जब मुझे उसकी आत्मा को पकड़ना था। ऐसे क्षण बहुत मुश्किल से ऐसे बड़े लोगों की ज़िन्दगी में आते हैं जब वह आत्म-परीक्षण की मनःस्थिति में पहुँच पाते हैं। मैंने नागपाल को उकसाया, "मुझे कई बार बहुत कामयाब आदमी को देखकर हैरत होती है। मैं सोचने लगता हूँ इतनी मक्कार दुनिया को किस तरह इस आदमी ने तरह दी होगी—यह क़दम-क़दम पर रास्ते में आने वाले रोड़ों को कैसे हटाता रहा होगा?"

मेरी बात सुनकर नागपाल चुप हो गया। उसने गाड़ी चलाते-चलाते ही अपना सिगार सुलगाया और कुछ सोचने लगा। कई मिनट की चुप्पी के बाद वह बोला, "आम तौर से लोग-बाग जब किसी को कामयाबी की चोटी पर पहुँचा हुआ देखते हैं तो उन्हें ताज्जुब होता है लेकिन उनमें से शायद ही कोई देखता हो कि जब वह एक-एक क़दम आगे बढ़ने के लिए जी-तोड़ कोशिश कर रहा था तो वह कितना अकेला और लाचार

था। उस वक्त उसको सहारा देने की बात तो दूर कोई हमदर्दी की नज़र तक उठाने वाला नहीं था और शायद किसी को यह जानने में भी दिलचस्पी नहीं थी कि यह मर-मरकर ऊपर की चोटियों की तरफ कौन जा रहा है।"

अपनी बात बीच में अधूरी छोड़कर नागपाल ने सिगार का एक लम्बा कश खींचा। सिगार के जलते अग्रभाग से नागपाल की ऐनक के शीशे अँधेरे में भी चमक उठे और मुझे नागपाल का संजीदा स्वर सुनाई पड़ने लगा। "लेकिन जब मुश्किल-पर-मुश्किल मंज़िलों और ख़तरों को पार करके कोई ऊपर चोटी पर पहुँच जाता है तो सब की आँखें हैरत से टँग जाती हैं कि अरे! यह वहाँ कब और कैसे पहुँच गया? इसके साथ ही मैं आपको एक कड़वी सच्चाई और बतलाता हूँ कि यह तमन्ना करने वाले ही इस दुनिया में ज़्यादा होते हैं कि देखें यह कब नीचे गिरता है। उसके गिरने के इन्तज़ार में यह तमाशा देखने वाले किस हद तक नीचे गिर जाते हैं—इसके बारे में तो न कुछ कहना ही बेहतर है।"

मुझे नागपाल से बातें करके सन्तोष मिल रहा था। अब मैं दिल-ही-दिल में यह चाहता था कि मुझे नागपाल को छेड़ना न पड़े और वह स्वयं ही अपने गुरु के जीवन के बारे में अनायास कुछ बतलाने लगे। पर वह इस समय गहरे दार्शनिक मूड में था और सामान्य ढंग से परिस्थितियों का विश्लेषण कर रहा था। मैंने उसे फिर व्यक्तिगत स्तर पर घसीटने की कोशिश की, "मैं समझता हूँ लगभग पच्चीस-तीस बरस तो आपको इस उद्योग में आए हुए हो गए होंगे। मेरा ख़याल है इस दौरान आपने ज़माने का अच्छा-ख़ासा उतार-चढ़ाव देखा होगा?"

नागपाल ने मेरी तरफ आँखें करके एक क्षण के लिए देखा और कहने लगा, "मैंने तो इस ट्रेड में बहुत थोड़ी उम्र में घुसपैठ की थी। यह दिन अजहद मुश्किलों के थे मिस्टर मलिक! इस बम्बई शहर में बहुत बरसों तक रहने का भी कोई ठिकाना नहीं था। मैंने स्टूडियोज़ के फ़र्श झाड़े हैं—चौकीदार का काम किया है। पीठ पर सामान ढोया है—एक्स्ट्रा का काम किया है। क्या नहीं किया मैंने इस फिल्म इन्डस्ट्री

में ?" यह यादें उनके लिए खासी कड़वी साबित हो रही थीं। उन्होंने एक लम्बी साँस लेकर कुछ क्षणों के लिए मौन धारण कर लिया।

"फिर आपको बाक़ायदा एन्ट्रेन्स कैसे मिली ?" मैंने अपनी जिज्ञासा व्यक्त की।

"उसकी भी एक लम्बी दास्तान है मलिक साहब ! मेरा एक दोस्त जो बहुत लम्बे अर्से से अमेरिका का सटीजन (नागरिक) है उस ज़माने में यहाँ मेरे साथ था। हम दोनों एक खोली लेकर रहते थे। सच पूछा जाय तो उस ज़माने में मैं फ़िल्म के बारे में सोचता भी नहीं था। एन्ट्रेंस पास करके नौकरी की खोज में इधर चला आया था। एक बैंक में कुछ दिनों के लिए अस्थायी नौकरी मिल गई थी लेकिन जब वह क्लर्क छुट्टी से लौट आया तो फिर मैं सड़क पर आ गया। हाँ, तो मैं अपने दोस्त के बारे में कह रहा था। हालाँकि वह भी एन्ट्रेंस पास था लेकिन वह नौकरी के बारे में कभी नहीं सोचता था। सारे वक्त स्टूडियोज की ख़ाक छानता घूमता था। मेरी नौकरी के दिनों में वह पूरे दिन बाहर रहता और रात को देर-सवेर, लस्त-पस्त होकर लौटता। उन दिनों तनखा भी कोई खास नहीं मिलती थी—बस समझिये कि हम दोनों को किसी तरह रूखी-सूखी रोटी मिल जाती थी। हम दोनों के पास बहुत थोड़े कपड़े-लत्ते थे जिन्हें हम अदल-बदल करके पहन लेते थे। धक्के-मुक्के खाने में कपड़ों की यह हालत हो जाती थी कि हम दोनों रात को कपड़े धोकर फैलाते और सुबह उन्हें बदन पर डाल कर सुखाते ! और आठ-नौ बजे तक वही रोज़मर्रा की मायूसी-भरी ज़िन्दगी शुरू हो जाती।"

नागपाल का सिगार बुझ गया था। उन्होंने अपना सिगार जलाकर बातों का तार फिर से जोड़ा—"तो हम दोनों एक तरह से रजिस्टर्ड बेकार हो गये। उन दिनों भी भयंकर बेरोज़गारी फैली हुई थी। पढ़े-लिखे लोग हज़ारों की तादाद में नौकरी तलाश करते फिरते थे। यह मैं आपको वर्ल्ड वार सैकिंड से ठीक पहले का दौर बतला रहा हूँ।"

मिस्टर नागपाल ने अपनी याददाश्त ताज़ा करते हुए कहना शुरू किया—"उस ज़माने में फ़िल्मों का नक्शा भी आज जैसा नहीं था कि रातों-रात लोग स्टार बन जायें। यहाँ भी एक्टर लोग माहवारी तनख्वाह

पर काम करते थे। जब हम दोनों दोस्त स्टुडियोज के चक्कर काटते-काटते बेदम होने लगते तो कहीं छोटा-मोटा काम मिल जाता। कभी मेरा दोस्त विनायक दो-चार मिनट का कोई रोल पा जाता तो कभी मुझे किसी नौकर या चौकीदार की भूमिका मिल जाती थी मगर वह काम इतना नाकाफी होता था कि हम लोग दो वक्त में सिर्फ एक शाम ही खाना खा पाते थे।"

मैंने सहानुभूति के स्वर में कहा, "वाकई आपने बहुत तकलीफ का जमाना देखा है—आजकल जल्दी से शोहरत और पैसा हासिल करने वाले अभिनेता उस पीड़ा को क्या जान सकते हैं?"

नागपाल ने मेरे स्वर में स्वर मिलाकर कहा—"मिस्टर मलिक, वह भी क्या दिन थे—याद भर से बदन में झुरझुरी दौड़ जाती है।"

मैंने नागपाल को अपनी जिन्दगी के गुम अध्याय खोलने के लिए उकसाते हुए कहा—"लेकिन उन दिनों फिल्म इन्डस्ट्री में भीड़ भी तो इतनी नहीं थी मिस्टर नागपाल।"

नागपाल ने मेरी बात के स्वीकार में सिर हिलाया और अपनी बात का सूत्र फिर से पकड़ा, "लेकिन तब फिल्म व्यवसाय इतना फैला हुआ भी तो नहीं था। भीड़ जरूर कम थी मगर इन्डस्ट्री में घुसना तब भी आसान नहीं था बल्कि कुछ मायनों में तो आज से कहीं ज्यादा मुश्किल था। आज तो सफलता का शिखर छूने में वह दिक्कत ही नहीं है—जरा-सा काम और बेपनाह पब्लिसिटी और इसका नतीजा देखिए आदमी पलक झपकते ही कहीं-से-कहीं जा पहुँचता है। उस जमाने में अभिनेताओं-अभिनेत्रियों को कई तरह के कमाल में माहिर होना पड़ता था। एक्टिंग के साथ गाना और नृत्य जानना बहुत जरूरी था।"

नागपाल ने मुझे अजनबी निगाहों से देखा गोया वह कहीं इतने पीछे लौट गये हों जहाँ वह आज के किसी परिचित को नहीं पहचानते और जोरदार आवाज में बोलने लगे, "वह भी बड़े अजीबो-गरीब दिन थे मिस्टर मलिक! बरसों बीत गये मगर मेरी और विनायक की तरफ कोई हमदर्दी की आँख उठाने वाला तक नहीं मिला लेकिन हम दोनों ने हार नहीं मानी, बराबर चक्कर काटते रहे। कमलदास उन दिनों एक मशहूर

डाइरेक्टर थे। उन्होंने रहम करके मुझे अपना असिस्टैन्ट बना लिया। आपको मालूम है उसकी एवज़ मुझे क्या तनख्वाह मिलती थी।"

मैंने उत्सुकता से तनख्वाह की बाबत मालूम किया तो वह ठठाकर हँसते हुए बोले—'महज़ बारह आने रोज़—छुट्टी के दिन की कोई पगार नहीं। मैं कहने को असिस्टैन्ट था मगर वाकई 'क्लैपब्वाय' था जिसका काम तरह-तरह के नित नये रूप धारण करना था—कभी मेहमानों को चाय-पानी देना तो कभी हीरो-हीरोइन के कपड़े-लत्ते, साज-शृंगार के सामान को अपने ऊपर लादे फिरना।"

मैंने मिस्टर नागपाल को विनायक की याद दिलवाई, "मिस्टर विनायक का फिर क्या हुआ ?'

"विनायक" वह एकाएक चौंक उठे और विनायक की याद करते हुए बोले—"वह क़िस्मत का तेज़ निकला। उन दिनों भी लड़कों की तरह लड़कियाँ फ़िल्म इन्डस्ट्री की तरफ़, बम्बई की तरफ़ भागती थीं और यहाँ आकर शोहदों के चंगुल में फंसकर ग़ारत हो जाती थीं। आखिर में उनको 'रेड लाइट एरिया' में ही जाकर पनाह मिलती थी।

" जब विनायक फ़िल्मों की तरफ़ से मायूस होकर ऊब गया तो उसने यह तय किया कि वह कोई व्यापार करेगा। वह धुन का पक्का लड़का था। अपने साधनों की हदें वह जानता था—कोई सिलसिला शुरू करने की फ़िराक़ में वह पूरी बम्बई में चक्कर काटता था। एक दिन दादर स्टेशन पर उसे एक लड़की डरी सहमी-सी नज़र आई। विनायक ने साहस करके उससे बातें कीं और मालूम कर लिया कि वह कहाँ से आई है। पता चला कि वह अमृतसर से घर छोड़कर भागी हुई है और फ़िल्मों में काम करना चाहती है। विनायक ने उसके उखड़ेपन से भाँप लिया कि वह लड़की एकदम अनाड़ी है—महज़ ग्लैमर की तलाश उसे इस नामुराद शहर में घसीट लाई है। विनायक ने देखा कि वह चंद घंटों में ही किसी ग़लत जगह फँस जायेगी और फिर शायद उसे इस ज़िंदगी में नजात हासिल नहीं होगी।

" लड़की को कुरेदने से पता चला कि वह रुपया तो कम ही लेकर आई है—हाँ 'ज्वैलरी' काफ़ी लाई है। विनायक ने उसे अलग ले जाकर

बहुत ढंग से समझाया-बुझाया और चाल में ले आया। मैं रात को देर गये लौटा तो उसने मुझे सारा किस्सा सुनाया और फैसला-सा करते हुए बोला, "लड़की सूरत-शक्ल से तो हसीन है मगर अपने ढंग-ढर्रे से गावदी लगती है। कम्बख्त एकदम घरेलू 'कुड़ी' है। तू जरा कोशिश कर देख—कमलदास से बातें करके कोई काम बन जाये तो ठीक है।"

"लेकिन मैंने तो सुना है कि तीस-पैंतीस बरस पहले भले घरों में सिनेमा में काम करने वालों के प्रति घोर वितृष्णा का भाव था।" मैंने मिस्टर नागपाल से कहा।

"हाँ, यह बात काफी हद तक सही है लेकिन पंजाब मे फिल्म इन्डस्ट्री होने की वजह से पंजाबी लड़के-लड़कियों का चलचित्र-जगत् की ओर खास रुझान था। बल्कि उस जमाने की सभी बड़ी फिल्मी हस्तियाँ ज्यादातर पंजाब मे आई थी। खैर, मैं विनायक के साथ आई लड़की का किस्सा बतला रहा था। उस लड़की का नाम रंजना गिल था। मैंने उसके घर-बार के बारे में पता किया तो मालूम हुआ उस लड़की का नाम रंजना गिल है और वह अमृतसर के एक मशहूर आदमी प्रीतमसिंह की पुत्री है। इत्तिफाक से मैं खुद अमृतसर का रहने वाला हूँ। मैं लड़की के बाप के नाम से बखूबी वाकिफ था। वह लायलपुर के रहने वाले थे और अमृतसर मे उनका एक बहुत बड़ा लोहे का कारखाना था।

"मैंने विनायक से इस बारे मे हर नज़रिये से बातें की और तय किया कि लड़की के बाप को तार देकर बुला लिया जाय। हम दोनों को ज्यादा सही यही लगा कि उस मूर्ख लड़की को उसके घर वापस भेज दिया जाय। अगली सुबह प्रीतमसिंह को तार भेज दिया गया। चौथे दिन पूरा गिल-परिवार हमारी गंदी चाल के बाहर नजर आया। लड़की की माँ बहुत परेशान थी और गिल साहब तो आपे से बाहर हो रहे थे।

"मैंने और विनायक ने उन लोगों को बहुत समझाया-बुझाया मगर लड़की के पिता प्रीतमसिंह गिल ने दो टूक फैसला सुना दिया कि वह उस 'कुड़ी' को कभी अमृतसर लेकर नही जायेंगे—मुँह काला करके

आई है तो यहीं समुन्दर में डूब मरे। वह लोग हॉटल 'परेरा' में ठहर गए। हम लोगों का उनके पास बराबर आना-जाना बना रहा लेकिन कोई फ़ैसला नहीं हो पाया—सरदार प्रीतमसिंह पूरी तरह बिफरे रहे। लड़की भी अपने बाप के रुख से बहुत डर गई। होते-होते मेरे सामने यह प्रस्ताव रखा गया कि मैं रंजना से शादी कर लूं। यह शायद इसलिए कहा गया कि मैं पंजाबी हूँ। लड़की की माँ ने पेशकश की कि वह लोग मुझे व्यापार करने के लिए रुपया दे देंगे।

" जहाँ तक मेरा सवाल था मैं तो उन दिनों शादी के बारे में सोच भी नहीं सकता था। मैंने विनायक को तैयार कर लिया क्योंकि एक तो रंजना को आफ़तों से निकालकर वही लाया था इसके अलावा उसकी इच्छा व्यापार करने की भी थी।"

मैंने नागपाल की बातों में रुचि लेते हुए कहा—"लेकिन अगर आप शादी कर लेते तो आपको भी फिल्मों में जल्दी 'पुश' मिल जाता।"

"लेकिन मुझे उस तरह की मदद मंजूर नहीं थी—मैं अपने पैरों पर अपने ही बूते खड़ा होना चाहता था। ख़ैर, यहीं बम्बई में रंजना मिल और विनायक की शादी हो गई। शादी के बाद एक फ्लैट ले लिया गया जिसमें मैं विनायक और रंजना के साथ कुछ वक्त तक रहा।"

"बाद में रंजना और विनायक को अमृतसर बुलाया गया और वहीं विनायक को अलग से व्यापार में लगा दिया गया। मैं उन दिनों एक फ़िल्म के सिलसिले में पूना गया हुआ था।"

अपनी यादों को समेटते हुए नागपाल ने कहा—"बाद में जब विनायक और रंजना विदेश गए तो एक सप्ताह यहाँ बम्बई में मेरे साथ ठहरे। लम्बा अर्सा हो गया उन सब बातों को गुजरे—उसके बाद विनायक से मुलाक़ात नहीं हो पाई। मैं कई बार यूरोप जा चुका हूँ लेकिन कभी इतना वक्त नहीं मिलता कि जाकर विनायक की गृहस्थी देख सकूं। उसने स्टेटस में बहुत बड़ा 'फार्म' बना लिया है और मजे से जिन्दगी बसर कर रहा है।"

नागपाल ने सोच के गम्भीर लहजे में एक लम्बी साँस लेकर कहा, "कभी-कभी उस जमाने की बातों पर सोचते हुए हैरत होती है। कैसे

बुरे दिन थे लेकिन आज के मुकाबिले मेरे पास उन दिनों कोई बड़ी कूवत थी—दिल में जज्बे थे, कुछ नया करने की धुन थी। हालांकि कोई राह सामने खुली नजर नहीं आती थी लेकिन फिर भी हरेक पल यही लगता था कि कुछ नया होने वाला है—कोई नया सन्देश मिलने वाला है। उस नागपाल को कहीं देख लूँ तो शायद आज पहचान भी न सकूँ।"

मैंने नागपाल को बीते दिनों की याद दोहराते समय बहुत अन्तर्मुख पाया। यह एक बहुत मुश्किल घड़ी थी जब वह स्वयं के अतीत से साक्षात्कार कर रहे थे। हर कोई जानता है कि अपने अतीत में पहुँचकर साधारण और असाधारण आदमी एक जैसा ही हो जाता है। मोहाविष्ट होने की स्थिति में नागपाल ज्यादा देर तक नहीं रह पाए। सामने एक आदमी सड़क के मोड़ पर लालटेन लिए खड़ा था। उसे देखकर नागपाल ने गाड़ी रोक दी।

नागपाल ने नीचे उतरकर पूछा, "क्या हो गया गनपत।"

'टोल टैक्स' का चौकीदार गनपत बोला—"हुजूर, सड़क पर एक वजनी पत्थर आ गिरा है—उसे हटाया जा रहा है—आपको करीब आधा घण्टा ठहरना पड़ेगा।"

"शुक्र है कि आधे घंटे में ही रास्ता खुल जायगा।" फिर उन्होंने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछा, "कोई हादसा तो नहीं हुआ?"

"नहीं हुजूर उस वक्त कोई गाड़ी आस-पास नहीं थी—होती तो उसकी खैर नहीं थी।" गनपत ने नागपाल को आश्वस्त किया।

अब उस जंगल में आधा घण्टा या जितना भी वक्त लगे हमें ठहरना ही था। बस गनीमत यही थी कि मोड़ पर एक चाय की दुकान थी। नागपाल ने मुझसे कहा—"आइये अब तो कुछ किया ही नहीं जा सकता सिवाय इन्तज़ार करने के—हम लोग इस चायघर में बैठकर एक-एक प्याला चाय ही पियें तब तक।"

गाड़ी वहीं छोड़कर नागपाल चाय की दुकान की ओर ब
चारों तरफ घाटी में अन्धकार फैला हुआ था और रात बढ़ने न
पर मुझे सन्तोष था कि मुझे नागपाल के साथ बातें करने ।
अवसर मिल रहा था।

चाय की वह बहुत मामूली-सी दूकान थी। एक धुंआ देती लालटेन के प्रकाश में एक अधेड़ उम्र का आदमी भट्टी के सामने बैठा कढ़ाई में कुछ तल रहा था। उसने हमें लोगों को अपनी तरफ़ आते देखा तो दूर से ही सलाम किया। नागपाल ने दो प्याले चाय बनाने का आदेश दिया और मुझसे बोले—"लगता है आज कुछ सायत ही खराब है—पहले बारिश की वजह से लोकेशन छोड़ने में ही काफ़ी देर हो गई और रही-सही कसर यहाँ रुककर पूरी हो जायेगी।"

दो गिलासों में चाय डालकर वह आदमी हमारे सामने एक लम्बी-सी बेडौल मेज़ पर रख गया और पूछने लगा—"साहब कुछ खाने को लाऊँ।"

नागपाल ने गर्दन हिलाकर स्वीकृति दे दी तो वह एक प्लेट में गर्म पकौड़ियाँ ले आया।

नागपाल बहुत सहज होकर चाय पीने लगे और बतलाने लगे कि रास्ता खुल जाने पर हमें कोजीकार्नर पहुँचने में कितना वक्त लगेगा।

तीन

हमें चट्टान के हटाये जाने की सूचना अपेक्षाकृत जल्दी ही मिल गई। 'चैक पोस्ट' के चौकीदार ने आकर सूचित किया तो नागपाल बच्चों की तरह खुश होकर बोले—"चलिये आप तक़दीर के सिकन्दर हैं; मुझे तो डर लगा रहा था कि कहीं सारी रात ही यहाँ भटकना न पड़ जाये।"

नागपाल और मैं गाड़ी में जाकर बैठ गये और उन्होंने गाड़ी स्टार्ट कर दी। हमने उस स्थान से गुज़रते हुए, रास्ते से हटाई गयी चट्टान देखी—वाकई बहुत वजनी पत्थर था—अगर किसी कार या बस पर गिर गया होता तो कितने ही लोग हताहत हो जाते और फिर शायद हम लोगों को भी लम्बे वक्त तक वहाँ ठहरना पड़ता।

मुझे नागपाल की प्रारम्भिक जिन्दगी का बहुत कुछ जानने को मिल गया था। सहसा मुझे उनकी पत्नी का ख़याल आया—वह भी एक ज़माने में बहुत प्रसिद्ध सिने-तारिका थी। मैंने नागपाल को छेड़ा—"आपकी श्रीमती जी भी तो एक विख्यात अभिनेत्री थी। मैंने उनकी शुरू की कुछ फ़िल्में देखी हैं। शायद आखिरी बार वह सितारों के खेल में हीरोइन बनकर आई थीं। मैं समझता हूँ अब तो उस फिल्म को बने भी पन्द्रह साल से ऊपर हो चुके होंगे। अपनी भूमिका को जितने स्वाभाविक रूप से नीना जी ने निभाया था वह आज भी मुझे याद है।"

मेरी जिज्ञासा अनजाने में आगे बढ़ गई और मैं सहसा नागपाल से पूछ बैठा, "नीना जी ने यकायक फ़िल्मों में आना क्यों छोड़ दिया? उन्हें कला की बहुत बारीक समझ और अभिनय की विशेष क्षमता थी।"

नागपाल ने बहुत आहिस्ता से अपना पहलू बदला और मेरी को अनसुना करके कहा, "बहुत लेट होते जा रहे हैं हम ।

'नीना विला' का 'बैंक ग्राऊन्ड' देखने का मौका अब नहीं मिल पायेगा।"

लेकिन मैंने अपने पत्रकार के हठ को दृढ़ता से क़ायम रखते हुए नागपाल की पत्नी नीना के सम्बन्ध में दिलचस्पी जाहिर की—भले ही मेरा यह दुस्साहस नागपाल को नागवार गुज़रा हो। मैंने अपनी जिज्ञासा व्यक्त की 'मिसेज नीना नागपाल में सफल अभिनेत्री के सभी गुण मौजूद हैं। 'सितारों के खेल' में उनका अभिनय इतना कामयाब था कि 'पर्सनेल्टीज़' के फ़िल्मी विशेषांक से हमने नीना जी के अभिनय के सम्बन्ध में एक पूरा लेख लिखा था। शायद वह लेख आपकी नजरों से भी गुज़रा हो।"

नागपाल कुछ क्षण तक सोचते रहे और बाद में धीमे किन्तु ठंडे लहज़े में बोले,"हाँ वह आर्टिकल मेरी नजरों से गुजरा था। वाकई बहुत सर्चिग (खोजपूर्ण) था। मेरी 'पर्सनल फाईल' में उस लेख की कटिंग मौजूद है।"

नीना नागपाल का नाम इतने पर भी उनकी ज़ुबान पर नहीं आया—वह हमारी पत्रिका के बारे में कहते चले गये 'पर्सनेल्टीज़' का मैं बहुत लम्बे वक्त मे प्रशंसक हूँ। सबसे बड़ी बात यह है कि आप लोग किसी पर चलताऊ ढंग से कोई लेख वग़ैरह नहीं लिखते। जब तक चीज़ों की गहराई और ब्यौरे में नहीं घुसते किसी के बारे में 'स्कैन्डल' उछालने के [illegible] से एक लाईन नहीं लिखते। जबकि मैं दूसरे कई अखबारों के [illegible] में जानता हूँ कि उनके मालिकों का रुझान 'सेन्सेशनल न्यूज़ (सनसनी-[illegible] ख़बरें) देने में होता है ! वह कम्बख़्त यह नहीं समझते कि इससे किसी व्यक्ति का चरित्र हनन भी होता है। इसके बदले में वह बड़े और मशहूर लोगों को 'ब्लैकमेल' करने से भी नहीं चूकते।"

इसके बाद नागपाल चुपचाप ड्राइव करते रहे। मुझे उनके रुख़ से ऐसा लगा जैसे वह अपनी पत्नी के सम्बन्ध में कुछ भी कहना उपयुक्त नहीं समझते। उनकी जगह कोई दूसरा व्यक्ति होता तो अपनी पत्नी की इतनी प्रशंसा सुनने के बाद इस तरह चुप न बैठता बलिक उसकी और भी कई ख़ूबियाँ अखबारी नुमाइन्दे को विस्तार में जाकर सुनाता। मैं कई ऐसे लोगों को जानता हूँ जो अपनी तथा अपनी स्टार पत्नी की ख़ूबियाँ छपवाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। नागपाल की इस दिशा में चुप्पी इतनी गहरी थी कि उसे तोड़ने का इरादा ही मुझे

गलत मालूम पड़ने लगा बल्कि मुझे यह भी सोचना पड़ा कि कहीं मेरी बातचीत से नागपाल कष्ट तो महसूस नहीं कर रहे हैं। हो सकता है अपनी पत्नी नीना के सम्बन्ध में उन्हें किसी से अन्तरंग बातें करना पसन्द ही न हो।

कई मिनट की चुप्पी के बाद नागपाल ने अपनी पत्नी नीना नागपाल के सम्बन्ध में खुद ही कहना शुरू कर दिया—"मिस्टर मलिक, मेरी बीवी अब भी पहले जैसी सुन्दर और सुडौल है। उसकी स्मार्टनेस और केमिस्ट्री में रत्ती भर फर्क नहीं आया है। जब आपने उसे 'सितारों के खेल' में देखा होगा तब वह सिर्फ बीस बरस की थी आज अड़तीस पूरे कर चुकी है। आप समझ सकते हैं चालीस की उम्र पर पहुँचकर एक औरत में सिवाय पस्ती के और क्या बाकी रह जाता है!"

मैंने नागपाल की बात से सहमति जाहिर की—"जी हाँ, आप यह बात एकदम दुरुस्त फरमाते हैं। औरत के पास चालीस के पेटे में पहुँचकर बीतेहुए यौवन की याद करने के अलावा कुछ दिलकश नहीं बचता।"

"लेकिन मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि नीना का उम्र से कोई ताल्लुक नहीं है—वह पहले के मुकाबले आज ज्यादा हसीन और 'एटरैक्टिव' है। जिस वक्त वह मेरी फिल्म 'सितारों के खेल' में हीरोइन बन कर पर्दे पर उतरी थी वह एक चंचल तितली की मानिन्द थी पर अब वह चार बच्चों की माँ है। उसे देखकर तुम जानोगे कि मातृत्व में क्या ऊँचाई और पवित्रता है—उसमें कितना सुख और सन्तोष है।" और नागपाल ने मेरी ओर सहसा एक सवाल उछाल दिया—"क्या आप बता सकते हैं कि औरत की जिन्दगी में माँ बनने से भी बड़ा कोई एचिवमेंट (उपलब्धि) हो सकता है?"

मेरा अनुभव इस मातृत्व जैसी भावना के लिए कोरा था इसलिए मैं सहमत होने के अलावा कर भी क्या सकता था? नागपाल अब तक हल्के मूड में आ गए थे। शायद नीना के विषय में बातें करने में अब उन्हें कोई खास एतराज नहीं था। वह बोलने में बहुत चतुर व्यक्ति थे। यों वह नीना नागपाल से फिर हट चुके थे और एक घरेलू औरत की जेहनियत बयान करने लगे थे। "मैं आपको शादीशुदा औरतों के मुता-

ल्लिक एक खास बात बतलाता हूँ कि वह दाम्पत्य में प्रवेश करते ही एक-दम बदल जाती हैं। उनके सोचने-समझने का ही तरीका नहीं बदलता बल्कि और भी बहुत कुछ बदल जाता है। यहाँ तक कि उनकी इच्छायें और पसन्द भी बदल जाती हैं।"

मैंने उत्सुकता से पूछा, "वह कैसे ?"

"वह ऐसे कि शादी से पहले वह घर के सपने देखती है और बाद में घर बसाने पर सारा ध्यान केन्द्रित कर देती है। अब तुम यों समझो कि हम लोग सिनेमा की कहानी में अक्सर यह वाक़या दिखाते हैं कि एक लड़की का किसी लड़के से प्रेम हो गया मगर लड़की की शादी घर वालों की रज़ामन्दी से किसी दूसरे लड़के से हो गई। फ़िल्म यह सत्य स्थापित करती है कि लड़की अपने पहले प्रेमी के बिना दिन-रात बेचैन रहती है, आहें भरती है, न खाती है न पीती है और अन्त में तपेदिक का शिकार होकर जान दे देती है। सच पूछो तो यह 'आइडियल' वाली कहानी ही दर्शक खींचती है—डाइरेक्टर को शोहरत देती है—निर्माता को पैसा देती है—गीतकार को सरनाम कर देती है और गायक के गाने हरेक की ज़ुबान पर चढ़ जाते हैं। ऐसी एक ही फ़िल्म में हीरो-हीरोइन कहाँ जा पहुँचते हैं आप अपने अनुभव से बखूबी जानते हैं लेकिन मैं कहता हूँ ज़िन्दगी की सच्चाई के लिहाज़ से यह कहानी और फ़िल्म एकदम बोसीदा और बकवास है।"

मैंने हैरत से पूछा—"यह आप क्या कह रहे हैं नागपाल साहब ? 'सितारों के खेल' की तो हू-बहू यही कहानी आपने फ़िल्माई है। उस फ़िल्म की यह ट्रेजेडी दर्शकों को बरसों तक नहीं भूली थी।"

नागपाल साहब पागल की तरह हो-हो करके हँसने लगे। मुझे उनकी यह हँसी बहुत अजनबी और विचित्र लगी। अभी तक मैंने उनको एक दफ़ा भी इस तरह का आचरण करते नहीं देखा था। नागपाल अपनी हँसी को बलपूर्वक रोककर बोले—"जी हाँ मेरी नज़र में ऐसी कहानियों पर बनी फ़िल्में 'अनरीयल' और 'डेस्ट्रक्टिव' (सत्यानाशी) हैं। क्योंकि ज़िन्दगी इसके बिल्कुल उल्टी है। आज आप किसी ऐसी लड़की से शादी कर लीजिए जो किसी दूसरे को प्यार करती रही है—अगर वह आदमी दो वर्ष बाद उससे मिलेगा तो आप पायेंगे आपकी पत्नी में उसके

लिए पहले वाले जज्बात बहुत कुछ ग़रम हो चुके होंगे। उसके सामने अगर शर्त यह रखी जाय कि वह अपने प्रेमी के साथ जा सकती है मगर उसे अपने पति और बच्चों को छोड़कर जाना पड़ेगा। मैं सौ में सौ लड़कियों के लिए तो दावे के साथ नहीं कह सकता पर सौ में से निन्यान्वे अपने पति और बच्चों को छोड़कर प्रेमी के साथ जाना पसन्द नहीं करेंगी।" और फिर नागपाल ने मुझसे एक ऐसा सवाल कर दिया जिसका उत्तर मेरे पास नहीं हो सकता था—"क्या आप नहीं मानते 'कहते हैं जिसको इश्क वह खलल है दिमाग का' ?"

"लेकिन नागपाल साहब फ़िल्म, इन्डस्ट्री में नावेल, कहानियाँ और शायरी वह तो सब प्रेम के आदर्श रूप को ही लेकर चलती है।"

"वह इसलिए कि आदमी वाकई जो कुछ है उससे कुछ अलग दिखलाई देना चाहता है। मनुष्य की भावनाएँ आसमान छूना पसन्द करती हैं और आदमी की भूख हमेशा जमीन के इर्द-गिर्द चक्कर काटती रहती है। प्रेम-मोहब्बत, शायरी, कला वगैरह खुशबू की मोहताज हैं और पेट की भूख और जिस्म की भूख ठोस चीजों की मोहताज है। आदमी को गेहूँ और गुलाब दोनों एक से ज़रूरी लगते हैं।"

मैंने अचम्भे से नागपाल का चेहरा देखा। वह बग़ैर रुके धाराप्रवाह बोले चले जा रहे थे। मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि नागपाल इतने व्यस्त होने के बावजूद जिन्दगी के मौलिक प्रश्नों पर इतनी गम्भीरता से सोच-विचार करते होंगे और अपने निश्चित विचार रखते होंगे।

मैंने उन्हें फिर छेड़ा—"लेकिन इसकी क्या वजह है कि कला जीवन के इस क़दर विपरीत चली जाती है और उसे ही श्रेष्ठ माना जाता है। क्लासिकल रचनाओं तक मे रोमांस का असर दिखलाई पड़ता है।"

"आप एक जगह खास ग़लती कर रहे हैं।" नागपाल ने मुझे समझाया। दरअसल दुनिया की जितनी ग्रेट क्लासिक रचनायें मिलती है उनमें ज़िन्दगी के गहरे तजुर्बों का निचोड़ है—ज़मीन की सुगन्ध इन रचनाओं में ज़रूर मिलेगी और साथ ही मन की कोमलताओं को सहलाने वाला रोमांस भी कम नहीं मिलेगा लेकिन गड़बड़ तब होती है जब सस्ता रोमांस बेचने वाले समाज में आदर और धन प्राप्त कर लेते हैं

आपने पुराने क्रिटीक्स का यह कमेन्ट तो बहरहाल पढ़ा ही होगा, "क्लासिज्म इज़ हैल्थ—रोमांटिसिज्म इज़ इलनैस (शास्त्रीयता स्वास्थ्य और रोमांटिकता बीमारी है)।"

मुझे आश्चर्य-भरी खुशी हुई कि कॉलिज या विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त न करने पर भी नागपाल साहित्य के गहरे मूल्यों की समझ रखते थे। हम लोग बाहर से किसी फ़िल्मी आदमी को सरसरी तौर पर देखकर वास्तव में यह नहीं जान सकते कि वह आदमी किस गहराई तक पहुँचा हुआ है। मुझे 'सितारों के खेल' के बाद की फ़िल्मों का भी खयाल आ गया। इन बाद में बनाई गई फ़िल्मों में नागपाल बराबर यथार्थवादी होते चले गये थे। उन्होंने समाज की क्रूरता और विसंगतियों को ही अपनी फ़िल्मों में प्राथमिकता दी थी। मैंने उनको यह बात बतलाई तो वह बोले—"आप ठीक जगह पहुँच गए। दरअसल उस ज़माने में जो फ़िल्में बनती थीं वह एक तरह से बेहद आँसू-भरे रोमांस पर बेस करती थीं। मुझ पर कुछ तो उन फ़िल्मों का प्रभाव था और कुछ निर्माताओं की शर्तें थीं जो इसी तरह की असफल प्रेम की कहानियाँ फ़िल्मों के लिए चुनते थे लेकिन बाद में वह लिजलिजे रोमांस का हैंगओवर (ख़ुमार) मेरे सिर से उतर गया और मैंने रियलिस्टिक स्टोरीज़ लेकर फ़िल्में बनाना शुरू कर दिया। मुझे खुशी है कि दर्शकों का रुझान बदला और उन्होंने मेरी फ़िल्में पसन्द कीं।"

नागपाल ने फ़िल्मों के सम्बन्ध में बातें करते हुए अत्यन्त उत्साह से कहा—"मैं यह नहीं मानता कि दर्शकों की रुचि नहीं बदली जा सकती—मैंने खुद महसूस किया है कि लोग बेहतर ढंग से जीना चाहते हैं—स्वस्थ मनोरंजन चाहते हैं लेकिन व्यापार के नाम पर उन्हें इतना थोथा मसाला दिया जाता है कि वह उसी को गले के नीचे उतारने के लिए मजबूर होते हैं।"

यकायक नागपाल ने फ़िल्मों का विषय जहाँ-का-तहाँ छोड़ दिया और अपनी पत्नी की बातें करने लगे—"नीना के लिए घर से बढ़कर आज और कोई चीज़ नहीं है। इतनी फ़िल्में बनती हैं, इतने प्रीमियर

रोज होते हैं—खुद मेरी अपनी फिल्मों की शूटिंग चलती रहती है—मैं उसे जोर देकर कहता हूँ—"डार्लिंग, घरेलू माहौल से कुछ देर के लिए तो बाहर निकलो, लेकिन मिस्टर मलिक, मुझे हैरत होती है वह अपनी सीमित-सी दुनिया को पल भर के लिए भी नहीं छोड़ना चाहती। जोर-जबरदस्ती करके अगर किसी जलसे या पार्टी में ले भी जाता हूँ तो उसे वहाँ पहुँचने से पहले ही अपनी बच्चियों की याद आने लगती है।" फिर निष्कर्ष देते हुए नागपाल ने अपनी बात खत्म की—"माई डियर, आप समझ नहीं सकते कि उनके लिए घर की क्या अहमियत है।"

मैंने सिर हिलाकर नागपाल की बातों का समर्थन किया।

चार

पहाड़ी सिलसिले से घिरे हुए एक शानदार बंगले के गेट पर पहुँचकर निर्देशक नागपाल ने अपनी कार रोक ली। दरबान ने आगे बढ़कर सलाम किया और गेट खोल दिया।

लम्बे-चौड़े लॉन मरकत-जैसी घास से भरे हुए थे। घास बहुत कायदे में कटी हुई थी। और बीच-बीच में पत्थर की मूर्तियाँ रखी हुई थीं। इन मूर्तियों की विशेषता यह थी कि यह गेट से देखने में जीवित आदमी-औरत लगते थे। एक बूढ़ा माली हाथ में चिलम लिए धुएँ का कश खींचता मालूम होता था। दोनों तरफ़ लॉन थे और बीच में एक पक्की हमवार सड़क थी जो 'नीना विला' के मुख्य भवन तक चली गई थी। सामने ही तीन गराज थीं जिनमें तीन लम्बी-लम्बी खूबसूरत गाड़ियाँ खड़ी थीं। ज़ाहिर था कि यह सभी कारें विदेशी थीं।

बंगले के बाहर अपूर्व शांति और सलीका नज़र आ रहा था। चारों तरफ़ एक खुशगवार खुलापन था। मैंने बंगले को देखकर प्रशंसा के स्वर में कहा—"मिस्टर नागपाल! आपने वास्तव में प्रकृति की गोद में यह 'स्वप्नलोक' सजाया है।"

मेरी प्रशंसा से वह पुलकित होकर बोले—"हाँ मलिक साहब, इस घर को बनाने में मैंने बहुत मेहनत की है। एक सुख-शान्तिदायक घर से बड़ी चीज़ इस दुनिया में वाक़ई कोई और नहीं हो सकती। मुझे खुशी है कि जिसे सच्चे मानी में घर या 'नैस्ट' (नीड़) कहा जाता है वह मुझे मिल गया है।"

बाहर से ही बंगले का जायज़ा लेते हुए मैंने नागपाल के चेहरे पर नज़र डाली। उनके चेहरे पर गरिमा और सन्तोष की आभा फूटी पड़ती

थी। नागपाल ने अपनी कार पोर्टिको में खड़ी की और एक लम्बी गैलरी में दाखिल हो गये। मैं भी उनके पीछे चलते हुए एक बड़े हॉल में पहुँच गया। मैंने हॉल की छत देखी। उस पर हर तरफ गोल, तिकोने और षट्कोण आइने लगे हुए थे और उनके आस-पास कांच की कटावदार झालरें लगी थी। उन आइनों और कांचों पर पड़कर बिजली की रोशनी कई गुना तेज हो गई थी। सोफों और दीवानों में भी एक खास आकर्षण था। वह आम घरों मे रखे सोफों जैसे नही थे बल्कि ज़मीन से थोड़े ऊपर पीढ़ों की शक्ल मे थे और उन पर शिल्प के श्रेष्ठ नमूने अंकित थे। यह बंगला एक आधुनिक डायरेक्टर का निवास मालूम नही पड़ता था बल्कि किसी रजवाड़े के राजा का रगमहल मालूम होता था। मैं बेखुदी में डूबा अपने आस-पास का माहौल देख रहा था कि तभी नागपाल ने मेज का ड्राज खोलकर उसमें ब्रीफ़केस रखते हुए आवाज लगाई—"नीना डार्लिंग, देयर इज ए विज़िटर फार यू—प्रिय नीना यहाँ आकर देखो, तुमसे कोई मिलने आए हैं। जल्दी आकर पहचानो कि यह कौन मेहमान है।"

दूर के किसी कमरे से एक खनखनाती जनानी आवाज आयी, "आई वेलकम यू मिस्टर गैस्ट—मेहमान का स्वागत करती हूँ—मैं अभी एक मिनट मे ही उधर आ रही हूँ।" पत्रकार यों नागपाल कम ही आमन्त्रित करते थे लेकिन कभी कोई पत्रकार आता ही न हो यह भी मुमकिन नही था। मेरा खयाल हुआ कि नीना नागपाल एकदम शायद मेरे सामने नही आयेगी—वह आवश्यक औपचारिकताओं का निर्वाह करके ही आना पसन्द करेंगी।

इसी दौरान नौकर ट्रे मे 'कोल्ड ड्रिंक्स' वगैरह की बोतलें लेकर आया और मेरे सामने पड़ी तिपाई पर ट्रे टिकाकर चला गया। मैंने एक बोतल उठा ली। मुझे बहुत देर से सख्त प्यास लग रही थी। मैं सोफे पर आराम से फैलकर बैठ गया और शीतल पेय घूँट-घूँट करके पीने लगा। नागपाल किसी दूसरे कमरे मे चले गए थे। अब चूँकि रात पूरी तरह उतर चुकी थी इसलिए नागपाल व्यर्थ की औपचारिकता निभाने के लिए मेरे पास बैठने वाले नही थे। मैं समझ गया कि वह भी

अब कम-से-कम पन्द्रह मिनट लगाएंगे—इत्मीनान से कपड़े बदलकर डट कर बैठेंगे ।

लेकिन मेरा अनुमान ग़लत निकला । नागपाल पाँच-सात मिनट में ही लौटकर आ गए और मेरे पास बैठते हुए बोले—"मिस्टर मलिक, आपकी ड्रेस बारिश में बुरी तरह भीग गई थी, मेरा ख़याल है आप इसे चेंज कर लें और इसे अपना घर समझकर इत्मीनान से बैठें ।"

मैंने अपनी शर्ट और पतलून छूकर देखी, उनमें थोड़ी-सी नमी ज़रूर थी लेकिन यह बारिश की बजाय पसीने की ही थी हालांकि उन चिपचिपे कपड़ों को बदन से उतारने की ज़बरदस्त इच्छा हो रही थी लेकिन मैंने लापरवाही से कन्धे हिलाकर कहा—"चेंज की कोई ज़रूरत नहीं है—दिन में कई दफ़ा ड्रेस चेंज करना हमारे पेशे में कहाँ मुमकिन है नागपाल साहब ?"

नागपाल मेरी बात का कोई उत्तर देते इसके पहले ही उनकी पत्नी नीना नागपाल दरवाज़े में घुसती दिखलाई पड़ीं। ताज़े मक्खन और गुलाबी रंग के सम्मिश्रण से जो रंग बनता है वैसा रंग उस महिला का था। लम्बा क़द और छरहरापन उसकी देह की विशेपता थी। उसके अद्‌भुत अपूर्व सौंदर्य देखने के लिए किसी की भी आँखें उसकी तरफ़ अनायास उठ सकती थीं। उसकी देह में दुबलेपन के बावजूद एक अनोखा लोच था और उसकी सुन्दरता जलाने वाली मालूम पड़ती थी। जब वह मेरे और नागपाल के नज़दीक आ गई तो नागपाल ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा—"हीयर इज़ मिस्टर मलिक दा एमीनेंट कारसपॉन्डेंट आफ दा वेल-नोन एंड फेमस मन्थली 'पर्सनेल्टीज़'—यह मशहूर मारूफ़ संवाद-दाता श्री मलिक हैं जो 'पर्सनेल्टीज़' अखबार के जाने-माने नुमाइन्दे हैं।"

नीना ने बहुत अदब से सिर झुकाकर मुझे दरबारी ढंग से आदाब किया। इसके बाद नागपाल ने मुझे सम्बोधित किया—"मीट माई हार्ट आफ़ हार्ट्स नीना। शी इज माई हैवन एण्ड अर्थ—मिस्टर नागपाल, मेरे दिल की मलिका नीना से मिलो—यही मेरी सब कुछ है—ज़मीन भी, आसमान भी और बहिश्त भी।"

इसके बाद उन्होंने नीना से कहा—"डार्लिंग, यही वह शख्स हैं

जिसने वर्षों पहले 'सितारों के खेल' के बारे में 'पर्सनेल्टीज़' में तुम्हारी तहेदिल से तारीफ़ की थी। इस फ़रिश्ते की हम लोगों पर खास नजरें इनायत हैं।"

नीना की आँखों में कोमलता और मधुरता छलक उठी और उसने अपनी गोरी मुलायम छोटी-सी हथेली मेरी तरफ़ बढ़ा दी। उसकी हथेली को हल्का-सा स्पर्श देते हुए मैंने मुलायमियत से दबा दिया। मैंने महसूस किया कि उसकी हथेली अंगारे की तरह दहक रही है।

नीना एक कुर्सी पर इस तरह टिक गई जैसे उसे कहीं जाने की जल्दी हो। मेरी ओर देखते हुए उसने बहुत धीमे शब्दों में कहा—"मिस्टर मलिक, मैं आपके नाम और काम दोनों से बहुत अच्छी तरह से वाक़िफ़ हूँ। आपसे मिलकर मुझे दिली खुशी हुई। आपके यहाँ आने से हम सभी को बहुत खुशी है—मैं आपकी शुक्रगुज़ार हूँ।"

मैंने नीना नागपाल को इस गर्मजोशी के लिए धन्यवाद देकर कहा—"मेरी लम्बे समय से हार्दिक इच्छा थी कि कभी आपके दर्शन करूँ लेकिन आप जानती हैं सिर्फ़ चाहने भर से ऐसी महत्त्वपूर्ण मुलाकातें सम्भव नहीं हो पाती। मैं तो आपका बहुत पुराना प्रशंसक हूँ।"

नीना नागपाल बहुत मोहक ढंग से हँसीं। उनकी हँसी में मोहाविष्ट करने वाला वशीकरण दिखाई पड़ता था। "ऐसी तो कोई रुकावट यहाँ नहीं है—आप कभी भी तशरीफ़ ला सकते थे···" फिर उन्होंने अपने पति की ओर देखकर कहा—"हाँ मिस्टर नागपाल से ही मिलने की बात हो तो ज़रूर लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।" उसने यह सही कहा था लेकिन उसमें व्यंग का हल्का-सा बहुत महीन पुट भी था जो उसके आगे के वाक्यों में प्रगट हो गया। बट हू सो एवर कम्स हीयर—ही हैज गोट दा फ्रेंड्स फार माई हज़बंड—लेकिन जो भी यहाँ आता है वह तो मेरे पति के व्यक्तित्व से ही खिंचकर आता है।"

नागपाल ने आगे अपनी पत्नी को बोलने का अवसर नहीं दिया—वह छूटते ही बोले—"नो-नो नीना डीयर, मिस्टर मलिक अपनी मैगज़ीन में हम लोगों की ज़िन्दगी के बारे में बहुत कुछ लिखना चाहते हैं।"

नीना यद्यपि मुस्करा रही थी लेकिन उसके चेहरे पर अजीब

तरह का तनाव उभर रहा था। मैंने उसके मस्तक पर एक हल्का-सा तेवर देखकर ही यह बात समझ ली थी। व्यंग की महीन रेखाओं को समेटते हुए बोली—"जनता या अखबार वाले पर्दे के पीछे रहने वाली डायरेक्टर की बीवी में दिलचस्पी नहीं रखते। मैं यक़ीन के साथ कह सकती हूँ कि पत्रकार साहब आपकी ही लाइफ़ कवर करना चाहते हैं।"

मैं अजीब दवसट में आ गया। मुझे सूझ नहीं रहा था कि क्या व्यवहार करूँ जो पति-पत्नी के बीच में मुझे अजनबी या उपेक्षित न रहने दे। यह एक बहुत बेहूदा स्थिति थी कि मैं मेहमान दोनों का था और मुझे ग़लत समझा जा रहा था। यह सही है कि बड़े आदमियों में दिलचस्पी रखने वाले लोग परिवार के अन्य सदस्यों को गौण खयाल करते हैं लेकिन मेरा उद्देश्य निश्चय ही अलग था। मैं नागपाल के जीवन की गहराइयों में उतरना चाहता था।

मैंने बारी-बारी से दोनों की ओर देखा। हालांकि दोनों बहुत सहज और उदार लग रहे थे लेकिन दोनों का अस्तित्व एक दूसरे से साफ़-साफ़ अलग-थलग था जैसे एक म्यान में दो तलवारें डालने की कोशिश की गई हों।

मैंने स्थिति को सामान्य बनाने की कोशिश में कहा—"नीना जी, कम-से-कम मैं तो यह नहीं मानता कि पर्दे के पीछे या किले की नींव में जो कुछ है उसे अनदेखा कर दिया जाय बल्कि मेरा उद्देश्य तो ज़रा अलग ही है। जहाँ तक मिस्टर नागपाल का सवाल है वह तो हमेशा अखबार की सुर्खियों में ही रहते हैं। दर्शक के लिए निश्चय ही नागपाल साहब बहुत आकर्षक हैं लेकिन हमारे सामने दर्शकों के साथ-साथ इतना विशाल पाठक वर्ग भी है जिसकी नीना नागपाल में आज भी गहरी रुचि है। इसके अलावा आप स्वयं भी रजतपट का गौरव रह चुकी हैं और आज एक सफल पत्नी और गृहिणी हैं।"

मेरी बात पर नीना सख्त अवज्ञा की हँसी हँसने लगी जैसे मैंने कोई बहुत बड़े अपमान की बात कह दी हो। उसकी हँसी इतनी ठंडी और भयानक थी कि मुझे अपनी पसलियों में बर्फ़ गलता महसूस हुआ।

इस बीच नागपाल ने अपना सिगार जला लिया था और वह सोफ़े पर पीठ लगा कर आराम से बैठ गये थे। उनके चेहरे पर अजीब शान्ति

थी और यकायक पकड़ में आने वाला कोई भाव नहीं था बल्कि यह भ्रम होता था कि वह नीना की कोई बात शायद सुन ही नहीं पा रहे हैं।

कुछ मिनट बाद नीना के चेहरे पर सहजता लौट आई और वह कोमल स्वर में बोली—"आपकी भावनाओं का मैं बहुत आदर करती हूँ और आभारी हूँ लेकिन अब मुझे यह सोचने में काफी जोर लगाना पड़ता है कि मैं कभी अभिनेत्री भी थी। दर असल वह कोई सपना लगता है जो कभी किसी और जनम में मैंने देखा था।"

मैंने उसकी बात का प्रतिवाद किया, "नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है नीना जी! आप उनके बारे में 'अन्डर एस्टीमेट' करती हैं।'

" 'अन्डरएस्टीमेट' करने का कोई सवाल नहीं है। पर्दे पर दो-चार बार झलक दिखाने वालों को दर्शक देर तक याद नहीं रखते। कई कलाएँ ऐसी होती हैं जिनके कलाकारों को लोग सामने न देखने पर भी याद रखते हैं—मसलन साहित्य-संगीत-चित्रकला वगैरह लेकिन पर्दे पर दो-चार बार झलक दिखाने वालों को दर्शक बहुत देर तक याद नहीं रख पाते। अब भी कोई मुझे याद करता होगा इसे मानने की कोई वजह मुझे नजर नहीं आती।" नीना ने अनजाने में एक लम्बी सांस लेकर कहा—"एक समय होता है जब आदमी खबरों के बीच होता है तो उसे भ्रम होने लगते हैं। वह सोचता है कि हमेशा चाँद-सूरज की तरह जगमगाता रहेगा लेकिन खबरों और अफवाहों में से खिसक जाने के बाद उसे कोई क्यों याद करेगा मलिक साहब? और अब तो मेरी हैसियत ही बदल गई है—फ़िलहाल मैं एक अत्यन्त व्यस्त और सफल बड़े आदमी की पत्नी भर हूँ।"

इसी समय नागपाल ने अपनी आँखें खोलीं और सिगार को 'ऐश ट्रे' पर रखते हुए चुहल से बोले,'नीना यू आर रियली ग्रेट—वाकई तुम बहुत खूब हो। मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि सुखी बीवी होना—अच्छी माँ होना किसी बड़े आर्ट से रत्ती भर कम नहीं है। दुनिया में बड़े लोगों की, मशहूर लोगों की कोई कमी नहीं है। इन लोगों की लीलाओं से सारे अखबार हर रोज रंगे रहते हैं लेकिन यह भी देखा जाना चाहिए कि उनमें से सच्ची खुशियाँ कितनों को हासिल होती हैं। बाहर की दुनिया

में बेहद कामयाब और प्रशंसा पाने वाले लोगों की भीतरी ज़िन्दगी कभी-कभी नरक से भी बदतर होती है। तुम कहो तो मैं ऐसे सैंकड़ों लोगों के नाम तुम्हें अभी सुना दूँ जो अपने वक्त में और बाद में भी इतिहास में अच्छी-ख़ासी जगह घेरे बैठे हैं लेकिन भीतरी तौर पर उन्होंने यतीमों से भी गई गुज़री ज़िन्दगी जी है।"

नीना बहुत धैर्य से नागपाल का लम्बा वक्तव्य सुनती रही और उनके चुप हो जाने पर विरोधी तर्क प्रस्तुत करने लगी, "यह कोई ज़रूरी तौर पर सच नहीं है कि औरतों के घर सम्हाले रहने से उनके पतियों की ज़िन्दगी स्वर्ग बन जाये। यह सारे दावे झूठे और औरत को बहलाने-फुसलाने वाले हैं।"

नागपाल ने कहा—"तुम तस्वीर के दोनों पहलू तो देखो डियर।"

नीना ने विचित्र शान्त स्वर में कहा—"सच्चाई यह भी है कि आदमी चाहता ही नहीं है कि उसकी पत्नी को भी यश और प्रशंसा मिले और मज़े की बात यह है कि प्रसिद्धि और तारीफ़ के लिए आदमी हर घड़ी खुद दौड़ता रहता है।"

नीना ने नागपाल से सीधा सवाल किया, "जब जनता के सामने आप हैं तो उन्हें मेरी तरफ़ आँखें उठाने की ज़रूरत भी क्या है ?"

शायद पति-पत्नी के बीच चलती यह ठंडी बहस एक तल्ख़ी का रूप धारण कर लेती कि तभी एक नौकर के आ जाने से अप्रिय स्थिति टल गई।

नौकर के लौट जाने के बाद नागपाल ने नीना की ओर मुख़ातिब होकर कहा—"मैं समझता हूँ इस वक्त रात को बढ़ने से रोकने की कोशिश की जानी चाहिये डार्लिंग। मिस्टर मलिक आज रात हम लोगों के साथ ही ठहरेंगे। ये मेरा इन्टरव्यू वहीं लोकेशन पर लेना चाहते थे लेकिन मैंने इन-से कहा कि शूटिंग के दौरान जो आपाधापी रहती है उसमें क्या ख़ाक बातचीत हो पायेगी। मेरे बारे में कुछ जानना ही चाहते हो तो 'फारमेल्टी' छोड़कर मेरे साथी बनो—'नीना विला' में पहुँचकर घर की महारानी से मिलो तभी तुम्हें मेरी सफलताओं का अन्दाज़ हो पायगा।"

नागपाल की बात नीना बहुत ध्यान और धैर्य से सुनती मालूम पड़

रही थी। थोड़ी देर पहले उसके चेहरे पर यकायक जो व्यंग ग्रौर कड़वाहट ग्रा गई थी ग्रब उसका नहीं निशान तक मौजूद नहीं था बल्कि इस समय तो वह बहुत सरल ग्रौर ग्राज्ञाकारी मालूम पड़ रही थी।

नागपाल मेरी ग्रोर ग्राँखें उठाकर बोले—"जब कोई पत्रकार दफ़्तर में या लोकेशन पर मेरे बारे में कुछ गहरी बातें जानने की ख्वाहिश जाहिर करता है तो मुझे ग्रपनी जुबान पर लगाम रखनी पड़ती है। क्या यह एक बेहतर तरीका नहीं है कि जब ग्राप किसी प्रसिद्ध ग्रादमी के भीतरी रहस्य जानना चाहें तो उसकी घरेलू ज़िन्दगी का परीक्षण करें। परिवार के बीच कोई ग्रादमी चाहे एक शब्द भी न बोले तब भी ग्राप उसकी सारी ज़िन्दगी का नक्शा समझ सकते हैं। मैं कई लोगों के बारे में बखूबी जानता हूँ। ये लोग फिल्म व्यवसाय में शिखर पर बैठे हुए लोग हैं—फिल्मी दुनिया मे उन्हें डिक्टेटर समझा जाता है लेकिन उनकी प्राइवेट लाइफ इस कदर बिखरी हुई है कि जानकर हैरत होती है।"

मैंने नागपाल की बात पर सहमति जाहिर करने के लिए सिर हिलाया ग्रौर बोला—"यह एक ऐसा दुखान्त है कि इसे टालने के लिए बहुत गहरी सूझ-बूझ तो चाहिये ही धीरज भी बहुत जरूरी है। सिर्फ़ ग्रनुभव से कुछ नहीं बनता।"

रात बढ़ती चली जा रही थी ग्रौर 'नीना विला' के बाहर पहाड़ियों पर गहरे ग्रंधेरे की चादर बिछी हुई थी। नागपाल ने ग्रपनी पत्नी से बहुत मुलायम स्वर मे कहा—"नीना डार्लिंग, क्या बच्चे सो गये? मिस्टर मलिक को ग्रपने बच्चे तो दिखलाग्रो—इन्हें हमारी नन्ही-मुन्नियों से मिलने की बड़ी उत्सुकता है।"

नागपाल के शब्दों को सुनते ही नीना ने मेरे चेहरे पर कुछ खोजने की कोशिश की। मैंने तत्काल ग्रपनी दिलचस्पी व्यक्त की—"जी हाँ, ग्रापकी बच्चियाँ किधर हैं? उन्हें देखने की मुझे बहुत उत्सुकता है।" हालांकि सच्चाई यह है कि बच्चो के बीच मैं बहुत उखड़ा हुग्रा महसूस करता हूँ। बच्चो से बातें करने का खास ग्रन्दाज होता है। ग्रादमी सहज भाव से ही उनके बीच 'नार्मल' ग्रनुभव कर सकता है लेकिन जहाँ बच्चों को नुमाइशी चीज की तरह बुलाबुला कर दिखाने की बात हो वहां

उनसे घुलना-मिलना लगभग एक समस्या जैसा हो जाता है। पर मुझे या किसी को भी ऐसे मौक़े पर जबरदस्ती दिलचस्पी ज़ाहिर करनी ही पड़ती है वर्ना तो आतिथेय खामख्वाह आपको मनहूस आदमी ख़याल करने लग जाते हैं।"

नीना ने मेरी आँखों में कुछ पढ़ने की चेष्टा की और शायद मेरे शब्दों के पीछे छिपी सच्चाई को पकड़ने की कोशिश की। वह हँसोड़ लहजे में कहने लगी "क्या वाक़ई आपको बच्चों में बहुत रुचि है ? पता नहीं मेरा ख़याल तो यही है कि सिर्फ़ माँ-बाप ही अपने बच्चों को अनोखी और दर्शनीय चीज़ मानते हैं।"

मैंने उसके शब्दों की असलियत को अनुभव तो किया किन्तु उससे साफ़ इन्कार कर गया "बच्चे तो फिर बच्चे ही हैं। वह क्या अपने, क्या पराये। मैं समझता हूँ बच्चों को सब लोग एक से ही ढंग से प्यार करते हैं। क्या यह सच नहीं है कि बच्चे इस वीरान रेगिस्तान जैसी जगह में महकते फूलों की तरह हैं।"

यकायक नीना ने मुझ से सवाल किया—"आपके कितने बच्चे हैं ?"

मैंने ध्यानमग्न नागपाल का गम्भीर चेहरा देखा। पता नहीं वह क्या सोच रहे थे। मैंने नीना का सवाल सुनकर उत्तर देने में संकोच का अनुभव किया लेकिन किसी तरह जवाब दिया ही—"क्षमा करें। मैंने विवाह करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं किया।" यह सूचना देकर मैंने स्वयं को किंचित् अव्यवस्थित अनुभव किया।

नीना मेरे चेहरे पर संकोच देखकर खिलखिलाकर हंस पड़ी "ताज्जुब की बात है—कुँवारे आदमी की बच्चों में इस क़दर दिलचस्पी ? पहली बार किसी ऐसे भले आदमी को देख रही हूँ।" फिर अपनी मुद्रा को संयत करके नीना ने पूछा, "कहीं आप बैचलर रहने का फ़ैसला तो नहीं कर चुके। मेरा मतलब है कोई लव वग़ैरा की ट्रेजेडी तो नहीं है।"

मैंने कहा—"आपको इसमें कोई रहस्य नहीं मिल पायेगा मिसेज़ नागपाल। मैं औरतों से नफ़रत करने वाला कुँआरा नहीं हूँ। अगर ऐसा होता भी तो आपसे मिलने के बाद मेरे विचार ज़रूर बदल जाते।"

नीना ने शरारत के भाव से पूछा—"वह कैसे ?"

'आपको और नागपाल के सुखी-सम्पन्न दाम्पत्य को देखकर हर आदमी अपने देवलर रहने को कोसेगा। अब तो मेरी भी तबियत होने लगी है कि मुझे घर-बार बसा कर रहना चाहिए।" मैंने ठहाका लगाया।

शायद नागपाल को यह बात ऐसी लगी जिसमे वह अपनी पत्नी को प्रसन्न कर सकते थे। वह बोले—"देख रही हो डार्लिंग, तुमने हमारे दोस्त को किस क़दर जादू मे बांध लिया है कि वह घरेलू जिन्दगी मे दाखिल होने को बेताब है।"

नीना उठते हुए बोली—"क्यो नही होंगे, आखिर उन्होंने आज एक आइडियल कपल (आदर्श जोड़ी) जो देख लिया है।" निश्चय ही उसके शब्दों में भरपूर व्यंग की मात्रा थी लेकिन अगले क्षण वह मेरी ओर कटाक्ष करके बोली—"मुझे अब पूरी तरह भरोसा हो गया है कि मिस्टर मलिक तारीफ करने के आर्ट में कमाल हासिल कर चुके हैं। लेकिन अभी तक वह..."

मैं समझ गया कि वह क्या कहना चाहती है लेकिन मैंने उस प्रसंग पर जान बूझ कर कोई चर्चा नही की। वह हॉल से बाहर जाते हुए मेरी तरफ जरा-सा घूमकर बोली—"मुझे डर है कही बच्चियाँ सो न गई हो। अगर वे जाग रही होगी तो मैं उन्हे अभी लेकर आती हूँ।"

जब नीना हॉल से बाहर निकल गई तो नागपाल ने बहुत धीमी आवाज़ में मुझसे पूछा—"क्या यह नीना आपको 'स्क्रीन' पर देखी हुई नीना से कुछ कम नजर आती है?"

मैंने उस ग्लैमर-युक्त स्टार नीना की याद करते हुए कहा—"नीना जी बदली तो जरूर हैं मगर यह परिवर्तन ऐसा है जिसे कोई भी ताकत नही रोक सकती। नीना जी को देखकर आँखों को राहत महसूस होती है वर्ना अठारह-बीस साल बाद क्या बचता है। आदमी अपने बदले हुए रूप को कई बार तो खुद भी नहीं पहचान पाता।"

"मेरा भी यही खयाल है" नागपाल की आवाज़ मे गहरा सन्तोष था। फिर नागपाल ने परम आसक्ति के भाव मे कहा—"आप जरा सोचिए—जब वह पर्दे पर आती थी तो अल्हड़ लड़की थी। आप तो जानते हैं उसकी खूबसूरती जंगल की आग के मानिन्द थी जो किसी भी चीज

को नहीं बचने देती लेकिन आज वह एकदम शान्त शीतल नदी के समान है—उसका किनारों को तोड़ फेंकने वाला सैलाब खत्म हो चुका है।"

अपनी बात को एक निश्चय निष्कर्ष देते हुए नागपाल बोले—"मातृत्व ही वह चीज़ है मलिक साहब, जो औरत का रूप और शक्ति है। वही तो किसी औरत का व्यक्तित्व बनाती है। नीना के चेहरे-मोहरे और शख़्शीयत को एक ज़िम्मेदार औरत के रूप में ढालने का काम इसी मदरहुड (मातृत्व) को है।"

इसी समय नीना दो लड़कियों को अपने साथ लेकर आती दिखलाई पड़ी और पास आकर मुझे सम्बोधित करते हुए बोली—"मलिक साहब, दो छोटी बच्चियाँ तो सोने चली गई हैं—उन्हें आप सुबह देखियेगा—ये दोनों अभी जाग रही थीं।" नीना ने दोनों बच्चियों को मेरे सामने करके उनके नाम बतलाए। बड़ी बच्ची एकदम चुप साधे खड़ी थी और छोटी अपनी गोल-गोल आँखों से मुझे घूर रही थी। मुझे उन बच्चियों को दिखाये जाने की गरज़ से उनींदेपन में बिस्तर से निकालकर लाना बहुत चुभा। आख़िर इस रस्मअदायगी की ज़रूरत भी क्या थी? मैं उन्हें सुबह भी तो देख सकता था।

नागपाल के यह पूछने पर कि बच्चियाँ कैसी लगीं मैं एकदम सतर्क हो गया। मैंने भारी प्रसन्नता व्यक्त की—"ग्रैन्ड, नाइस, एकदम गुड़ियों जैसी मोहक और गुलाब की कलियों जैसी मासूम हैं।"

"क्या वे खूबसूरत नहीं हैं? मेरा मतलब अपनी माँ की तरह नाज़ुक और सुन्दर।" नागपाल ने गहरी जिज्ञासा का भाव दिखलाते हुए मेरी तरफ़ देखा।

"सुन्दर? आप सुन्दर की क्या बात कहते हैं नागपाल साहब। वे 'सुन्दर' से तो बहुत आगे हैं। उन्हें नाज़ुक के साथ-साथ मैं ज़िगर के टुकड़े कहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।" मैंने उतावली दिखाते हुए अपनी बात पूरी की।

अब नाग़पाल अपनी पुत्रियों की तरफ़ घूम गये और मुलायम आवाज़ में बोले—बच्चियो अपने अंकल को 'गुडनाइट' बोलो।"

बड़ी बच्ची कुनमुनाई—"गुडनाइट अंकल!"

मैंने बड़ी बच्ची को अपनी तरफ़ खींचकर उसका सिर थपथपाया और कन्धा सहलाते हुए पूछा—"बिटिया रानी, तुम्हारा स्वीट नेम क्या है ?"

लड़की ने एक मधुर खनखनाती आवाज़ में धीरे से कहा—"माई नेम इज मीता, अंकल—मेरा नाम मीता है चचा जान।"

"वेरी गुड—बहुत खूब—कितना मीठा नाम है मीता। सातेक साल की उस बच्ची के चेहरे पर चंचलता नाम को भी नहीं थी। लगता था उसे माँ-बाप के जिस उन्मुक्त वात्सल्य की दरकार होती है—वह उसे अभी तक नहीं मिल पाया था। मीता के साथ जो उससे छोटी बच्ची खड़ी थी वह पाँच साल से ज्यादा की नहीं थी। उसकी आँखों में नींद का उनींदापन समाया हुआ था। मुझे उन बच्चियों को ज्यादा देर रोकना घोर अमानवीय लगने लगा।

मैंने नीना नागपाल से बाकी दो बच्चियों की उम्र मालूम की तो उसके चेहरे पर व्यंग्य-मिश्रित तनाव फैल गया। उसने अपने पति की ओर कन-खियों से देखते हुए उत्तर दिया—"एक बच्ची जिसे तीसरी कहना ज्यादा बेहतर होगा तीन साल की है और उससे छोटी अभी कुल आठ महीने की है।"

हालांकि कि मेरे मुँह से 'बहुत खूब' निकला लेकिन मैं मन में सोचने लगा कि यह क्या गजब है—इतनी बड़ी हस्ती—इतनी अधिक प्रसिद्धि और हर प्रकार से आधुनिक लेकिन बच्चों की उम्र में कोई ख़ास फ़र्क नहीं। सात साल में चार बच्चे तो बहुत से गरीब गुरबा भी पैदा नहीं करते।

फिर मुझे इस बात पर भी हैरत हुई कि अठारह वर्ष पहले जिस आदमी ने शादी की हो वह भला आदमी बच्चे पैदा करने में किस चीज़ का इन्तज़ार करता रहा कि शादी के दस वर्ष बाद पहला बच्चा पैदा हुआ। अगर नागपाल ने ठीक समय पर यह सन्तानोत्पत्ति का सिल-सिला चालू किया होता तो बड़ी बच्ची की उम्र इस समय कम-से-कम चौदह-पन्द्रह साल की हुई होती। लेकिन मैंने इस दिशा में स्वयं को अनाड़ी मानकर इस गोरखधन्धे में फँसने से बचाया और घंटे के

बाद 'ब्रीफ़केस' खोलकर सिगरेट केस निकाल लिया।

नीना नागपाल ने अपनी बच्चियों की नुमाइश का दौर खत्म समझकर उनसे कहा—"अच्छा अब तुम लोग 'अंकल' और 'डैडी' को प्यार करो और 'बैडरूम' में जाकर सो जाओ।"

बच्चियों ने अपनी माँ के आदेश का तत्काल पालन किया। बड़ी बच्ची ने आगे आकर मेरे खुरदरे गालों का अपने पंखुरियों जैसे होठों से स्पर्श किया और फिर अपने पिता की ओर बढ़ गई। यही क्रिया छोटी बेटी ने दोहराई और फिर दोनों अपनी मम्मी की पप्पी लेकर जाने लगीं। मैंने अपने स्थान से उठकर उन्हें बारी-बारी से गोद में उठाया—उनका मस्तक होठों से छुआ और पीठ पर हल्की थपकियाँ दीं।

बच्चियाँ जब हॉल से बाहर निकल रही थीं तो नागपाल उठकर खड़े होते हुए बोले—'बच्चियो को मैं अपने साथ ऊपर ले जा रहा हूँ—तुम मिस्टर मलिक को 'कोज़ी कार्नर' की थोड़ी-बहुत सैर कराओ। हालांकि रात हो जाने की वजह से 'नीना विला' के आसपास के सुन्दर दृश्य तो अब नज़र नहीं आयेंगे लेकिन जो भी देख सकें वह ग़नीमत है।"

नागपाल बाहर जाने से पहले मेरी ओर मुड़कर कहने लगे, "मिस्टर मलिक, इस जगह की शामें बहुत हसीन होती हैं मगर ट्रेजेडी यह है कि उन शामों को देखने का मौक़ा आसानी से नहीं आता। यह बहुत कम हो पाता है कि कोई मेहमान मेरे साथ आये और वह यहाँ की उतरती हुई शाम को 'एन्ज़्वाय' कर ले।

जब नागपाल बच्चियों को लेकर चले गये तो नीना ने मुझसे पूछा—"क्या दरअसल आपका खयाल है कि हमारे बच्चे खूबसूरत और मोहक हैं?"

"यह आप क्या पूछ रही हैं नीना जी? आपकी बच्चियाँ हू-ब-हू आपका ही नक्शा है—वही नाक—वही आँखें, वही गोरा लम्बोतरा चेहरा। मैं कह सकता हूँ ऐसे प्यारे बच्चों का माँ-बाप होना फ़ख्र की चीज़ है।"

"हाँ मैं भी कभी-कभी यह सोचने की हिमाक़त करती हूँ लेकिन···।" नीना ने अपनी बात बीच में खत्म कर दी और उसके चेहरे पर एक

फीकी मुस्कान तैर गई। बल्कि शायद अनजाने में ही उसके होंठों से एक सर्द आह भी निकल गई।

मैंने उससे कहा—"नीना जी, आपने अपनी बात बीच में ही अधूरी क्यों छोड़ दी—क्या मुझे आप अपने विश्वास में देखने योग्य नहीं समझती ?" मैंने उसके प्रति हार्दिक सहानुभूति अनुभव की।

"कोई खास बात थी भी नहीं। आपने इन बच्चियों को बहुत ममता से सुन्दर कहा मगर इनमें से किसी की भी तुलना मेरे से करने का कोई अर्थ नहीं है। मैं तो अब बीते जमाने का इतिहास भर हूँ। जो आदमी के हाथ से निकल जाय उसे दोहराने से लाभ भी क्या मिलता है मिस्टर मलिक ?"

"आप अतिशयोक्ति से काम ले रही हैं नीना जी।" मैंने नीना की प्रशंसा करते हुए कहा—"आपके शरीर में जो प्राकृतिक सौन्दर्य तथा आकर्षण है उसका कोई जवाब नहीं है। आपको सहसा देखकर हजार आदमियों में से शायद एक भी ऐसा नहीं निकलेगा जो आपको पैंतीस से ऊपर का बतला सके। यह तो कहना और भी मुश्किल होगा कि आप चार बच्चों की माँ हैं।"

नीना ने मेरी पैंतीस वाली बात को तत्काल सही किया—"पैंतीस नहीं मैं तो अड़तीस बरस पूरे कर चुकी हूँ।" इसके बाद उसने यह उम्र वाला प्रसंग वहीं समाप्त करके कहा—"मिस्टर मलिक, मुझे आप माफ करें—दरअसल मुझे लगातार बातें करते चले जाने का बहुत बुरा खब्त है। अब देखिए मैं बातें करने की धुन में यही भूल गई कि मुझे आपको नीना विला के आस-पास घुमाने के लिए कहा गया था। मेरे पति महाशय को 'कोजी कार्नर' की पृष्ठभूमि दिखलाने में बड़ी खुशी महसूस होती है। जो भी मेहमान हमारे यहाँ गाहे-बगाहे आते हैं उन्हें आस-पास के नजारे जरूर दिखलाये जाते है।"

मैंने सहज भाव से कहा—"निश्चय ही नागपाल का यह गौरव अपनी जगह उचित है। उनकी दृष्टि में 'कोजी कार्नर' एक आरामदेह जगह है और इसके अलावा यहाँ एक आदर्श पति-पत्नी का जोड़ा भी तो रहता है। मैं नागपाल साहब को बधाई देता हूँ जिन्हें इतने आकर्षक

पल-पल बदलने वाले भाव किसी गहरे समुद्र से कम नहीं हैं। इसके अलावा सबसे बड़ी बात यह है कि हम दावे चाहे कुछ भी करें लेकिन आदमी के बारे में हम कितना जानते हैं? यहाँ तक कि हमारी बाजू में हमारा पड़ोसी बरसों से रहता चला आता है लेकिन हम उसके बारे में कुछ नहीं जानते। क्या किसी जीवित आदमी का सिर्फ़ नाम, पता जान लेना ही काफ़ी होता है?"

नीना को मेरी बातें विचित्र अवश्य लग रही होंगी लेकिन उन बातों के प्रति उसमें उपेक्षा का भाव कतई नहीं था। वह शान्त स्वर में बोली—"वास्तव में यह एक अजब सचाई है कि आदमी, आदमी के बारे में सबसे कम जानता है और उसे इस बात पर कोई शर्म भी नहीं है।"

मैंने 'नीना विला' की किसी भी चीज के बारे में कोई रुचि नहीं दिखलाई क्योंकि मैं जान गया था कि जब भी कोई मेहमान यहाँ आता होगा तो यह देखने-दिखाने की औपचारिकता ज़रूर निभाई जाती होगी। जिस तरह एक 'गाइड' एक ही तरह की बातें बोलते-बोलते ऊब जाता है उसी प्रकार नीना भी दुखी हो चुकी होगी। मैंने 'नीना विला' के आस-पास के दृश्य देखने का मोह त्याग कर कहा—"कोई खास बात नहीं है—मैं सारी जगह का सुबह ही सुबह सैर करते हुए निरीक्षण कर लूंगा। नागपाल साहब का खास जोर 'कोजी कार्नर' की शाम पर था लेकिन वह तो अब बीत ही चुकी है।"

नीना ने कहा—"ठीक है वह आप कल भी देख सकते हैं। आइये तो फिर पिछली तरफ़ की बाऊन्ड्री वाल के पास बैठकर बातें करते हैं, लेकिन आप एक वायदा कीजिये।"

"आप कहिये तो। मुझे कोई भी इक़रार करने से इन्कार नहीं है।" मैंने तत्काल उसे आश्वस्त किया।

"आप मेरे हसबैंड से यह नहीं कहेंगे कि मैंने आपको कहीं नहीं घुमाया-फिराया।"

मैंने अपने कान छूकर कहा—"आप यह न कहिये। मैं इस तरह की नागवार हरक़त करने का साहस कर सकता हूं?"

मैं और नीना चलते-चलते बाऊन्ड्री वाल्स तक पहुंच गये और वहीं

लॉन में एक संगमरमर की पटिया पर इत्मीनान से बैठ गए। इस समय आसमान से बादल छँट चुके थे। कहीं-कहीं बादल के टुकड़े आसमान पर थे जरूर लेकिन अब वर्षा की सम्भावना समाप्त हो चुकी थी। ऊपर चाँद लगभग पूरी गोलाई में चमक रहा था और सारे वातावरण पर अपूर्व शान्ति की चादर फैली हुई थी। सारा माहौल एकदम हल्का और रोमांटिक लग रहा था।

इस माहौल में कुछ ऐसा नशीलापन घुला हुआ था कि नसों में उतरता हुआ अनुभव हो रहा था। पता नहीं नीना सामने की दिशा में क्या देख रही थी। मैं नीना का ध्यान भंग नहीं करना चाहता था लेकिन मेरी यह भी हार्दिक इच्छा थी कि वह अपने विवाह से पूर्व के जीवन को किसी तरह छेड़ बैठे। एक समय की प्रसिद्ध अभिनेत्री जो आज लग-भग गुमनामी के गर्त में समा गई थी मुझे भीतर से बहुत बिखरी-टूटी और उदास लग रही थी। बाहर से देखने पर उसके पास क्या नहीं था लेकिन वह इस सन्नाटे-भरे वातावरण में भी शायद किसी भीतरी कोला-हल में डूबी थी।

इसी समय हमें खोजते हुए नागपाल आ गये और हँसते हुए बोले—"आप लोगों ने एकान्त कोना आखिर ढूँढ़ ही लिया। मिस्टर जर्नलिस्ट, आपने मेरी पत्नी को फुसलाने के लिए बहुत-बहुत रोमांटिक जगह चुनी है!"

मैंने उठकर नागपाल के नजदीक खड़े होते हुए कहा, "ऐसी सुन्दर जगह और वातावरण में यह स्वाभाविक ही है मिस्टर नागपाल! आप अगर इधर नीना जी के पास बैठकर बातें करने लगें तो मैं इस शानदार जोड़े की एक तस्वीर ले लूँ।"

नागपाल ने लापरवाही के अन्दाज पर कहा—"मैं सोचता हूँ, 'फोटोग्राफ्स' आपको बहुत मिल जायेंगे। अब आप हाथ-मुँह धोकर 'एट ईज' (आराम की मुद्रा में) हो जाइये। फिर आपसे इत्मीनान से बैठकर कुछ बातचीत होगी। आज आपको मेरा साथ देने के लिए वाकई बहुत परेशान होना पड़ा।"

मैंने कहा—"नहीं-नहीं, मैं इसे बढ़िया किस्म का एडवेंचर मानता हूँ।"

नागपाल ने अपने दोनों कन्धे सिकोड़कर कहा—"अब आप इसे जो भी मानिये लेकिन क्या किया जा सकता है—हम लोगों की ज़िन्दगी में इसी तरह के खटराग लगे रहते हैं—वाट टु डू लाइफ़ इज़ सच—क्या करें ज़िन्दगी ही ऐसी है।"

हम तीनों लान से बाहर निकलने लगे।

पाँच

मेहमानों के लिए बने फ्लैट्स नागपाल ने मुझे दिखलाये। किसी अच्छे से अच्छे 'फाइव स्टार' होटल में मिलने वाली समस्त सुविधायें वहां उपलब्ध थीं। मैंने इन अतिथि-गृहों को देखकर नागपाल की प्रशंसा की और मैं उनके साथ बातें करते हुए लाऊंज में लौट आया।

वहां मेज पर पीने का सरंजाम हो चुका था। हम लोगों के लौटने से पहले ही नौकर व्हिस्की की बोतल और बिल्लौरी काँच के खूबसूरत थाऊल में कुटी हुई बर्फ रख गया था। नागपाल ने मेज पर रखी हुई बोतल को ध्यानपूर्वक देखा और उनकी भौंहों में बल पड़ गए। नागपाल एक क्षण चुपचाप कुछ सोचते रहे और फिर गम्भीर स्वर में उससे बोले—"मियां रहमान, यह क्या है ? कल रात यह बोतल पूरी थी—इसमें से मैंने सिर्फ एक ड्रिंक लिया था। आप बता सकते हैं कि यह रखे-रखे एक रात में आधी कैसे रह गयी ?"

नौकर ने कुछ कहने की कोशिश की तो नागपाल ने हवा में अपना दाहिना हाथ उठाकर उसे बोलने से रोक दिया और स्वयं बोलने लगे—"मैं देख रहा हूँ तुम लोग मेरे लिबरल (उदार) होने का नाजायज फायदा उठा रहे हो—मैं बतलाये देता हूँ कि इस किस्म की बेहूदगी मैं ज्यादा बरदाश्त नहीं कर सकता। क्या समझे ? एक बार कान खोल-कर सुन लो।"

नागपाल के चेहरे से गम्भीरता हट गई और उसके स्थान पर उत्ते-जना दिखाई पड़ने लगी। शायद उन्हें गहरा अफसोस हो रहा था कि इतनी कीमती शराब उनके बगैर पिये ही आधी रह गयी। मैं इस स्थिति को टाल सकने में भी समर्थ नहीं था—अजीब-सी दवमट में पड़ गया।

मालिक और नौकर के बीच पैदा होने वाली इस नाज़ुक स्थिति पर मैं कोई टीका-टिप्पणी भी तो नहीं कर सकता था।

नागपाल भरे हुए बैठे थे। वह सोच नहीं पा रहे थे कि मुझसे क्या बातें करें। बोतल में रखी शराब अभी भी काफ़ी थी। इसके अलावा उनके स्टाक में इस चीज़ की कमी होने का भी प्रश्न नहीं उठता था लेकिन नौकर ने चोरी से उनकी शराब पीकर उनका मूड ख़राब कर दिया था।

इसी समय सामने से नीना आती दिखलाई पड़ी। उसके चेहरे पर एक विचित्र-सी उदासी नज़र आ रही थी। लेकिन इससे वह और भी ज़्यादा मोहक लग रही थी।

नागपाल ने दो गिलासों में शराब ढाली और मुझसे पूछने लगे— "आप इसमें सोडा डालना पसन्द करेंगे या 'नीट' पीना पसन्द करेंगे? मुझे तो व्हिस्की में आइस (बर्फ़) के अलावा और कुछ डालना पसन्द नहीं है। व्हिस्की में मिलावट करते वक्त मुझे यह लगता है जैसे मैं इस चीज़ के साथ गुनाह कर रहा हूँ।"

मैंने नागपाल की बात से सहमति ज़ाहिर की और कहने लगा— "पहला पैग तो मैं भी ख़ालिस ही लेना पसन्द करता हूं।" नागपाल ने ओ० के० कहकर मेरे हाथ में गिलास देकर अपना गिलास हवा में उठा-कर कहा—"नीना के चार्म के लिए जिसने यह सपनों का महल सजाया है।"

मैंने भी अपना गिलास ऊपर हवा में उठाया और 'चियर्स फार हर चार्म' (उसकी सुन्दरता के लिए) कहकर व्हिस्की की एक तल्ख़ घूंट गले के नीचे उतार ली।

नीना हल्की नीली रोशनी में स्वप्न-सुन्दरी जैसी लग रही थी। उसकी ख़ूबसूरती में एक सलीक़ा नज़र आता था। पूरा व्यक्तित्व कुद-रती सुन्दरता से मंडित था। बड़ी-बड़ी सपनों में डूबी आँखों को सघन पलकें ढँके हुए थीं और भौंहें लम्बी कमान जैसी खिंची हुई थीं। यही वह सुन्दरता थी जिसमें गर्व का आंशिक मेल अखरता नहीं है।

शायद मैं नीना की सुन्दरता के विषय में कुछ कहना ही चाहता था

कि नागपाल वेसब्री से बोले—"हाँ डार्लिंग, मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ । मुझे कुछ दिनों से ऐसा लग रहा है जैसे कोई आदमी मेरी कीमती शराब को चोरी से गटक जाता है ।"

नागपाल ने बोतल की तरफ उँगली से संकेत करके कहा—"कल रात इस बोतल में महज दो पैग शराब निकाली थी मैंने और आज जरा इसकी हालत देखो । नीना क्या खयाल है तुम्हारा—किसने पी होगी ?"

नीना ने शराब की बोतल की तरफ सरसरी नजर से देखा गोया वह कोई बहुत मामूली चीज के बारे में व्यर्थ के आरोप सुन रही है । वह कंधे उचकाकर बोली—"डीयर, मैं यह कैसे बतला सकती हूँ । मैं कोई ज्योतिष तो जानती नहीं हूँ । घर के नौकरों की एक पूरी पलटन के होते हुए किसी का नाम लेना क्या ठीक होगा ? मैंने अपनी आँखों से किसी को आपकी शराब पीते नहीं देखा ।"

नागपाल कुछ क्षण एकदम चुप रहे शायद वह इस मामूली-सी बात को तूल देकर विवाद का विषय नहीं बनाना चाहते थे । वह बहुत धीमी और शान्त आवाज में बोले—"डार्लिंग, अलमारी की चाभी मेरे और तुम्हारे अलावा सिर्फ रहमान के पास ही और रहती है ।"

"हो सकता है कल रात आप कुछ अधिक पी गये हों ।" नीना ने अपनी शंका व्यक्त की ।

नागपाल नीना की इस भोली टिप्पणी पर बहुत जोर से हो-हो करके हँसे और एक आँख छोटी करके नीना की तरफ देखते हुए बोले—'अच्छा अब मैं इतना जबरदस्त पियक्कड़ हो गया हूँ ?"

नीना ने इस बात को एक दूसरी शंका की ओर मोड़ दिया, "हो सकता है आप कल रात बोतल रखने के बाद ड्राअर का ताला ही लगाना भूल गये हों ।"

नागपाल ने बहुत विश्वासपूर्वक कहा—"ओह ! नो डार्लिंग, ऐसा कभी नहीं होता । मैं बोतल रखने के बाद हमेशा सावधानी से ताला बन्द कर देता हूँ ।'

नागपाल की नजर मेरे गिलास पर गई तो आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोले—"अरे यह क्या मलिक साहब, आपने अभी तक यह दो [illegible]भी

मालिक और नौकर के बीच पैदा होने वाली इस नाजुक स्थिति पर मैं कोई टीका-टिप्पणी भी तो नहीं कर सकता था।

नागपाल भरे हुए बैठे थे। वह सोच नहीं पा रहे थे कि मुझसे क्या बातें करें। बोतल में रखी शराब अभी भी काफ़ी थी। इसके अलावा उनके स्टाक में इस चीज़ की कमी होने का भी प्रश्न नहीं उठता था लेकिन नौकर ने चोरी से उनकी शराब पीकर उनका मूड खराब कर दिया था।

इसी समय सामने से नीना आती दिखलाई पड़ी। उसके चेहरे पर एक विचित्र-सी उदासी नज़र आ रही थी। लेकिन इससे वह और भी ज़्यादा मोहक लग रही थी।

नागपाल ने दो गिलासों में शराब ढाली और मुझसे पूछने लगे—"आप इसमें सोडा डालना पसन्द करेंगे या 'नीट' पीना पसन्द करेंगे ? मुझे तो व्हिस्की में आइस (बर्फ़) के अलावा और कुछ डालना पसन्द नहीं है। व्हिस्की में मिलावट करते वक्त मुझे यह लगता है जैसे मैं इस चीज़ के साथ गुनाह कर रहा हूँ।"

मैंने नागपाल की बात से सहमति ज़ाहिर की और कहने लगा—"पहला पैग तो मैं भी खालिस ही लेना पसन्द करता हूँ।" नागपाल ने ओ० के० कहकर मेरे हाथ में गिलास देकर अपना गिलास हवा में उठाकर कहा—"नीना के चार्म के लिए जिसने यह सपनों का महल सजाया है।"

मैंने भी अपना गिलास ऊपर हवा में उठाया और 'चियर्स फार हर चार्म' (उसकी सुन्दरता के लिए) कहकर व्हिस्की की एक तल्ख़ घूंट गले के नीचे उतार ली।

नीना हल्की नीली रोशनी में स्वप्न-सुन्दरी जैसी लग रही थी। उसकी ख़ूबसूरती में एक सलीक़ा नज़र आता था। पूरा व्यक्तित्व कुदरती सुन्दरता से मंडित था। बड़ी-बड़ी सपनों में डूबी आँखों को सघन पलकें ढँके हुए थीं और भौंहें लम्बी कमान जैसी खिंची हुई थीं। यही वह सुन्दरता थी जिसमें गर्व का आंशिक मेल अखरता नहीं है।

शायद मैं नीना की सुन्दरता के विषय में कुछ कहना ही चाहता था

कि नागपाल बेसब्री से बोले—"हाँ डार्लिंग, मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ। मुझे कुछ दिनों से ऐसा लग रहा है जैसे कोई आदमी मेरी कीमती शराब को चोरी से गटक जाता है।"

नागपाल ने बोतल की तरफ उँगली से संकेत करके कहा—"कल रात इस बोतल में महज दो पैग शराब निकाली थी मैंने और आज जरा इसकी हालत देखो। नीना क्या ख्याल है तुम्हारा—किसने पी होगी?"

नीना ने शराब की बोतल की तरफ़ सरसरी नजर से देखा गोया वह कोई बहुत मामूली चीज़ के बारे में व्यर्थ के आरोप सुन रही है। वह कंधे उचकाकर बोली—"डीयर, मैं यह कैसे बतला सकती हूँ। मैं कोई ज्योतिष तो जानती नहीं हूँ। घर के नौकरों की एक पूरी पलटन के होते हुए किसी का नाम लेना क्या ठीक होगा? मैंने अपनी आँखों से किसी को आपकी शराब पीते नहीं देखा।"

नागपाल कुछ क्षण एकदम चुप रहे शायद वह इस मामूली-सी बात को तूल देकर विवाद का विषय नहीं बनाना चाहते थे। वह बहुत धीमी और शान्त आवाज़ में बोले—"डार्लिंग, अलमारी की चाभी मेरे और तुम्हारे अलावा सिर्फ रहमान के पास ही और रहती है।"

"हो सकता है कल रात आप कुछ अधिक पी गये हों।" नीना ने अपनी शंका व्यक्त की।

नागपाल नीना की इस भोली टिप्पणी पर बहुत जोर से हो-हो करके हँसे और एक आँख छोटी करके नीना की तरफ़ देखते हुए बोले—"अच्छा अब मैं इतना जबरदस्त पियक्कड़ हो गया हूँ?"

नीना ने इस बात को एक दूसरी शंका की ओर मोड़ दिया, "हो सकता है आप कल रात बोतल रखने के बाद ड्रायर का ताला ही लगाना भूल गये हों।"

नागपाल ने बहुत विश्वासपूर्वक कहा—"ओह! नो डार्लिंग, ऐसा कभी नहीं होता। मैं बोतल रखने के बाद हमेशा सावधानी से ताला बन्द कर देता हूँ।"

नागपाल की नजर मेरे गिलास पर गई तो आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोले—"अरे यह क्या मलिक साहब, आपने अभी तक यह दो बूँदें भी

खत्म नहीं कीं ? इसे खत्म कीजिये मलिक साहब, आप तो लगता है बहुत धीमी रफ़्तार से चलते हैं। वैसे यह आदत बहुत अच्छी है लेकिन कभी-कभी वक्त दौड़ने लगता है तो शराब को उसकी रफ़्तार से क़दम मिलाने पड़ते हैं।"

मैंने सोफ़े पर उदास और ऊबी नीना को बैठे देखकर पूछा—"क्या आप इस चीज़ को छूती भी नहीं हैं ?"

वह मेरी नादानी पर हँस पड़ी। उसने सोफ़े की पुश्त पर उँगलियों से ठक-ठक की और मेरी आँखों में झाँकते हुए बोली—"छूने से क्या हो जाता है। दरअसल मुझे खाने से पहले काकटेल का एकाध पैग लेने की आदत है। मेरे पति वास्तव में मेरे 'वेल विशर' (शुभेच्छु) हैं—वह नहीं चाहते कि मैं शराब पिऊँ। यों यह भी ग़लत नहीं है कि इस मामले में सारे पति एक से ही ढंग से सोचते हैं।"

नागपाल को नीना की यह बात शायद आपत्तिजनक मालूम पड़ी और खासतौर से किसी बाहरी आदमी की उपस्थिति में। वह मुझे सही स्थिति बताने के लिए बेताब हो उठे—"यह बात नहीं है मिस्टर मलिक ! मैं शराब पीने पर पाबन्दी लगाने का हामी नहीं हूँ। हाँ, मैं ज़रूरत से ज़्यादा पीने पर जरूर एतराज करता हूँ। इसके अलावा मैं दुनिया के दूसरे समझदार लोगों की तरह यह भी मानता हूँ कि शराब औरतों को ज़िन्दादिल बनाने की बजाय खुरदरा और मूडी बना देती है।"

नागपाल ने अपनी बात को ज्यादा उचित और महत्त्वपूर्ण बनाने की कोशिश की—"इसके अतिरिक्त आप भी यह मानते होंगे कि औरतों का ज़िस्म इतना डेलिकेट (कोमल) होता है कि उनकी नब्ज़ पर शराब का प्रभाव बहुत भयानक असर करता है।"

इसके बाद नागपाल ने फ़िल्म-जगत की उन अभिनेत्रियों के क़िस्से सुनाने शुरू कर दिये जो कला की ऊँचाइयाँ लाँघ चुकी थीं लेकिन शराब की लत ने उन्हें हर तरह से चौपट करके रख दिया था।

जिन अभिनेत्रियों की कहानियाँ वह सुना रहे थे उन सबकी भीतरी ज़िन्दगियों से मैं बखूबी परिचित था लेकिन मैं उनकी बात काटना नहीं चाहता था। मेरी चुप्पी देखकर शायद उन्हें खयाल आ गया कि वह

मुझे स्वयं के किस्से सुना रहे हैं—मैं एक पुराना पत्रकार होने की वजह से इन चीज़ों के सभी ब्यौरों से परिचित था।

अपनी बात का रुख़ दूसरी तरफ़ मोड़ते हुए नागपाल बोले, "मिस्टर मलिक, जो शराब आपके सामने है यह चीज़ वाकई बहुत धाँसू है। खुले बाज़ार में तो यह मयस्सर नहीं है। ख़ैर, यह सब ज़िक्र तो बेकार है फ़िलहाल आप बेफ़िक्री से पीजिये—जितना चाहें पीजिये—मेरे पास दारू के स्टाक की कोई कमी नहीं है। मैं बड़ी मुश्किल से कभी ऐसा मौक़ा निकाल पाता हूँ कि आप जैसे किसी जीनियस के साथ जमकर बैठ सकूँ।"

मैंने दो पैग नीट पीने के बाद स्वयं को बदलते हुए पाया। मेरा पेट खाली होता है तो एक पैग शराब भी कम नहीं होती। मैंने स्वयं को जीवन्त अनुभव करते हुए कहा—"क्या कहने इस नायाब चीज़ के? इसने तो नसों में लावा ही दहका दिया है। मुझे यहाँ का सारा वातावरण शायरी से भरा लगने लगा है।"

नागपाल चुपचाप पीते रहे। शायद पीते समय उन्हें सोचने की आदत थी। उन्होंने बाज़ू की तिपाई पर रखा हुआ सिगार-केस खोला और एक सिगार जलाकर पीने लगे। मैंने भी शरीर में तरंग-सी अनुभव करके कहा—"क्या आप मुझे भी एक सिगार देने की मेहरबानी करेंगे। कभी-कभी सिगार पीने की मेरी भी ख़्वाहिश होती है।"

"मलिक साहब यह आपने क्या बात कही—एक ही क्यों आप आज रात सिगार ही नोश फ़रमाइये" और यह कहने के साथ उन्होंने सिगार-केस तिपाई से उठाकर मेरे सामने रख दिया। मैंने केस से एक सिगार निकालकर जला लिया और कुर्सी से पीठ टिकाकर आराम से कश खींचने लगा।

नागपाल अब काफ़ी सहज हो गए थे। उदारता से बोले—"जनाब मलिक साहब, यह नीना विला सिर्फ़ मेरे लिए नहीं है। कई मौके ऐसे भी आते हैं जब यहाँ काफ़ी चहल-पहल नज़र आती है। फ़िल्मों के संवाद वग़ैरह लिखने के लिए हमारे कई लेखक यहाँ महीनों तक रहकर अपना काम करते रहते हैं। सच पूछो तो 'होम वर्क' को पूरा करने के लिए

इससे ज्यादा मौक़े की और कोई जगह नहीं है। 'राइटर्स' का कहना है कि अमूमन जो काम कहीं और रहकर महीनों अटका रहता है वह 'नीना विला' में रहने पर हफ़्तों में पूरा हो जाता है। बम्बई की भीड़-भाड़ से अलग यह 'कोज़ी कार्नर' इस्टेट कुछ अपनी ही खूबसूरती रखती है। यहाँ आज़ादी से पहले एक स्विस व्यापारी रहता था और उसने इस जगह को हर तरह से अच्छा बनाने की कोशिश की थी।"

अपनी बात को बीच में तोड़कर वह अपनी पत्नी की ओर देखकर बोले—"डार्लिंग, आज रात मिस्टर मलिक यहीं ठहरेंगे।"

हालाँकि यह बात बहुत पहले स्पष्ट हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त अब रात इतनी बीत चुकी थी कि उस सुनसान जगह से वापस बम्बई जाने का सवाल ही नहीं उठता था। लेकिन उनकी इस सूचना पर नीना ने कोई आश्चर्य व्यक्त नहीं किया। वह सहजता प्रदर्शित करते हुए बोली—"गुड, वेरी गुड ! यह तो बहुत अच्छी बात है।"

पर अभी एक मिनट भी नहीं गुज़रा होगा कि नीना एक ऐसे स्वर में उतावली से बोली जैसे उसे कोई भूली हुई बात सहसा याद आ गई हो—"लेकिन रन्धावाज़ के यहाँ 'बोर्ड ग्राफ़ डाइरेक्टर्स' की जो मीटिंग होने वाली है उसका क्या हुआ ? क्या वह 'पोस्टपोन' हो गई ?"

यकायक नागपाल के दोनों हाथ कानों पर पहुँच गए—"ओफ़ ! यह तो गजब हो गया। मैं तो एकदम भूल ही गया था। सेक्रेटरी के साथ न रहने की वजह से यह घपला हुआ। मैंने उसे आज एक और काम सौंप दिया था लेकिन ख़ैरियत हुई कि तुमने ठीक वक्त से यह बात याद दिला दी।"

नागपाल मेरी ओर देखकर बोले—"मुझे बहुत दुख है मिस्टर मलिक ! अगर शाम ज़रा भी ख़याल आ जाता तो आपको मैं तकलीफ़ न देता। सुबह डायरी देखते वक्त मुझे याद था कि आज रात रन्धावा के यहाँ एक बहुत खास मीटिंग है लेकिन फिर याद नहीं रहा। लगता है अब मेरी याददाश्त कुछ कमज़ोर होती जा रही है। लोकेशन पर पहुँच-कर दरअसल मुझे दुनिया की किसी और बात का ख़याल ही नहीं रहता।"

मेरी समझ में नहीं आया कि अब मैं क्या कहूँ। मुझे यह भी पता नहीं था कि इतनी रात गये वह इस जरूरी मीटिंग के सिलसिले में क्या करने जा रहे हैं। मुझे लग रहा था कि शराब ने उन्हें कुछ ज्यादा ही बातूनी बना दिया था—वह बड़बड़ाते हुए कहने लगे—"सेक्रेटरी ने 'अप्वाइन्टमेन्ट बुक' में यह बात जरूर नोट कर दी होगी। मिस्टर मलिक आप बहुत व्यस्त पत्रकार हैं—आपका समय बर्बाद करने का मुझे सख्त अफसोस है—मैं खुद को क्रिमीनल (अपराधी) महसूस कर रहा हूँ। उन लोगों ने परसों रात 'फिक्स' कर लिया था कि क्या आज रात मेरे पास मीटिंग में शरीक होने का टाइम होगा। मेरे हाँ कहने पर ही उन्होंने यह बैठक रखी थी। अब मेरे न पहुँचने से सब को बड़ी तकलीफ होगी।"

नागपाल के स्वर में चिन्ता और अफसोस का मिला-जुला भाव आ गया—"एक बहुत बुजुर्ग डायरेक्टर जो मीटिंग में अब जाते ही नहीं हैं सिर्फ मेरी वजह से सम्मिलित होने आ रहे हैं और एक आफत यह भी है कि इस सभा को 'प्रीसाइड' भी मुझी को करना है। मेरे न पहुँचने से सब लोग बहुत डिस्टर्ब और अपमानित महसूस करेंगे।" नागपाल ने मुझसे सीधा सवाल किया—"क्या किया जाय मिस्टर मलिक, आपकी इस मामले में क्या राय है ? आप हमारे रेस्पेक्टेड गेस्ट (सम्मानित अतिथि) हैं—आपकी राय की मैं बहुत परवाह करूँगा—खासतौर से इस सिचुएशन में।"

नागपाल खामोशी से कुछ सोचते रहे। मुझे सूझ नहीं पड़ा कि ऐसी परिस्थिति में उन्हें क्या निर्णय लेने के लिए कहूँ। मेरी समस्या का हल नीना नागपाल ने प्रस्तुत कर दिया—"क्या हो सकता है आप खुद ही बतलाइये।"

नागपाल बोले—"क्या किया जा सकता है ? आज रात हमारे घर में इतने खास मेहमान मौजूद हैं—इन्हें छोड़कर कैसे जाया जा सकता है ? घर से अगर मेजबान ही गायब हो जाय तो मेहमान क्या सोचेगा ?"

जब मैंने देखा कि नागपाल पूरी तरह अपसेट हो गए हैं और—उन्हें

कोई ठीक रास्ता नहीं सूझ रहा है तो मैंने उनकी परेशानी कम करने की गरज़ से प्रस्ताव रखा—"कोई ऐसी ख़ास बात नहीं है नागपाल साहब, यह तो बहुत मामूली-सी बात है। व्यस्त लोगों की ज़िन्दगी में तो यह हर पल होता रहता है। मैं फिर कभी भी आ सकता हूँ। आपकी व्यस्तता कौन नहीं जानता ? मेरी तरफ़ से आप ज़रा भी परेशान न हों—सभा की आराम से अध्यक्षता करें। लेकिन क्या इतनी रात गए आपका घर छोड़ना मुनासिब होगा ?"

लेकिन नागपाल मेरी बात से सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्हें लगा कि मैं संकोच के कारण ही ऐसा प्रस्ताव रख रहा हूँ। शायद उन्हें यह भी लगा कि मुझे छोड़कर चले जाना एक असभ्यता की बात होगी—मैं अपमानित अनुभव करूँगा। उन्होंने अपनी पत्नी से फिर सलाह ली—"नीना क्या वे लोग मेरे न पहुँचने से बहुत दुखी हो जायेंगे ?"

मैं जब से नीना विला में आया था मैंने नागपाल के सम्बोधन में हर बार 'नीना डार्लिंग' का ही सम्बोधन सुना था लेकिन अब पहली बार नागपाल अपनी पत्नी को सिर्फ़ नीना कह रहे थे। इसी एक बात के आधार पर मैं नागपाल की बिगड़ी हुई मानसिक स्थिति का संकेत पा गया था।

नीना ने सोचने में एक क्षण का भी समय नहीं लगाया। वह तत्काल फ़ैसला-सा देते हुए बोली—"आज की मीटिंग में अगर आप नहीं पहुँचे तो मेरा निश्चित मत है कि वहाँ लोग न केवल निराशा होंगे बल्कि आपके रवैये से उन्हें नाराज़गी भी होगी।"

लेकिन ताज्जुब है उन्होंने सुबह से एक फ़ोन तक नहीं किया।" हैरत व्यक्त करते हुए नागपाल ने नीना से कहा।

"आइ एम सारी ! मैं आपको यह तो बतलाना ही भूल गई कि हमारा फ़ोन कई घन्टे से ख़राब है—चार बजे जो बारिश हुई थी उसके बाद से फ़ोन काम नहीं कर रहा—लगता है कहीं कोई तार-वार टूटे हैं।"

नागपाल ने अपना सिर दोनों हाथों में थामकर कहा—"यह एक और भी ज़बरदस्त हैन्डीकेप हो गया।" फिर वह नीना से बोले—"हाँ, एक-दो खम्भे तो शाम ही टूटे हैं—जब हम लोग आ रहे थे तो रास्ते

पर पहाड़ से चट्टान खिसक गई थी—लगता है उससे खम्भे टूटे होंगे और वायरिंग गड़बड़ हो गई होगी। अब यह तो कल तक का क़िस्सा हो गया—फ़ोन तो शायद कल दोपहर तक काम नहीं कर पायेगा। यह तो बड़ी भारी मुसीबत हो गयी।"

नीना ने नागपाल से कहा—"आपके न पहुँचने से कोहली साहब बहुत दुखी होंगे। बेचारे बूढ़े आदमी हैं—फिर उनकी सेहत भी ठीक नहीं है। वह तो सिर्फ़ आपकी वजह से आये होंगे। आपके न पहुँचने से उन्हें चिन्ता भी हो रही होगी कि कहीं आप रास्ते की गड़बड़ में तो नहीं फँस गये। आपने वायदा किया था तो बजाय इधर लौटने के उधर ही निकल जाते—चाहे रात को 'लेट ह्रावर्स' में इधर लौट आते।"

नागपाल सोफ़ा छोड़कर उठ खड़े हुए और सिगार पीते हुए कमरे में कुछ सोचते हुए घूमने लगे। फिर उन्होंने अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा, "डार्लिंग, तुम तो घर में हो ही। मिस्टर मलिक की अच्छे ढंग से ख़ातिर करने में मैं समझता हूँ कोई कोताही नहीं होगी और एक बात यह भी है कि मिस्टर मलिक जिस पर्पज़ (उद्देश्य) से यहाँ आये हैं वह तुमसे खुलकर बातें किये बिना पूरा भी नहीं होगा।"

नागपाल ने टहलना बन्द कर दिया और वह मेज़ की तरफ लौट आये। उन्होंने मेरा और अपना खाली गिलास उठाकर उसमें एक-एक पैग स्कॉच डाली और बर्फ़ की डलियाँ चम्मच से भर-भरकर गिलासों में डालने लगे। उन्होंने गिलास से एक घूँट लेकर नीना से कहा—"हमारी बहू की ज़िन्दगी के अलावा [illegible] के भीतर की क्या लाइफ़ है यह देखने-जानने में मिस्टर मलिक की गहरी दिलचस्पी है और यह तुमसे ज़्यादा बेहतर जानने का कोई रास्ता नहीं है। मैं अब यहाँ से [illegible] की तैयारी करता हूँ। [illegible] नहीं हुआ है। [illegible] डिपार्टमेंट का [illegible] है? मैं चाहे [illegible] लौटूँ, [illegible]।"

नीना से बेतक़ल्लुफ़ी से बातें करें। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मे
गैरहाज़िरी को ज़्यादा महसूस नहीं करेंगे। अगर आपकी नज़र से कु
ऐसे मुद्दे हैं जिन पर मेरी हाज़िरी में ही कुछ बातें हो सकती हैं
उन्हें हम लोग कल यहाँ से लौटते हुए रास्ते में ले लेंगे।"

नागपाल ने अपनी बात समाप्त करके मुझे आश्वस्त करने के लि
मेरी राय जाननी चाही—"ठीक है न ? आपका क्या खयाल है इस ब
में ?"

अब तक मैं यह तो अच्छी तरह समझ ही गया था कि नागपा
घर से जल्दी ही बाहर जाने वाले हैं इसलिए उनसे सहमत होने
अलावा अन्य विकल्प मेरे सामने रह भी नहीं गया था। मैंने खुशी
अपनी राय व्यक्त की—"आप बहुत इत्मीनान से मीटिंग में जायें। य
मुझे कोई दिक्क़त पेश आने वाली नहीं है। नीना जी के घर में रह
कोई कष्ट मुझे हो भी कैसे सकता है ?" फिर मैंने उन्हें आश्वस्त कर
की गरज़ से कहा—"मैं समझता हूँ जब आपका जाना तय हो ही चु
है तो आप ज़्यादा वक्त यहाँ न लगायें—रात बराबर बढ़ रही है।"

नागपाल ने कहा—"आप मेरे बहुत अच्छे मेहमान साबित हुए
मैं आपका तहेदिल से शुक्रगुज़ार हूँ।"

नीना ने मेरी तरफ़ देखकर चेहरे पर संकोच का भाव लाकर कह
—"लेकिन मलिक साहब, मैं एक बात पहले ही बतला देना ज़रूरी सम
झती हूँ। मैं कोई जिन्दादिल कम्पनी शायद आपको नहीं दे पाऊँगी,
मैं नागपाल साहब का अच्छा सब्सीट्यूट (विकल्प) तो किसी भी हाल
में नहीं हो सकती।"

मैंने उसके तकल्लुफ़ को हँसी में काटने की कोशिश की—"आ
इस चीज़ को लेकर क़तई परेशान न हों। इस दुनिया में कोई भी किस
का विकल्प नहीं हो सकता—सबकी पर्सनेल्टी (व्यक्तित्व) अपनी जग
पर एकदम अपनी और निराली होती है।"

"नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है—मैं एकदम बकवास हूँ। बातचीत
तो मुझसे ज्यादा बोर आपको कहीं नहीं मिलेगी। अच्छा एक तरीक़ा ह
सकता है। प्लीज़ अगर आप मुझसे ऊब जायें तो लिहाज़ न कीजियेगा

आप अगर यह बात बतला देंगे कि आप बोर हो रहे हैं तो मैं आपका पीछा छोड दूंगी।"

मैंने नीना की विनम्रता पर एक जोरदार ठहाका लगाकर कहा—"आप बहुत ज्यादा अतिशयोक्ति से काम ले रही हैं अपने बारे में। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि इस पूरी दुनिया में एक ही बोर करने वाली कौम है।"

चेहरे पर जिज्ञासा का भाव लाकर नीना बोली—"वह कौन-सी कौम है मलिक साहब ?"

मैंने कहा—"एक पत्रकार कौम ही ऐसी है जिससे सब घबराते हैं। यह बहुत ही चिपकू किस्म की बोर करने वाली चीज़ है और संयोग से वह इस समय आपके घर में मौजूद है।"

नीना मेरी इस बात पर हँसते हुए बोली—"जो भी हो ! मैं कम-से-कम आपके बारे में तो आपकी राय से क़तई सहमत नहीं हूं।"

नागपाल ने मुझे और नीना को अनौपचारिक रूप से बातों में लगे देखकर चैन की सांस ली और बोले—"अब मैं अपने मन में बहुत राहत महसूस कर रहा हूं···" और यह कहने के साथ ही उन्होंने मेरा गिलास अपनी तरफ खींचकर उसमें एक पैग व्हिस्की और डाल दी।

मैंने उनकी बात रखने के खातिर ही विरोध नहीं किया वर्ना अब मुझे आगे एक बूंद की भी जरूरत नहीं थी।

मैं और नीना बातें करने लगे तो नागपाल अपनी सारी शराब एक-दो घूंट में ही गटककर कुर्सी से उठ गये और दूसरे कमरे की तरफ चले गये। शायद उन्हें उन कागजों को करीने से रखना था जिनकी आज रात की मीटिंग में आवश्यकता हो सकती थी।

जब नागपाल को गये हुए कई मिनट बीत गये तो नीना ने मुझसे बहुत सादगी से पूछा—"मेरे पति इस व्हिस्की की बहुत प्रशंसा कर रहे थे, क्या वाकई यह बहुत बढ़िया चीज़ है ?"

मैं अच्छा-खासा सरूर महसूस करने लगा था—मस्ती से बोला—"इसमें क्या शक है। मिस्टर नागपाल बहुत बेहतर क़िस्म की व्हिस्की पीते हैं। मेरा खयाल है आप यों ही महज आनन्द के लिए इसको कुछ

घूँटें भर कर देखें—आप निश्चय ही मेरी राय से सहमत हो जायेंगी।"

मेरे इस प्रस्ताव से नीना की खूबसूरत और तरल आँखों में एक खास तरह की चमक दिखलाई पड़ी लेकिन उसने संकोच व्यक्त किया—"शायद मुझे इसकी कल्पना ही कर लेना काफ़ी है।"

'कल्पना तो ठीक है—लेकिन व्हिस्की के मामले में यह कल्पना काफ़ी बोदी साबित होने वाली चीज़ है। आप चाहें पियें नहीं लेकिन इसे 'फार फ़न सेक' लेकर ज़रूर देखें।"

"हाँ शायरों और पोइट्स ने तो इसकी बेहद तारीफ़ की है।" फिर उसने अपनी आन्तरिक इच्छा को दबाते हुए मुझसे कहा—"मैं आपके आग्रह को टाल तो नहीं सकती लेकिन इसने अगर मुझे नुक़सान पहुँचाया तो मैं इसका सारा दोष आपके सिर मढ़ दूँगी।"

यकायक मैं उसके शब्दों के प्रति सावधान हो गया। मुझे भय हुआ कि कहीं मेरे कहने से उसने पी ली और अपनी तबियत ख़राब कर ली तो यह बहुत भद्दी बात हो जायेगी।

मैं जितना ही उसके सन्देह के प्रति गम्भीर था वह उतनी ही निश्चिन्त नज़र आती थी। उसने अपनी तबियत खराब हो जाने का सन्देह जरूर प्रकट किया था लेकिन उसके चेहरे पर शोख मुस्कराहट उभर रही थी। मुझे चुप देखकर वह बोली—"चलिये छोड़िये! आप बेकार परेशान न हों—मैं आपका साथ देने की गरज़ से एकाध घूंट पिये लेती हूँ। जैसा कि आपने कहा था कि यह शराब बेहतर क़िस्म की है तो मैंने सोचा कि इसके ज़ायके से मैं ही क्यों वंचित रहूँ।"

नीना का शराब पी लेने से तबियत खराब हो जाने का भय मुझे निराधार लगने लगा और मैंने सहज रूप से कह दिया—"हाँ-हाँ, आप थोड़ी सी ले लें तो कोई हानि होने वाली नहीं है। यह सिर पकड़ने वाली 'डल' चीज एकदम नहीं है।"

लेकिन मुझे यह देखकर हैरत हुई कि उसने एक खाली गिलास को ऊपर तक भर लिया और किसी भी तरह का संकोच दिखाये बग़ैर गटागट पानी की तरह गले में धकेल गई। इस तरह तो बहुत प्यासा आदमी पानी भी नहीं पीता।

मैं उसे यों पीते देखकर भीतर तक सिहर उठा लेकिन उसने शराब का खाली गिलास खट से मेज पर रख दिया और मनखनाहट भरी हँसी बिखेरती बोली—"लीजिये आपके हठ से मैंने भी पीकर देख ली। दर-असल किसी चीज़ की जब मेरे सामने बहुत तारीफ की जाती है तो मैं अपना लालच रोक नहीं पाती। खुद ही पता लगा लेना चाहती हूँ कि आखिर इसमें सच्चाई क्या है ?"

खालिस शराब का एक गिलास पी जाने के बाद वह अधिक सहज और घनिष्ठ नजर आने लगी और व्हिस्की के प्रति आश्वस्त भाव व्यक्त करते हुए बोली, "वाकई मैं आपकी राय से सहमत हूँ—व्हिस्की इज नाइस—यह बढ़िया शराब है।"

इसके बाद नीना ने खिलवाड़-सा करते हुए बोतल की बची हुई शराब को अपने और मेरे गिलास में उँडेल लिया। मैंने साफ-साफ देखा कि उसने मेरे गिलास में अपने गिलास की अपेक्षा कहीं कम डाली लेकिन मेरा गिलास पहले से ही भरा हुआ था इसलिए उसकी चाल सफल रही। मैं अवाक् होकर उसका यह आचरण देखता रह गया। मुझे डर लगने लगा कि कहीं इस तरह खालिस पीने से वह बेहोश होकर न गिर पड़े।

अपने जीवन में मैंने सैकड़ों महिलाओं को दारू पीते हुए देखा है—उनमें से कुछ अधिक भी पी जाती होंगी लेकिन उस रात से पहले मैंने किसी औरत को शराब को पानी की तरह गटकते नहीं देखा था। शराब गले में जाती है तो एक तल्खी किसी-न-किसी रूप में चेहरे पर उभर उठती है लेकिन मैंने नीना के चेहरे पर इस कड़वी चीज़ की कोई प्रतिक्रिया नहीं देखी।

अभी मैं कहने के लिए शब्द तलाश कर रहा था कि उसे इस तरह से पीने को मना कर दूँ कि उसने मेज का बटन दबाकर नौकर को तलब कर लिया। नौकर के उपस्थित होने पर उसने 'ट्रे' पर खाली बोतल रखी और वापस भेज दी। इसके बाद मुझसे बेबाक शब्दों में बोली—"जनाब मेहरबानी करके अपना गिलास उठाइये और बाहर तशरीफ ले चलिए।"

मैंने अपना गिलास उठाया और कुर्सी छोड़कर उठकर खड़ा हो गया। नीना भी फुर्ती से कुर्सी छोड़कर उठी और गिलास हाथ में थामकर

दरवाज़े की तरफ़ चल दी।

नीना और मैं ज़ीना चढ़कर ऊपर टेरेस पर पहुँच गये। रेलिंग के करीब कुर्सियाँ खींचते हुए नीना बोली—"देख रहे हैं मलिक साहब ! चारों तरफ़ कितना जबरदस्त सन्नाटा है।"

मैंने उसकी बात की ताईद की—"बेशक़, इतनी गहरी शान्ति कम देखने में आती है। महानगरों में रहने वाले लोग तो ऐसी शान्ति की कल्पना भी नहीं कर सकते। कुदरत का एक रूप यह भी है जो आदमी के दिल की गहराई को प्रकट करता है।"

नीना ने हवा में अपना पंजा घुमाकर मेरी बात का प्रतिवाद किया—"नहीं-नहीं, यह शान्ति नहीं है मलिक साहब, यह चुप्पी है—एक बहुत भयानक चुप्पी।" उसे मेरे शान्ति शब्द के इस्तेमाल पर इतनी जबरदस्त आपत्ति हो सकती है मैंने सोचा भी नहीं था।

उसकी आपत्ति के सम्बन्ध में मैंने गम्भीरता से समझने की कोशिश की लेकिन मैं कुछ ठीक से नहीं जान पाया। हाँ, इतनी बात तो मेरी समझ में तत्काल आ गई कि वातावरण की नीरवता उसे झकझोरती तथा उत्तेजित कर जाती है। शायद इसका कारण यह हो कि चारों तरफ़ का एकाकीपन उसे डराता हो।

मैंने उसे हाथ में गिलास थामे देखकर समझ लिया कि वह इस समय मनोमन्थन से गुज़र रही है। जो औरत एक ज़माने में चारों तरफ़ से भीड़-भाड़ और अपने प्रशंसकों से घिरी रही हो तथा जिसके बारे में बरसों तक सच्ची-झूठी अफ़वाहें अख़बारों में छपती रही हों वह इस ख़ामोशी-भरे वातावरण में कैसे ख़ुश रह सकती है ? हो सकता है उसे यह अहसास मारता हो कि उसे सारी दुनिया भूल चुकी है और अब शायद लोग यह तक जानने की परवाह नहीं करते कि वह जीवित है या मर चुकी है।

मैं उसके सम्बन्ध में कई तरह से सोच रहा था कि उसी समय नागपाल हमें खोजते-खोजते आ निकले और ख़ुशी जाहिर करते हुए बोले—"वैरी नाइस ! वैरी नाइस ! आपने तो बहुत रोमांटिक स्थल ढूंढ़ निकाला। यहाँ से आप देखेंगे कि 'कोजी कार्नर, इस्टेट कितना ख़ूबसूरत

ग्रौर भरा-पूरा नजर ग्राता है। नीना तो इस जगह को जान से भी ज्यादा चाहती है। पूरे नीना विला में जब यह कहीं न हो तो समझना चाहिए कि यह टैरेस पर बैठी कुछ सोच रही है। कभी-कभी मैं हसरत से सोचता हूँ कि घंटों ग्रंधेरे में बैठे रहकर ग्रास-पास के माहौल की खामोशी को चुपचाप पीने का मौका हमें कब हासिल होगा? मुझे न सही नीना को तो यह मौका भरपूर मिल ही जाता है।" ग्रपनी बात का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए वह चरम प्रसन्नता व्यक्त करने लगे। "दिस कार्नर इज रियेली ड्रीमलैन्ड—यह कोना सपनों का देश है मलिक साहब!"

मैंने नागपाल को उच्छ्वसित देखकर झूठ बोला—"जी हाँ यह ग्रापने सही कहा! नीना जी भी ग्रभी मुझसे यही बात कह रही थीं।"

"दरग्रसल नीना बहुत जजबाती है।" यह कहकर नागपाल ने नीना के गम्भीर चेहरे पर एक दृष्टि डाली ग्रौर टेरेस पर घूमने लगे। दो-तीन मिनट चक्कर काटने के बाद सहसा थमक कर नीना के सामने खड़े हो गये ग्रौर बोले—"नीना मुझे डर है कि मैं उधर पहुँचने में बहुत लेट न हो जाऊँ। ग्रगर हम इस समय डिनर ले लें तो कैसा रहे?"

नीना ने शायद नागपाल की बात सुनी ही नहीं। वह मेरी तरफ ग्राते हुए बोलें—"मिस्टर मलिक, मैंने सोचा था कि रात को ग्रापके साथ देर तक जम कर बैठेंगे ग्रौर बहुत बातें होंगी लेकिन दुनियादारी यहाँ भी सामने ग्राकर सवालिया ढंग से खड़ी हो गई। कभी-कभी यह लगातार चलने वाली व्यस्तता मुझे झुंझलाहट में धकेल जाती है पर किया क्या जा सकता है। वी ग्रार टू मच विद दा वर्ल्ड—हम दुनिया के साथ बहुत ज्यादा चस्पाँ हैं।"

हालाँकि नीना का चेहरा हमारी तरफ नहीं था लेकिन उसने नागपाल की कही हुई सभी बातें शायद सुन ली थी क्योंकि वह कुर्सी से उठते हुए बोली—"ठीक है मैं भी कपड़े बदल कर ग्राती हूँ।"

मैंने ग्राश्चर्य व्यक्त किया—"ग्राप कपड़े बदलेंगी? लेकिन क्यों? ग्राप तो इस ड्रेस में काफी स्मार्ट लग रही हैं।"

नीना हँसने लगी—"मैं फारमैलटीज की वजह से कपड़े बदलने नहीं जा रही हूँ। दरग्रसल मैं डिनर के वक्त इन कपड़ों में नहीं रह सकती।"

नीना हम दोनों को वहीं टेरेस पर छोड़कर जीने पर खट-खट करती हुई नीचे चली गई। नागपाल तीन-चार मिनट तक वहीं खड़े मुझसे आस-पास के माहौल के बारे में बातें करते रहे।

छ:

डिनर के समय नीना सुनहरी लम्बे वाले गाऊन में बहुत आकर्षक दिखलाई पड़ रही थी। थोड़ी-सी देर में पर्याप्त मात्रा में शराब पी लेने की वजह से न केवल उसकी आँखों में गुलाबी डोरे उभर आये थे बल्कि सारा चेहरा रक्ताभ हो गया था। वह बहुत सलीके से मेकअप किए हुए थी। अब तक मैंने उसकी सुन्दरता में उत्तेजना पर अंकुश लगाने वाला ठंडापन देखा था लेकिन इस समय वह अत्यन्त उत्तेजना जगाने वाली मालूम पड़ रही थी।

थोड़ी देर बाद तो स्थिति यह होने लगी कि जब नागपाल उसे सम्बोधित करके कुछ कहते थे तो वह उनकी बात ही नहीं सुन पाती थी और बाद में सहसा ध्यान आ जाने पर पूछती थी, "डियर, क्या आप मुझसे कुछ कह रहे थे ?"

खाना बहुत स्वादिष्ट बना था और सारी टेबिल खाद्य पदार्थों से भरी हुई थी, लेकिन नीना बहुत धीरे-धीरे खा रही थी और मुझे लग रहा था कि वह केवल नाम मात्र को साथ देने की गरज से खाने पर बैठी हुई थी।

मेरी इच्छा हुई कि नीना से कहूँ कि वह कुछ खा क्यों नहीं रही है लेकिन मैं अपनी इस इच्छा को जबरदस्ती दबा गया कि कहीं वह उसे सुन भी न पाये और कुछ देर बाद पूछे—"मिस्टर जर्नलिस्ट, क्या आप मुझसे कुछ कह रहे थे ?"

एक नशे में धुत्त औरत को छेड़ना बहुत खतरनाक भी हो सकता था और खासतौर से यह जान लेने के बाद कि वह इस माहौल में बख्त मूड़ी हो गई थी। नागपाल सारे दिन काम में लगे रहे थे और

होंने पूरे दिन कुछ खास खाया भी नहीं था इसीलिए सम्भवतः वह
ुत मन से खा रहे थे। नागपाल मुझसे भी बराबर और खाना लेने
। आग्रह कर रहे थे और चोरी-छिपे अपनी कलाई-घड़ी भी देखते जाते
।

खाना समाप्त करने के बाद नागपाल उठते हुए बोले—"मुझे आप
दिल से माफ़ कर दें। आप लोग इत्मीनान से खाना खाते रहें। अब मैं
ापसे इजाज़त चाहूँगा। अगर मैं यहाँ से स्टार्ट करने में अब और लेट
हो गया तो फिर आज रात को वापस लौट आने की सम्भावना एकदम
समाप्त हो जाएगी।"

नागपाल से मैंने कहा कि वह कोई भी तक़ल्लुफ़ न दिखलायें और
तत्काल चले जायें। रात का मामला है, देर करने से रास्ते में कोई अड़-
चन खड़ी हो सकती है।

नागपाल 'आल राइट' कहकर हॉल से बाहर चले गये और दो
मिनट बाद ह्विस्की की एक सीलबन्द बोतल लेकर लौट आये। बोतल
को सावधानीपूर्वक मेज़ पर रखते हुए बोले—"मैं एक पूरी बोतल आप
की नज़र करता हूँ। अब आप जब तक चाहें बैठकर तसल्ली से बातचीत
करें।"

कमरे से बाहर जाते समय नागपाल एक क्षण के लिए ठहर गये;
शायद वह नीना को कुछ ताक़ीद करना चाहते थे लेकिन उसका आरक्त
और नशे में गड़गच्च स्वरूप देखकर चुप लगा गये। वह किसी विशेष
को सम्बोधित किये बिना बोले—"पीना हमेशा कम्पनी के लिए होना
चाहिए—बग़ैर मतलब पीना और अकेले पीना बहुत खतरनाक है।"

नीना ने अंगारे जैसी दहकती अपनी आँखें नागपाल की ओर उठाईं
और किंचित् रुक-रुक कर बोली—"अकेले पीना बुरा है—बहुत-बहुत
खतरनाक है। यस यस इट इज़ परफैक्टली करेक्ट", लेकिन वह अपनी
बात पूरी करने से पहले ही गड़बड़ा गई "लेकिन डियर क्या बुरा है—क्या
खतरनाक है?"

नागपाल ने अपनी आँखें नीना के चेहरे पर नहीं डालीं और वह
बहुत सहजता प्रदर्शित करते हुए बोले—"मैं कह रहा था शराब अकेले

ही पीते चले जाना बहुत 'डेंजरस' है नीना डार्लिंग।"

नीना ने अपनी उँगलियों से मेज़ ठकठकाई और सिर को इधर-उधर हिलाते-डुलाते हुए बोली—"ठीक कहते हैं आप जनाब ! एकदम बुरा है, खतरनाक है—होपलेस है लेकिन अब हम अकेले कहाँ हैं ? मैं हूँ—आप हैं—मलिक साहब अखबार के इतने बड़े नामी 'जर्नलिस्ट' हैं। यह क्या कोई मामूली कम्पनी है। आम ड्रिंकिंग फार ए नाइस कम्पनी (मैं बहुत अच्छे लोगों का साथ देने के लिए पी रही हूँ।")

नागपाल ने नीना की बहक को कोई खास महत्त्व नहीं दिया। वह मुझसे हाथ मिलाते हुए बोले—"आई विश यू ए हैप्पी टाइम।"

नागपाल ने चलते-चलते एक बार नीना के चेहरे पर उड़ती-सी नज़र डाली और चले गए। जाते समय उन्होंने नीना से एक शब्द भी नहीं कहा। मेरा खयाल था कि वह घर से आश्वस्त होकर नहीं जा पा रहे थे। वह बहुत सहज होने की चेष्टा कर रहे थे लेकिन उनके मस्तक पर कई गम्भीर रेखाएँ उभर आई थीं।

मैं समझता हूँ उन्हें यह अहसास ज्यादा खा रहा था कि अखबार का आदमी उनके घर में बैठा है और घर की सारी दबी-ढकी स्थितियों को अपनी आँखों से देख रहा है। यह एक बहुत नाजुक घड़ी थी। अगर घर से बाहर जाना अपरिहार्य न होता तो वह जाने का नाम भी न लेते। इस समय उन्हें अपनी पत्नी के विवेक पर ज्यादा भरोसा नहीं लग रहा था। मुझे वह अपने साथ ले जाने का प्रस्ताव रख सकते थे लेकिन उसकी भी अब बहुत देर हो चुकी थी। यदि वह ऐसा करना चाहते थे तो पहले ही थोड़ी-सी भूमिका बना सकते थे पर उन्होंने तो पहले ही नीना से कह दिया था कि मलिक साहब आज रात यहीं ठहरेंगे।

जो हो अब मुझे अपने घर पर छोड़ने के अलावा उनके पास कोई रास्ता नहीं बचा था। मैं लाख पत्रकार सही लेकिन यदि मुझे पहले से ज़रा भी आभास मिल जाता कि नागपाल को मेरी वजह से कोई दिमागी उलझन हो सकती है तो मैं आज रात भूल कर भी इधर न आता। यह सही है कि स्त्री-पुरुष के बीच के रिश्तों को लेकर अखबा[illegible]ग चट-

खारे भरी खबरें इकट्ठा करने के लिए हर पल बेचैन रहते हैं—स्कैंडल्स के पीछे पागलों की तरह दौड़ लगाते हैं लेकिन हर पेशे का एक नाजुक पक्ष भी होता है—उसे किसी भी हालत में नज़रन्दाज़ नहीं किया जा सकता ।

मैं नागपाल की मनःस्थिति पूरी तरह समझ गया था और उन्हें विश्वास दिलाना चाहता था कि मैं इस रात के वाक़यात का कहीं भूल कर भी उल्लेख नहीं करूँगा लेकिन यह बात शब्दों में व्यक्त की जाने वाली नहीं थी ।

मैंने चाहा कि मैं उठकर बाहर तक जाऊँ और नागपाल से कुछ न सही तो अपनी तरफ़ से ही कहूँ कि अगर आप उचित समझें तो मुझे भी साथ लेते चलें । रात का मामला है—एक से दो भले रहेंगे और मुझे यह बात उपयुक्त लगी भी लेकिन तभी कार स्टार्ट होने की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी । मैं मन मारकर कुर्सी पर बैठ गया और नीना की गहरी लाली में डूबी आँखें देखकर सोचने लगा कि अब उसके सामने यह प्रस्ताव रखूँ कि वह जाकर सो जाए—मैं सुबह उठ कर बातें करना ज़्यादा ठीक समझूँगा ।

सात

मैंने देखा कि नागपाल की कार स्टार्ट होने की आवाज़ से नीना भी चौंककर सजग हो गई। मैंने नीना से कहा—"मिस्टर नागपाल को आज बहुत परेशान होना पड़ा। अब भी रात-भर भाग दौड़ करते बीतेगी। बड़े आदमियों को भी यह विचित्र अभिशाप है कि एक पल के लिए आराम नहीं कर सकते।"

नीना ने मेरी हमदर्दी को दृष्टि में रखते हुए कहा—"आप जानते हैं बड़े आदमियों को यह अभिशाप क्यों ढोना पड़ता है?"

मैंने नकार में सिर हिला दिया तो वह बोली—"इन बड़े आदमियों को इतनी ऊँचाई तक पहुँचाने में बहुत लोगों का हाथ होता है। आप जानते हैं कि नींव में रखी हुई ईंट का महत्त्व कम नहीं होता लेकिन उसके ऊपर खड़ी हुई आलीशान इमारत को भी तो यह सोचना चाहिए कि जो मेरे पैरों में पड़ा है वह उपेक्षणीय नहीं है—उसकी भी क़द्र होनी चाहिए।"

"लेकिन उन्हें इतनी फ़ुर्सत ही कहाँ होती है जो वह नींव में बिछी ईंट के बारे में सोच सकें।" मैंने कहा।

"तब तो वह कर्म (अभिशाप) झेलना ही पड़ेगा। हर चीज़ कभी-न-कभी अपनी कीमत तो वसूल कर ही लेती है। आप इस दुनिया में जो कुछ भी प्राप्त करते हैं उसकी एक कीमत तो चुकानी ही पड़ती है।"

मैंने इस सैद्धान्तिक बहस से निकलने की कोशिश की—"पता नहीं रास्ते में कितनी देर लग जाये—नागपाल साहब के साथ कोई एक और आदमी होता तो अच्छा था।"

"हाँ यह तो होना ही चाहिये था। यह पहला मौका है जब

अकेले गये हैं वर्ना सेक्रेटरी तो उनके साथ जरूर ही होता है। लेकिन घबराने की कोई बात नहीं है । व्यस्त लोगों की यह मीटिंगें रात को अक्सर देर से ही शुरू होती हैं। आप तो पत्रकार हैं जानते और देखते हैं कि जाम के दौर में ही बड़े-बड़े सौदे पटते हैं।"

"पर ऐसा क्यों होता है ?" मैंने अनजान आदमी की तरह नीना से पूछा।

"सब कुछ आप जानते तो हैं मिस्टर मलिक, लेकिन अगर फिर भी पूछना चाहते हैं तो मैं कहूँगी कि यह लोग दिन के वक्त एक दूसरी ही तरह की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं जिससे कभी-कभी इनके सन्त-संन्यासी होने की ग़लत-फ़हमी होने लगती है। लेकिन जब आधी रात इनकी चांडाल चौकड़ी जमती है तो आप दिन वाले आदमी के साथ रात वाले उसी आदमी को किसी भी तरह एक नहीं कह सकते ।"

"इतना फ़र्क आदमी में कैसे हो जाता है मुझे यह बात कम आश्चर्य-जनक नहीं लगती।" मैंने नीना से अपनी जिज्ञासा का समाधान माँगा।

"अरे इस बारे में कुछ न पूछिये । इस नीना विला में भी ऐसी हंगामा-खेज़ पार्टियाँ हुआ करती थीं लेकिन मैं झूठी चापलूसी और फालतू भाग-दौड़ से इस क़दर थक जाया करती थी कि सारा बदन टूटने लगता था। मेरी बेदिली और नर्वसनैस का खयाल करके ही मिस्टर नागपाल ने इन पार्टियों को ऐसे बंगलों में अरेंज करना चालू कर दिया जो इसी मतलब के लिए खरीद कर रखे गये हैं। वहाँ 'काकटेल पार्टीज़' में 'सोसायटी यूमेन' (कॉल गर्ल्स) को भी लाने में परेशानी नहीं होती है।"

मैं स्वयं भी ऐसी कई पार्टियों में शरीक होता रहता हूँ। वहाँ लोगों को मैंने देखा है कि अपनी पत्नियों को लेकर नहीं आते। सब लोग शिकारी मनोवृत्ति के हो जाते हैं। अपने घरों में और काम में शराफ़त का जो नक़ाब पहने रहते हैं उसे ऐसी पार्टियों में आते ही उतार कर एक तरफ़ फेंक देते हैं।

नीना ने मेरा ध्यान संकेत करके टेबिल पर रखी बोतल पर केन्द्रित करने की कोशिश की—"बेकार की बहस में यह खुशगवार रात क्यों

चौपट की जाय ? निदेशक महोदय अपने खास मेहमान के लिए व्हिस्की की पूरी बोतल रख गये हैं। इसे आप पूरी भी खत्म कर देंगे तो वह कल रहमान से यह नहीं पूछेंगे कि कल रात जो नई बोतल मैं मेज़ पर रखकर गया था कहाँ गई। चलिये अब इसे 'फार कम्पनी सेक' (साथ देने के खयाल से) पिया जाय।"

नीना का रुख सिनीकल होता जा रहा था। जिस रफ्तार से वह पी रही थी उसे याद करके मुझे डर भी लगने लगा था। मैंने इस बोतल के बारे में सोचा था कि मिस्टर नागपाल इसे सिर्फ औपचारिकता की वजह से रख गये हैं ताकि मुझे उनकी अनुपस्थिति बुरी न लगे—इसे खोलने की बात तो मैं सोच भी नहीं सकता था। मैं डिनर के बाद तो वैसे भी नहीं पीता। लेकिन नीना ने जब उस बोतल को खोलने का संकेत किया तो मैं उलझन में पड गया।

स्वयं को संयत करके मैंने नीना से पूछा—"डिनर के तत्काल बाद पीना क्या ठीक होगा ? रात काफी जा चुकी है—मुझे डर है कहीं आपकी तबियत खराब न हो जाय।"

नीना ने अपना दाहिना हाथ हवा में लहराया और लापरवाही से बोली—"लगता है आप काफी से ज्यादा सेंसेटिव हैं। इतनी-सी शराब से क्या होता है मलिक साहब।"

"लेकिन रात ज्यादा बीत चुकी है नीना जी।" मैंने बोतल को ज्यों-का-त्यों बना रहने देने की कोशिश में कहा।

"ओह माई गॉड ! आप लगता है गंगा जल का सेवन करते हैं। शराब मेरे लिए एक बहुत मामूली-सी जरूरत है—यह जहर अब एक तरह से कोई नुकसान भी मुझे नहीं पहुँचाता। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है ड्रिंक्स से मुझे कभी कोई परेशानी नहीं हुई।"

नीना ने दिलेरी बयान की "और मैं आपको यह भी बतलाती हूँ जिस दिन यह परेशान करने वाली साबित होगी उसी दिन इसका खात्मा समझिये।" उसने अपना गिलास उठाया। नीना के गिलास में अभी तक भी शराब की कई घूँटें बाकी थीं।

और वह यकायक एक दूसरी दिशा में मुड़ गई "माफ़ कीजिं

आप नाचना जानते हैं ?"

मैं उसका प्रस्ताव सुनकर अचकचा गया। बहुत वर्षों पहले मैंने नाचना सीखा ज़रूर था लेकिन रात-दिन की भाग-दौड़ में अब नाचना तो एक तरफ़ बरसों तक 'बाल रूम' का मुंह भी देखना नहीं हो पाता था। मैंने कहा—"मैं तो बरसों से फ़्लोर पर नहीं उतरा मैडम।"

मेरे इन्कार करने पर उसने मेज़ की घंटी बजाकर बेयरा को तलब किया और मेज़ से खाने का सारा सामान उठवा दिया। जब वह मेज़ साफ़ कर रहा था तो नीना बोली, "गिलास, बर्फ और पानी की बोतलें रख जाना बेयरा।"

वह 'जी हुज़ूर' कह कर चला गया और थोड़ी देर में नीना का बतलाया हुआ सारा सामान मेज़ पर रख गया। नीना ने बहुत शोख़ी प्रकट करते हुए कहा—"आप तो नाचना भूल ही चुके हैं। कोई बात नहीं मलिक साहब, मैं अकेली ही डाँस करूँगी।"

मैंने पाँच-सात मिनट के बाद हैरत से देखा कि नीना ने मेज़ से परे हटकर अकेले ही डाँस करना चालू कर दिया। वह बहुत शऊर में सधे हुए ढंग से नाच रही थी। उसके क़दम बहुत सन्तुलित और नपे-तुले पड़ रहे थे और नाच के दौरान शरीर पर नशे का प्रभाव नाममात्र को भी दिखलाई नहीं पड़ रहा था। उसने नाचते हुए घेरे में कई चक्कर लगाये और मुस्कराकर बोली—"जिस तरह अकेले पीने में कोई मज़ा नहीं है उसी तरह अकेले नाचने में भी कोई थ्रिल नहीं है मलिक साहब।"

मैंने नीना के डाँस की प्रशंसा की—"सच में आप बहुत अच्छा नाचती हैं। मेरी समझ में आपके शरीर की चुस्ती और इकहरेपन का सबसे बड़ा रहस्य यही है—क्या आप बराबर इसका अभ्यास करती रहती हैं? लेकिन उसने मेरी बात खत्म होते-होते नाचना ही बन्द कर दिया। मैंने आपत्ति की—"नीना जी, आपने यह क्या किया? यह तो आपकी सरासर ज़्यादती है। जो हो आपने डाँस करना खूब सीखा है। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इस कला से अपना सम्बन्ध बराबर बनाये रखें। आप के स्टेप्स इतने सधे हुए हैं कि मुझे वाक़ई खुशी हो रही है। मैंने ज़्यादातर महिलाओं को सुख-सुविधाओं में रहकर अपना शरीर बिगाड़ते देखा

है—या तो वह थुल-थुल मोटी हो जाती है या फिर अक्सर बीमार रहने का शौक़ पाल लेती है।"

मेरी प्रशंसा जो केवल औपचारिकता मात्र नहीं थी नीना ने पता नहीं किस रूप में स्वीकार की ? हाँ, उसने यह अवश्य किया कि बहुत मोहक ढंग से मुस्कराई और मेरे करीब आकर झुककर मुझे धन्यवाद देने लगी।

नीना ने डाइनिंग टेबिल से व्हिस्की की बोतल उठाकर उसकी कार्क चटका दी पहले उसने मेरे गिलास में डबल पैग डाला और फिर अपना गिलास आधे से ज्यादा भर कर बोली—"मुश्किल यह है मिस्टर ···।"

"किस बात की मुश्किल है मैडम ?" मैंने उसे कुछ उलझन में पड़े देखकर कहा।

"कोई खास नहीं···हाँ मिस्टर···मैं आपका नाम भूल रही हूँ शायद।"

मैंने उसे अपना नाम बतलाया "मुझे मलिक कहते हैं नीना जी।" फिर मैंने परिहास से कहा, "और आपका नाम श्रीमती नीना नागपाल है और इस आलीशान भवन का नाम नीना विला है।"

नीना ने मेरा मजाक समझ कर कहा—"बहुत-बहुत शुक्रिया। क्या ही अच्छा हो कि लोग जब अपना नाम और असलियत भूल जायें तो उन्हें कोई आपकी तरह याद दिलाने का सरजाम देता रहे।"

"हाँ मुझे याद आया, आप एक ज़बरदस्त पत्रकार हैं। आपका क्या खूब नाम है मिस्टर आदम मलिक, यह कोई धाकड़ नाम हुआ।"

मैंने हैरत से उसका मुँह देखकर कहा—"मैडम, मेरा नाम आदम मलिक नहीं सुरेन्द्रनाथ मलिक है। आदम मलिक एक बहुत पुराने पत्रकार हैं जो अब हिन्दुस्तान से बाहर ही रहने लगे हैं।"

"ओह ! आइम सारी !" फिर उसने चेहरे पर लापरवाही का भाव धारण करके कहा—"नाम से क्या फर्क पड़ता है मलिक साहब।"

मैंने सहमति प्रकट करके कहा—"हाँ, दूर तक देखा जाय तो आपकी बात एक दम सही है। नाम में कोई खास बात नहीं है।"

यकायक उसने बोलना शुरू कर दिया—"उसके साथ यह मुश्किल

है कि वह कहता है कि तुम कुछ भी नहीं जानती हो—कुछ भी नहीं समझती हो—अब आप ही बतलाइए बीरे···ओह सारी ! सुरेन्द्रनाथ मलिक, भला मैं क्या इतनी स्ट्रांग-हेडेड हूँ कि मैं कुछ भी नहीं समझती ?"

"आप किसकी बात कह रही हैं नीना जी ?" मैंने सन्दर्भ तलाश करते हुए जानने की चेष्टा की ।

"वही—जो अपने आप से कुछ भी नहीं समझना चाहता । सबसे बड़ी 'प्राब्लम' यह है कि आदमी बस अपने को ही सबसे ज्यादा समझदार ख़याल करता है । जितना कुछ वह करता है या सोचता है अपने को सुप्रीम समझकर करता है और अपने फ़ैसलों को दूसरों के ऊपर यों उछाल देता है जैसे शिकारी जंगल में जाल फेंककर कहता है 'आओ और फँसो' ।"

मैंने देखा कि उसके गिलास में काफ़ी शराब है और वह अजीब बहकी-बहकी बातें कर रही है । उसकी चेतना में बहुत-सी बातें गड्ड-मड्ड होकर एक भ्रम पैदा करने लगी हैं । यहाँ तक की वह मेरा नाम भी बार-बार ग़लत ढंग से बोल रही थी । मैंने उसकी चेतना को कुरेदने के लिए जान-बूझ कर अनजान बनते हुए पूछा—"आप अभी किसके बारे में बातें कर रही थीं ?"

नीना ने एक हिचकी ली और हिस्टीरिया के मरीज़ की तरह अनियंत्रित ढंग से देर तक हँसती रही । जब उसकी हँसी रुकी तो बोली—"मैं किसके बारे में बातें करूँगी जनाब ? क्या आप वाक़ई यह बात नहीं जानते! तब तो मुझे कहना पड़ेगा आप बहुत भोले इन्सान हैं ।"

मैंने उसे छेड़ना उचित नहीं समझा और चुपचाप उसका तमतमाया हुआ आवेश में डूबा चेहरा देखता रहा ।

"आइम टाकिंग अबाऊट माई ग्रेट मैन—मैं अपने महान पति के बारे में कह रही थी । उसने मुझसे क्यों शादी की है, आप बतला सकते हैं ?"

"मुझे खेद है इस सम्बन्ध में मेरी आपके पति से कोई बात-चीत नहीं हुई ।"

"कोई बात नहीं—मैं बतला दूँगी आपको । उसने अपना सपनों का महल सजाने के ख़याल से मुझसे शादी की है । उसने कितना ख़ूबसूरत

और आरामदेह बंगला मेरे लिए सजवाया है। यहाँ तक कि इसका नाम भी मेरे ही नाम पर 'नीना विला' रख दिया है। यह बात अलग है कि पहले इस बंगले का नाम 'मेरी विला' था।"

"इसमें पहले तो कोई विदेशी सज्जन ही रहते थे ?" मैंने उससे जानकारी प्राप्त करनी चाही।

"वह एक अलग कहानी है। फिलहाल आप इतना जान लें कि मेरा पति हर किसी की नजर में यह बात चढ़ाये रखना अपना फर्ज समझता है कि वह अपनी महबूबा को कितनी गहराई से प्यार करता है। इसका असर भी हुआ है। हमारे सभी परिचित हमारे आदर्श प्रेम और परिवार की सराहना करते नहीं थकते।"

वह बराबर व्यंगात्मक होती जा रही थी। मैंने उसे सान्त्वना देने की चेष्टा की "किसी की निन्दा प्रशंसा की बात तो छोड़ ही दीजिये—आपको सभी कुछ प्राप्त है—खुश रहना ही सबसे बड़ी बात है।"

"वही तो मैं आपको बतलाना चाहती हूँ कि मैं कितनी ज्यादा सन्तुष्ट हूँ ! हम दोनों के बीच बहुत गहरी प्रीत है। इतनी गहरी कि रात को कभी वह बाहर रहता है कभी मैं अपनी रात बाहर बिताती हूँ। यह एक संयोग ही होता है कि हम दोनो सपनों के महल में कभी एक साथ होते हैं।"

"मुझे बहुत अजीब, बहुत विचित्र लगी यह सूचना।" मैंने दुख प्रगट किया।

"नहीं-नहीं, इसमें अजीब क्या है ? कभी वह मुझे यह याद दिलाता है कि मुझे कहाँ पहुँचना जरूरी है और कभी उसे मैं याद दिलाती हूँ कि उसके कहीं न पहुँचने पर आसमान टूट पड़ेगा।"

मैं अपनी आँखों में दया का भाव लाकर बोला—"मगर ऐसा होना तो नहीं चाहिए। आपके परिवार में मुझे कहीं कोई कमी नजर नहीं आती नीना जी।"

"क्या वह सिर्फ अच्छे-अच्छे कपड़ों और बातों से पकड़ में आने वाली चीज है महाशय जी ?"

मैं विस्फारित होकर नीना का मुँह देखने लगा। मुझे अपनी आँखों

पर विश्वास करना कठिन हो रहा था। क्या यह वही महिला है जो आक्रामक होना तो दूर सख्त शब्द तक मुंह से निकालने वाली दिखाई नहीं पड़ रही थी। मुझे लगा कि बग़ैर ज़बरदस्त मानसिक उथल-पुथल के कोई भी अपने साथ इतना शत्रुता भरा आचरण नहीं कर सकता। नीना ने कहना आरम्भ कर दिया "यही अन्त नहीं है जनाब आप ! अखबार के लिए मसाला जुटाने आये हैं और वह भी एक बहुत प्रसिद्ध और सफल डायरेक्टर की ज़िन्दगी के बारे में ? लेकिन यह कितना आकर्षक ढंग है कि वह मशहूर आदमी मेहमान को अपने साथ लाने के बावजूद घर में ठहरने की फुर्सत नहीं निकाल पाता।"

"मेरा ख़याल है आप कुछ ज्यादती कर रही हैं नागपाल साहब के साथ। कभी-कभी ऐसे मौके आ ही जाते हैं—मैं इस बात का बुरा नहीं मानता। आखिर हम सब लोग इस दुनिया के अजीबो-गरीब झंझटों में फँसे हुए लाचार प्राणी ही तो हैं।" मैंने नागपाल के बाहर चले जाने को सहज साधारण घटना बनाने के विचार से अपनी राय ज़ाहिर की।

"तो फिर यह भी आपको बतला दूं कि ऐसी भी रातें होती हैं जब वह और मैं दोनों ही इस 'कोज़ी कार्नर' इस्टेट के बाहर नहीं होते—यहीं 'नीना विला' की रौनक बढ़ाते होते हैं लेकिन मैं ऊपर की मंज़िल में सोने का नाटक रचती रहती हूँ और उसे अपने पास तक नहीं फटकने देती।"

सुनने में यह बातें अजब रहस्यपूर्ण लग रही थीं लेकिन यह इतनी नाज़ुक बातें थीं कि मैं इन पर एकाएक कोई टिप्पणी भी नहीं कर सकता था। मैं देख रहा था कि उसकी आँखों से चिंगारिया फूट रही थीं। वह व्यंगात्मक लहज़े में कड़वे ढंग से मुस्कराकर कहने लगी कि अब आप हमारे 'प्रेम नगर' के बारे में क्या सोच रहे हैं।

मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि आज की रात यह विचित्र अनुभव होने वाला है। मुझे आज भी रह-रहकर नागपाल के शब्द याद आ रहे थे "मैं चाहता हूँ कि मेरी 'टोटल पर्सनेल्टी (संपूर्ण व्यक्तित्व) के बारे में जानें और अपने अखबार में खुलकर लिखें—देखता हूँ आप मेरे साथ क्या जस्टिस (न्याय) करते हैं।"

क्या यह भी हो सकता है कि नागपाल सारी स्थितियों को नंगे रूप से, सही रंगों में मेरे सामने रखने के उद्देश्य से ही जान-बूझकर बाहर चले गये हो। वह सोचते होंगे कि उनके यहां रहते नीना अपनी मासूमियत का लबादा नहीं उतारेगी और मुझे केवल आदर्श प्रेम की झूठी तस्वीर ही देखने को मिलेगी। नागपाल का यह विचार मुझे बहुत प्रतिवादी ढंग का लगा। कुछ भी हो अगर यह सब था तो मैं यही कह सकता हूं कि नागपाल अपने प्रति बहुत सख्त और बेरहम किस्म के व्यक्ति थे। वह यह क़तई नहीं चाहते थे कि मैं उनके बारे में वही कुछ लिखूं जो वह चाहते हैं। वह एक भयंकर स्थिति का उल्लेख कराने की भी इच्छा रखते थे। नागपाल के चरित्र का यह पहलू मुझे बहुत ग़ैर-मामूली लगा। मेरा अनुभव इस सम्बन्ध में अभी तक यही था कि असाधारण प्रतिभा-सम्पन्न लोग अपनी घरेलू जिन्दगी गंगाजल की तरह पवित्र और दूध जैसी उजली दिखाने के लिए बेचैन रहते हैं।

जब मैं 'नीना विला' में दाखिल हुआ था तो मुझे बाहर से सारी चीजें सही और नपी-तुली लगी थी पर कुछ ही घंटों के अन्तर से यह साफ हो गया था कि वहां सब कुछ बहुत उलझा हुआ और असन्तुलित है। पता नहीं जाने किस तरंग में मैं यह पूछ बैठा—"क्या आप अपने पति को प्रेम नहीं करती ?"

मेरे इस सीधे-सादे प्रश्न को सुनकर वह ठठाकर हंसने लगी और कई मिनट तक ऐसे हंसती रही जैसे मैंने कोई बहुत गुदगुदाने वाली बात उससे कह दी हो। उस भयंकर और निष्करुण ठंडी हंसी से मैं दहल उठा। देर बाद जब वह कुछ संयत हुई तो बोली—" प्रेम ?, यह चीज कहां होती है। मैंने इसके बारे में उसी तरह बहुत कुछ सुना है जैसे लोग सर्वशक्तिमान ईश्वर के बारे में न जाने क्या-क्या कहते हैं लेकिन कोई ऐसा गवाह सामने नहीं आता जिसने खुद अपनी आंखों से उसे देखा हो।

" और मैं ही क्यों वह भी प्रेम के बारे में क्या जानता है। शायद आप मेरे शब्दों पर एतबार नहीं करेंगे लेकिन जो मैं महसूस करती हूं वह यह है कि वह शख्स जिसे दुनिया मेरे पति के रूप में जानती है उसे

केवल स्वयं से ही प्यार है। उसे अपनी व्यस्तता से प्यार है—अपनी दिन-दिन बढ़ती प्रसिद्धि से प्यार है। अपनी प्रसिद्धि में वह इतनी ऊँचाई पर स्थित है जहाँ उसे कोई छू भी नहीं सकता। यदि कोई छूना भी चाहे तो वह उसे छोड़कर और ऊपर चला जायेगा। मुझे उसके लिए अफ़सोस है कि वह अपनी शोहरत की दुनिया में कितना अकेला है—शोहरत के वियावान रेगिस्तान में निपट अकेला आदमी।"

नीना के इस रहस्योद्घाटन से मैं और भी ज़्यादा उलझन में पड़ गया। मैंने अचम्भे से पूछा, "लेकिन फिर आपने उनसे विवाह कैसे कर लिया ?"

"विवाह ! इससे आपका क्या मतलब है पत्रकार साहब ?"

"मेरा मतलब है कि नागपाल से आपका विवाह कैसे हुआ—आपने खुद ही तो शादी की होगी ?"

"मैंने उससे शादी नहीं की। यह मेरी सत्यानाशी उम्मीदें ही थीं जिन्होंने मुझे रौंद डाला। मैं एक बहुत ही कच्ची और नाज़ुक उम्र में सपनों के हाथों बरबाद हो गई।"

"क्या आप उस सम्बन्ध में कुछ बतलाने की कृपा करेंगी ?" मैंने उसके अतीत में झाँकने की कोशिश की।

"हम लोग तब पूना में रहते थे। वह बहुत शान्ति का ज़माना था। हमारे घर में शास्त्रीय संगीत का बहुत अच्छा वातावरण था। मेरे पिता नन्दलाल जी स्वयं प्रसिद्ध पखावजवादक थे और माँ सखूबाई का कंठ बहुत मधुर था। मेरे माता-पिता ने प्रेम-विवाह किया था। बाद में उन दोनों में आर्थिक कष्टों को लेकर आये-दिन चख-चख रहने लगी। मेरी माँ रातों संगीत-सम्मेलनों में भाग लेने के लिए भाग-दौड़ करती थी। उस ज़माने में गाने-बजाने वालों को आर्थिक सहायता केवल राजघरानों से, उमरावों से मिलती थी। साधारण गान-सभाओं में जाने पर कुछ ख़ास प्राप्त नहीं होता था।"

मैंने उसे टोका, "लेकिन उन दिनों पूना में छोटी-मोटी नाटक कम्पनियाँ भी तो थीं—क्या उनसे भी कोई आर्थिक उपलब्धि कलाकारों को

नहीं हो पाती थी ?"

"हाँ थियेटर कम्पनियाँ तो कई थीं लेकिन थियेटर में नौकरी करने वाले ही मासिक तनखा पाते थे; ज्यादातर तो शौकिया ही काम करते थे।

" ज्यों-ज्यों घर की माली हालत खराब होती चली गई घर में किच-किच भी बढ़ती चली गई। मुझसे एक बड़ा भाई था जो पढ़ने-लिखने में जरा भी दिलचस्पी नहीं लेता था। उधर घर का माहौल कई बच्चे हो जाने से इतना खराब हो गया था कि घड़ी भर किसी को भी चैन नसीब नहीं होता था। कई तरह के और अजीब-अजीब टुलियों के आदमी हमारे घर में आते-जाते रहते थे। बच्चों की कोई भी परवाह नहीं की जाती थी। कुल मिलाकर हमारा वह घर नरक-कुण्ड बना हुआ था।"

"तब तो आपकी और दूसरे बच्चों की पढाई भी कठिनाई में पड़ गयी होगी—" मैंने नीना का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश की।

" उन हालात में पढ़ने-लिखने की परवाह किसे थी मलिक साहब, हर वक्त पैसे के लिये हाय-हाय मची रहती थी। तभी हमारे घर में मेरी ही उम्र के एक लड़के का आना-जाना शुरू हो गया। वह नाटकों में काम करता था और मेरी माँ को जान गया था। वह उन्ही से मिलने-जुलने आता था लेकिन धीरे-धीरे मेरी उससे घनिष्ठता बढ़ती चली गई। उसकी कोशिश से मुझे भी नाटकों में छोटी-छोटी भूमिकायें मिलने लगी।

" नाटकों में धीरे-धीरे मेरे पाँव जमने लगे और मुझे प्रसिद्धि मिलने लगी। यही वक्त था जब मराठी रंग-मंच के साथ-साथ फिल्मों की भी शुरुआत हो गई। विठोबा ने अपने और मेरे लिए खूब दौड़-धूप की।"

मैंने पूछा, "नीना जी यह विठोबा कौन था ?"

"अरे वही लड़का जो हमारे घर में आता था—फिर तो वह अधिक समय हमारे परिवार में ही रहने लगा था। खैर, तो मैं बतला रही थी कि विठोबा की भाग-दौड़ रंग लाई और उसकी चेष्टाओं से मुझे फिल्मों में भी छोटे-छोटे रोल मिलने लगे। सच पूछा जाय तो यह श्रेय विठोबा को ही है कि वह मुझे चल-चित्र जगत की देहरी पर ले आया। विठोबा को मेरे घर में प्यार तथा विश्वास भी खूब मि"

नीना ने अपने प्रारम्भिक जीवन की कहानी मुझे विस्तारपूर्वक सुनानी शुरू कर दी। मुझे थोड़ी देर पहले नीना का जो स्वरूप देखने को मिला था उसको देख लेने के बाद यह उम्मीद करना कठिन ही था कि वह अपने बचपन के दिनों की बातें ब्यौरेवार बतलाने लगेगी।

मैंने पूछा, "फिर बम्बई में कब आना हुआ ?"

नीना ने अपना गिलास मुँह से लगाकर एक लम्बा घूंट लिया और बोली, "मेरी सफलता जैसे-जैसे बढ़ती गई विठोवा मुझ पर अधिकार की भावना का अधिक-से-अधिक प्रदर्शन करने लगा। मैं पन्द्रह भी पूरे नहीं कर पाई थी कि विठोवा ने मेरे सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। मैं विवाह के बारे में उस समय जानती ही क्या थी ? मैंने उसके प्रस्ताव के विषय में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखलाई तो वह मेरे माता-पिता के पीछे लग गया। उन्हें आखिर विवाह तो करना ही था; उन्होंने उसकी बात का कोई विरोध नहीं किया बल्कि उसके साथ मेरा विवाह ही कर दिया।"

"विवाह ?" मैं जैसे आसमान से गिर पड़ा, "आपका नागपाल से विवाह के पहले भी एक और विवाह हो चुका था ?"

"जी हाँ जनाब ! पहली शादी विठोवा से ही हुई थी और उसने छह महीने में ही मेरी हालत खराब कर दी थी। वह मुझे हर तरह की फ़िल्मों में काम करने के लिए मजबूर करने लगा। उसकी ज़्यादती और अत्याचार बराबर बढ़ते चले गये। यहाँ तक कि उसने मेरा लोगों से मिलना-जुलना भी बन्द करवा दिया। खैर, मैं फिर भी अपना काम करती ही रही और मुझे काम के साथ-साथ ख्याति भी मिलती ही रही। इसी दौरान बम्बई में जिन फ़िल्मों का निर्माण हो रहा था मुझे उनमें काम मिल गया और मेरा सारा परिवार पूना छोड़कर बम्बई में आ गया।"

"तो आप पन्द्रह-सोलह की उम्र में बम्बई आई ?"

"जी उम्र का तो फिर कुछ अहसास ही न रहा। मुझे बच्चा होने वाला था। मुझे एक 'मेटरनिटी होम' में भर्ती कर दिया गया। उसी दौरान एक भयंकर काण्ड हो गया। जैसा कि मैंने आपको बतलाया था कि विठोवा की ऐंठ मेरी सफलता के साथ बढ़ती जा रही थी। वह

लोगों से बेहूदा बर्ताव और बेजा हरकतें करने में नहीं चूकता था। एक रात जब वह नशे में गड़गच्च था और दोस्तों के साथ बैठा पी रहा था उसका एक बदनाम गुण्डे से झगड़ा हो गया। सुना कि उस गुण्डे ने उसे ललकार कर कहा था, 'अबे मच्छर हमसे उलझता है? बीवी की कमाई पर तो तेरी रोटियाँ चलती हैं "जा-जा वहीं जाकर घुस जा।" बस इसी पर बात बहुत बढ़ गई और उस गुण्डे रहमतमियाँ ने अपना भयानक चाकू बिठोवा के सीने में उतार दिया।'

नीना ने एक क्षण ठहरकर अपने गिलास से एक साथ कई घूँटें भरीं और बोली, "मैंने ये सारी बातें सिर्फ बाद में सुनी ही थीं क्योंकि मुझे जब यह खबर मिली तब मैं अपने बिस्तर से हिलने-डुलने की हालत में नहीं थी। बिठोवा ने कभी भी चैन नहीं लेने दिया था। उसकी इस अप्रत्याशित मृत्यु से मैं दुखी होने के बजाय त्रस्त ही अधिक हुई।"

मैंने उसकी भावना को गहराई से समझने की कोशिश की। वास्तव में उतनी छोटी उम्र में सहानुभूतिपूर्ण आचरण ही किसी लड़की के मन में प्यार का बीजारोपण कर सकता है लेकिन उसके पहले पति ने उसे सिवाय कष्ट और भय के दिया ही क्या था जो वह उसकी अनुपस्थिति से विदग्धता का अनुभव करती। मैं देख रहा था कि नीना अनेक वर्ष पीछे लौटकर बीते दिनों की कुहेलिका में भटक रही थी।

आठ

काफ़ी देर तक चुप रहने के बाद नीना मानो अपने अतीत से लौट आई। उसने एक लम्बी साँस खींची और अपनी कहानी कहने लगी—"बम्बई में भी कई वर्षों तक कठिन संघर्ष मेरे सामने रहा लेकिन किसी तरह जीवन चलता ही रहा। बस ग़नीमत यही थी कि मैंने जिन चलचित्रों में भी काम किया उनको असफलता का मुँह नहीं देखना पड़ा। आज जैसी स्थिति होती तो उतने ही काम पर जो मैंने उस जमाने में किया था इतना धन प्राप्त हो गया होता कि मैं शेष जीवन आराम से काट सकती थी लेकिन तब मुझे वर्षों तक सिर्फ़ अनुबन्ध के हिसाब से मासिक वेतन मिलता था।

" मेरी कुछ फिल्में नागपाल की नज़रों में आईं तो उन्होंने अपनी फ़िल्म 'सितारों के खेल' के लिए मुझे अनुबन्धित कर लिया। जैसा कि आपको मालूम ही है वह फ़िल्म धड़ल्ले के साथ चली। निर्माता को उससे खूब पैसा मिला—डायरेक्टर नागपाल को भरपूर प्रसिद्धि मिली और मुझे प्रथम स्तर की नायिका के रूप में पहचाना जाने लगा। अभी मुझे कई फ़िल्मों के अनुबन्ध मिलने की बातें चल ही रही थीं कि नागपाल ने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रख दिया। आप जानते हैं कि यह फ़िल्म व्यवसाय कुछ मामलों में बहुत विचित्र है। यहाँ सफलता प्राप्त करने के लिए हर किसी को बड़े नामों के साथ जुड़ना ही पड़ता है। नागपाल के प्रस्ताव को मैं ठुकरा नहीं सकी। वह एक प्रख्यात और सफल निर्देशक थे और मेरा सपना उनके सहारे कला की दुनिया में शिखर पर पहुँचने का था। इसी लोभ में पड़कर मैंने नागपाल के प्रस्ताव पर अपनी सहमति ज़ाहिर कर दी और कुछ ही दिनों बाद हमारी शादी सम्पन्न हो

गई।"

मैंने न चाहते हुए भी जिज्ञासावश सवाल कर दिया, "आपकी वह बच्ची कहाँ है—मेरा मतलब सबसे पहली सन्तान।"

नीना एक लम्बी आह भरकर रह गई "वह बच्ची मेरे माता-पिता के साथ थी लेकिन वह ज्यादा लम्बे समय तक जिन्दा नहीं रह सकी। डेढ साल की होगी जब उसे डिप्थीरिया हुआ—मेरे पहुँचने से पहली ही वह सारे बन्धन झटककर जा चुकी थी। उसका जाना एक तरह से सिम्बोलिक'(प्रतीकात्मक), ही था गोया पिछला कुछ भी बन्धन मेरी ज़िन्दगी में नहीं रहना चाहिये।"

मैंने उस मृत बच्ची का ज़िक्र छेड़कर वास्तव में बहुत बड़ी ग़लती कर दी थी—नीना की एक सोई हुई तकलीफ अनजाने मे ही जगा दी। मैंने उद्विग्नता के समुद्र मे डूबती हुई उस निरीह माँ की भीतरी छटपटाहट का अनुभव करके कहा, "आपके पास सब कुछ है नीना जी। आप बेकार ही पछताती और दुखी होती हैं। इतना समर्थ और प्रसिद्ध पति, इतनी सुन्दर बच्चियाँ और रहने के लिए इस कदर आरामदेह आवास। मैं समझता हूँ एक पूरी जिन्दगी के संघर्ष के बाद जो कुछ बहुत ही कठिनाई से बहुत ही थोड़े से खुशकिस्मतों को नसीब हो पाता है—वह सब आपके पास मौजूद है। यों आदमी की ज़िन्दगी मे जब तक भाव-भावनाएँ और सोच-समझ है वह किसी न किसी कष्ट से पीडित रहेगा ही।"

नीना मेरी इस दिलासा से सन्तुष्ट नहीं हुई। वह आवेश मे बोली, "मुझे इस खूबसूरत जेलखाने की असलियत पता है मिस्टर मलिक! मैं अपनी आज़ादी हासिल करके ही रहूँगी। आप सोचिये अगर मैं उसके ऊपर निर्भर न करके आज अपने पाँवो पर खड़ी हुई होती तो मेरे पास स्वयं का अर्जित किया हुआ क्या न होता?"

"हाँ यह तो आप एकदम सही कहती हैं।"

"पर-वर कुछ नहीं मलिक साहब। सिने-जगत मे निर्देशक बजात खुद चीज क्या है। कुल मिलाकर वह पर्दे के पीछे की चीज होती है। मैं काम करती रहती तो फिल्म-जगत की उससे कहीं ज्यादा चर्चित और कामयाब हस्ती मानी जाती। मेरी शादी चाहे दुनिया के सबसे ज्यादा

आठ

काफ़ी देर तक चुप रहने के बाद नीना मानो अपने अतीत से लौट आई। उसने एक लम्बी साँस खींची और अपनी कहानी कहने लगी—"बम्बई में भी कई वर्षों तक कठिन संघर्ष मेरे सामने रहा लेकिन किसी तरह जीवन चलता ही रहा। बस ग़नीमत यही थी कि मैंने जिन चलचित्रों में भी काम किया उनको असफलता का मुंह नहीं देखना पड़ा। आज जैसी स्थिति होती तो उतने ही काम पर जो मैंने उस ज़माने में किया था इतना धन प्राप्त हो गया होता कि मैं शेष जीवन आराम से काट सकती थी लेकिन तब मुझे वर्षों तक सिर्फ़ अनुबन्ध के हिसाब से मासिक वेतन मिलता था।

" मेरी कुछ फिल्में नागपाल की नज़रों में आईं तो उन्होंने अपनी फ़िल्म 'सितारों के खेल' के लिए मुझे अनुबन्धित कर लिया। जैसा कि आपको मालूम ही है वह फ़िल्म धड़ल्ले के साथ चली। निर्माता को उससे खूब पैसा मिला—डायरेक्टर नागपाल को भरपूर प्रसिद्धि मिली और मुझे प्रथम स्तर की नायिका के रूप में पहचाना जाने लगा। अभी मुझे कई फ़िल्मों के अनुबन्ध मिलने की बातें चल ही रही थीं कि नागपाल ने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रख दिया। आप जानते हैं कि यह फ़िल्म व्यवसाय कुछ मामलों में बहुत विचित्र है। यहाँ सफलता प्राप्त करने के लिए हर किसी को बड़े नामों के साथ जुड़ना ही पड़ता है। नागपाल के प्रस्ताव को मैं ठुकरा नहीं सकी। वह एक प्रख्यात और सफल निर्देशक थे और मेरा सपना उनके सहारे कला की दुनिया में शिखर पर पहुँचने का था। इसी लोभ में पड़कर मैंने नागपाल के प्रस्ताव पर अपनी सहमति ज़ाहिर कर दी और कुछ ही दिनों बाद हमारी शादी सम्पन्न हो

गई।"

मैंने न चाहते हुए भी जिज्ञासावश सवाल कर दिया, "आपकी वह बच्ची कहाँ है—मेरा मतलब सबसे पहली सन्तान।"

नीना एक लम्बी आह भरकर रह गई "वह बच्ची मेरे माता-पिता के साथ थी लेकिन वह ज्यादा लम्बे समय तक जिन्दा नहीं रह सकी। डेढ साल की होगी जब उसे डिप्थीरिया हुआ—मेरे पहुँचने से पहले ही वह सारे बन्धन झटककर जा चुकी थी। उसका जाना एक तरह से सिम्बोलिक'(प्रतीकात्मक), ही था गोया पिछला कुछ भी बन्धन मेरी ज़िन्दगी में नहीं रहना चाहिये।"

मैंने उस मृत बच्ची का ज़िक्र छेड़कर वास्तव मे बहुत बड़ी ग़लती कर दी थी–नीना की एक सोई हुई तकलीफ़ अनजाने मे ही जगा दी। मैंने उद्विग्नता के समुद्र में डूबती हुई उस निरीह माँ की भीतरी छटपटाहट का अनुभव करके कहा, "आपके पास सब कुछ है नीना जी। आप बेकार ही पछताती और दुखी होती हैं। इतना समर्थ और प्रसिद्ध पति, इतनी सुन्दर बच्चियाँ और रहने के लिए इस कदर आरामदेह आवास। मैं समझता हूँ एक पूरी जिन्दगी के संघर्ष के बाद जो कुछ बहुत ही कठिनाई से बहुत ही थोड़े से खुशकिस्मतों को नसीब हो पाता है—वह सब आपके पास मौजूद है। यों आदमी की ज़िन्दगी में जब तक भाव-भावनाएँ और सोच-समझ है वह किसी न किसी कष्ट में पीड़ित रहेगा ही।"

नीना मेरी इस दिलासा से सन्तुष्ट नही हुई। वह आवेश मे बोली, "मुझे इस खूबसूरत जेलखाने की असलियत पता है मिस्टर मलिक! मैं अपनी आज़ादी हासिल करके ही रहूँगी। आप सोचिये अगर मैं उसके ऊपर निर्भर न करके आज अपने पाँवो पर खड़ी हुई होती तो मेरे पास स्वय का अर्जित किया हुआ क्या न होता?"

"हाँ यह तो आप एकदम सही कहती है।"

"पर-वर कुछ नही मलिक साहब। सिने-जगत मे निर्देशक बजात खुद चीज क्या है। कुल मिलाकर वह पर्दे के पीछे की चीज होती है। मैं काम करती रहती तो फिल्म-जगत की उससे कही ज्यादा चर्चित और कामयाब हस्ती मानी जाती। मेरी शादी चाहे दुनिया के सबसे ज्यादा

सफल और विख्यात आदमी से हो गई लेकिन आज मेरी खुद की क्ष. पहचान बाक़ी रह गई !"

मैंने नीना को शान्त करने की दृष्टि से समझाना चाहा "नीना जी, परिवार एक ऐसा केन्द्र है जहाँ किसी-न-किसी को अपनी पहचान खोनी ही पड़ती है । आपने बहुत बड़ी कुर्बानी दी है—कुर्बानी तो अन्ततः किसी को देनी ही पड़ती है ।"

"मुझे क़ुर्बानी देने से कोई फ़र्क नहीं पड़ा । मुझे अपने महान पतिदेव से क्या मिला ? उसने मुझे कुल जमा क्या बनाकर छोड़ा । मैं साल-दर-साल बच्चे जनती रहूँ बिल्कुल जानवर मादा की तरह और इस बेवकूफ़ी में खुश होती रहूँ कि मैं एक अति प्रसिद्ध आदमी की बीवी हूँ । आज मेरे पास अपना रह क्या गया है ? न अपने आप में उस उमंग को पाती हूँ जो आँखों में चमक बन कर उभरती है और न वह गुदाज़ जिस्म रह गया है । इस शख्श ने जो दुख मुझे प्यार के नाम पर दिये हैं उनके लिए मैं उसे सौ जिन्दगी भी माफ़ नहीं करूंगी । विठोबा की नीचताएँ मुझ पर इतने नंगे ढंग से खुल गई थीं कि मैं उससे कभी-न-कभी पिण्ड छुडा ही लेती—अगर वह जीता रहता तब भी मेरा शोषण हमेशा के लिए नहीं कर सकता था क्योंकि वह एक धूर्त व्यक्ति नहीं था ; लेकिन इसने मुझ पर अपनी शराफ़त का चारों तरफ़ से ऐसा जाल बिछा रखा है कि इसके क़ैदखाने से बाहर निकलना मेरे लिए आसान नहीं रह गया है ।"

नीना की उत्तेजना बेमिसाल थी । उसके दिल में यह बात पूरी तरह घर कर गई थी कि नागपाल ने उसके प्यार में डूबकर उससे विवाह नहीं किया । उसे घर सँभालने के लिए एक खूबसूरत पत्नी चाहिये थी और उसने बग़ैर इस बात का ख़याल किये कि वह एक महत्त्वाकांक्षिणी का भविष्य चौपट कर रहा है, उससे शादी कर ली । मैंने नीना को बीच में टोकना उचित नहीं समझा । उसके दिल में नागपाल के प्रति सही या गलत जो भी धारणायें घर कर गई थीं उनका शब्दों में निकल जाना कुछ बुरा नहीं था । मैं धैर्य से उसकी आत्मा में बसे दुखों का ब्यौरा सुनता रहा ।

वह अपने गिलास से लम्बे-लम्बे घूंट भरकर बोली—"शुरू-शुरू में मैंने काफ़ी संघर्ष किया । मैंने उसे समझाने की चेष्टा भी की कि शादी

का मतलब यह तो नहीं होता कि पति या पत्नी अपने काम का क्षेत्र छोड़ कर अलग-अलग जा बैठें। यह कैसे मुमकिन है कि एक डाक्टर पत्नी विवाह के बाद प्रैक्टिस से हाथ खींचकर चौके-चूल्हे में झोंक दी जाए। पर मेरा यह अनुरोध उसके लिए बेकार था। लॉकर में जिस तरह उसके हीरे-जवाहरात हैं—गराज में गाड़ियाँ हैं—पहाड़ों पर और बम्बई में फ्लैट्स और बंगले हैं, मैं भी उसी तरह उसकी चल सम्पत्ति हूँ। मैं बहुत अच्छी तरह समझती हूँ कि फिल्मों में काम करने की इजाजत देकर वह अपनी कीमती प्रतिष्ठा को धक्का नहीं लगने देगा।

लगातार बोलते चले जाने से नीना के माथे की नसें तन गई थीं। वह उठकर इधर-उधर बेचैनी से घूमने लगी। मेरे लिए उसके पास से हटना भी उस समय तक सम्भव नहीं था, जब तक कि वह स्वयं ही अपने बिस्तर पर जाने को तैयार न हो जाए। कुल मिलाकर उसकी बातें सुनने के अलावा मेरे पास कोई अन्य उपाय नहीं रह गया था। दूसरी बात यह भी थी कि मैं एक पत्रकार की हैसियत से इस घर में मौजूद था और मुझे जो भी जानने-सुनने को मिल सकता था उसे प्राप्त करना था। एक पत्रकार की स्थिति बड़ी अजीब होती है—वह रोगी से सहानुभूति रखने वाला चिकित्सक तो हो सकता है लेकिन रोग की तरफ से आँखें बन्द नहीं कर सकता।

कुछ देर तक ध्यानमग्न होकर टहलने के बाद नीना ठीक मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और बहुत सादगी से पूछने लगी—„अताब दरवेश साहब, मैं आपसे एक बात पूछूँ ?"

"इस समय हम दो ही व्यक्ति यहाँ हैं—मैं और आप, एक-दूसरे से कुछ न कुछ पूछेंगे।" मैंने हँसकर उसको जवाब दिया।

आप जानते हैं कि ऐसे प्रसिद्ध पिता की सन्तान क्या बनती हैं ? बाप उनके साथ क्या व्यवहार करता है ?

"मैं आपको बतलाती हूँ। कामयाबी के शिखर पर पहुँचा हुआ बाप अपने बच्चों को भी लीक पर चलने वाली ज़िन्दगी बिताते देखना चाहता है। ऐसे बरगद के पेड़ के नीचे कोई दूसरा पौधा पनपते नहीं देखा गया। यह बड़े लोग बच्चों को खतरों में कभी नहीं कूदने देते—सिर्फ़ खतरों केप्रति आगाह करते हैं—सावधान करते हैं।"

मैंने अपने सिर के पिछले हिस्से में खुजलाते हुए पूछा—"लेकिन इसमें हानि भी क्या है नीना जी ?"

"हानि ? मैं बतलाती हूँ कि इसमें क्या हानि है ! ऐसे नामधारी बाप की सरपरस्ती में कोई भी आश्रित अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकता। मैं तो तय कर चुकी हूँ कि अपनी बेटियों को समझदार होते ही इस जेलखाने से भाग जाने की सलाह दूँगी ताकि वह अपनी इच्छित ज़िन्दगी तो जी सकें।"

वह पागलपन की सीमा तक बँधी हुई ज़िन्दगी के खिलाफ़ लग रही थी। अपने जीवन को एक खास क़िस्म की सुरक्षा की क़ैद में बन्दी देख कर उसके विचार न केवल विद्रोही हो उठे थे बल्कि वह भयानक रूप से प्रतिहिंसक भी हो गये थे। जब हद दर्जे की असफलता किसी के जीवन में घर कर जाती है तभी वह इस तरह की भयंकर बातें सोचता है। दुनिया में यदि किसी का एक भी शुभेच्छु मित्र बाकी होता है, एक जगह भी प्यार की छाया का आभास होता है तो कोई ऐसी आत्मघाती बातें नहीं सोचता। मैंने साहस करके उससे सवाल किया—"क्या आपने कभी तलाक के बारे में भी सोचा है ?"

"हाँ बहुत बार सोचा है लेकिन उसकी गुंजाइश बाकी नहीं है। उसने दुनिया के सामने अपनी इतनी उजली और आदर्श भरी तस्वीर रक्खी है कि मेरी ओर से तलाक़ का मामला उठने पर सब लोग मेरी ही निन्दा करेंगे। उसने सब लोगों को अपनी प्रतिष्ठा, बाहर से दिखाई देने वाली भलमनसाहत और रुपये-पैसे के बल पर खरीद रक्खा है। उसके विरुद्ध जाने पर मेरा साथ देने वाला कोई नहीं है। यहाँ तक कि मेरी माँ भी

उसका ही पक्ष लेगी। उसके नौकर-चाकर, परिचित और सहायक सभी उसे एक आला दर्जे का इन्सान समझते हैं।" नीना एक क्षण के लिए अपनी बात कहने से झिझकी लेकिन अगले क्षण उसने साफ़ शब्दों में कह ही दिया—"मेरे पास तो हर बार वह बस एक ही खास काम के लिए आता है—आप जान ही गये होंगे—मुझे मातृत्व प्रदान करके उसे शायद आध्यात्मिक सुख मिलता है।"

नीना के चेहरे पर विषाद और असंतोष का समुद्र लहरा रहा था। उसका गला सूख कर भर्राने लगा था। उसने मुझे सोच में डूबा देखकर कहा— 'चलिये छोड़िये इन ज़ख्मों को कुरेदने में क्या फ़ायदा—एक-एक गिलास ह्विस्की और ली जाए—नाक़ामियों के नाम पर एक-एक जाम और सही।"

मैंने हार्दिक संवेदना व्यक्त की—"मिसेज नागपाल अब रात बहुत बीत चुकी है। आपकी जगह मैं होता तो सारी बातें भुलाकर इस समय सिर्फ़ सोने के बारे में सोचता।"

वह बोली—"मैंने बहुत हठधर्मी करके आपको आज की रात सोने से वंचित कर दिया लेकिन यह मैंने जानबूझकर किया है। इसका मुझे अफ़सोस तो है पर आपके जैसा हमदर्द आदमी अपने क़रीब पाकर मैं अपनी भावनाओं पर कोई नियंत्रण नहीं कर सकी। मुझे उम्मीद है आज रात की इस तकलीफ़ के लिए आप मुझे माफ़ ही कर देंगे।"

"नहीं-नहीं" मैंने जल्दी से कहा—"पर मुझे सबसे ज्यादा खेद इस बात पर है कि आपका हृदय दुखों से भारी है और मैं आपकी कोई उपयुक्त सहायता नहीं कर पा रहा हूँ। सच में मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि वास्तविक स्थिति इतनी दुर्भाग्यपूर्ण होगी। आपकी संगति में मुझे सच्ची खुशी मिल रही है। मैं चाहता हूँ कि आप अपना दिल-दिमाग़ इतना परेशान न करें; हो सके तो इस समय एक झपकी लेने की कोशिश करें।"

"आल राइट मिस्टर मलिक! अपना यह गिलास खत्म करके मैं बस ऊपर सोने जा रही हूँ। कम से कम एक रात तो उससे मेरा पिण्ड छूट ही सकता है। वह तो मेरी हर रात को नर्क बना देता है।

शरीर सिर्फ़ आत्मा का ग़ुलाम होता है। उसमें ऐसा क्या होता है जो किसी को सुख-सन्तोष दे सके—कोई भी और कहीं भी मामूली-सी शर्तों पर एक जिस्म हासिल कर सकता है मगर आत्मा की गहराइयों को छुए बग़ैर देह को मसलते, कुचलते रहने में अब मुझे कोई दिलचस्पी बाक़ी नहीं रह गई है।"

नीना ने अपने गिलास की आधी शराब खत्म करके कहा—"मेहर-बानी करके आप मुझे अपने सिगरेट-केस से एक सिगरेट दें, बहुत देर से मुझे सिगरेट पीने की इच्छा हो रही है—अब मैं इसे और ज़्यादा मार नहीं सकती।"

मैंने सिगरेट-केस खोलकर नीना को सिगरेट पेश की और उसे जला भी दिया। तीन-चार लम्बे-लम्बे कश खींच कर नीना बोली—"मलिक साहब, जब वह लौटे तो आप उसे बतला दीजिये कि नीना के सिर में सख्त दर्द था और वह आपके इसरार पर सोने चली गई।"

मैंने गर्दन हिलाकर उसे तसल्ली दी और पूरी तरह आराम करने की ताक़ीद की।

नीना अपना गिलास खत्म करके लड़खड़ाते क़दमों से रेलिंग का सहारा लेते हुए ज़ीना चढ़ने लगी। ज़ीने के अन्त में मोड़ पर पहुँच कर उसने मेरी तरफ़ हाथ हिलाते हुए 'गुडनाइट' कहा और आँखों से ओझल हो गई।

नौ

नीना के जाने के बाद मैं प्रसिद्ध निर्देशक नागपाल के पूरे जीवन के ऊपर विचार करने लगा। उसने स्वयं अपना जीवन कठिन संघर्षों में शुरू किया था। बरसों तक सड़ी-गली गन्दी चालों में रहा था और स्टूडियोज में बरसों तक काम की तलाश में हलकान हुआ था लेकिन दाम्पत्य में भी उसे क्या मयस्सर हुआ। एक ही घर में एक ही छत के नीचे दोनों रहते हैं और दुनिया का हर ऐशो-आराम इन्हें मयस्सर है लेकिन दोनों को सिवाय असन्तोष के और क्या मिलता है। कहने को क्या कुछ नहीं है—रुपया-पैसा, सन्तान, सुन्दरता, लम्बा-चौड़ा आराम-देह बंगला और सबके ऊपर दिशाओं में गूंजता हुआ एक जबरदस्त नाम लेकिन दिलों से चैन गायब है—आँखों से नींद उड़ चुकी है। दोनों की जिन्दगी एक सूखी अभिशप्त नदी बनकर रह गई है जिसमें शायद ही कभी भावनाओं का जल प्रवाहित होता हो—महज कड़वाहटों की रेत उड़ती रहती है।

नागपाल-परिवार की परिस्थितियों पर विचार करते-करते मेरा जिस्म और आँखें जवाब देने लगीं और मैं सोफे पर टेक लगाकर बैठे-बैठे ही सो गया।

रात को क़रीब साढ़े तीन और चार के बीच मीटिंग की अध्यक्षता करके मिस्टर नागपाल लौटे और मुझे सोफे पर ही ऊँघते हुए देखकर बोले, "मुझे आज रात के लिए भारी अफसोस है मलिक साहब—मैं आपको 'कम्पनी' नहीं दे सका इसके लिए मुझे माफ करें। लगता है नीना ने आपको काफी निराश किया। कभी-कभी वह यकायक बहुत सिक (बीमार) हो जाती है। मगर वह दिन में पूरी तरह आराम नहीं

करती तो रात के समय बात-चीत में शरीक होने के लिए उत्साहित नहीं हो पाती। बहरहाल मैं देख ही रहा हूँ कि यह रात आपकी बहुत बुरी गुज़री। मैं चाहते हुए भी आपके साथ बैठने का मौक़ा नहीं पा सका। एक तरह से यह मेरी ज़बरदस्त बदक़िस्मती रही।"

मुझे बहुत कसकर नींद आ रही थी लेकिन इसके बावजूद मुझे नीना की सोते समय की ताक़ीद पूरी तरह याद थी। मैं पूरी तरह सचेत था और इस बात के लिए तत्पर भी था कि नीना को आज की रात जैसे भी हो नागपाल से मुझे बचाना है। यह बहुत विचित्र परिस्थिति होती है कि आप एक परिवार में महज़ एक मेहमान की हैसियत से उपस्थित होते हैं लेकिन पति या पत्नी आप पर कोई बहुत व्यक्तिगत दायित्व छोड़ देते हैं। मुझे नीना के वे शब्द अपनी चेतना में बजते प्रतीत हो रहे थे जो उसने सोने जाते समय मुझसे कहे थे "कम से कम एक रात तो उससे मेरा पिण्ड छूट ही सकता है—वह तो मेरी हर रात को नर्क बना देता है।"

मैंने नागपाल से कहा, "आप मुझे लेकर क़तई परेशान न हों मिस्टर नागपाल। आपकी पत्नी बहुत सभ्य, दिलचस्प और बाशऊर महिला हैं। उन्होंने मुझे बहुत अच्छी कम्पनी दी है। मैंने उनसे घन्टों बातें कीं और उन्हें दुनिया की बहुत-सी चीज़ों में दिलचस्पी लेते हुए पाया। थोड़ी देर पहले उनके सिर में भयानक पीड़ा होने लगी तो वह मेरे इस-रार पर ही सोने चली गई हैं।"

नागपाल ने बहुत ध्यान से मेरा चेहरा देखा जैसे वह वास्तविकता का पता लगाना चाहते हों। वह कई क्षण तक बग़ैर पलकें झपके मेरे चेहरे पर सच्चाई तलाश करते रहे और अन्त में मेरी बात से आश्वस्त भी हो गये किन्तु साथ ही वह कुछ परेशान भी नज़र आये। अपना सिगार केस हाथ में लेकर इधर-उधर करते हुए बोले, "पता नहीं क्या बात है उसे इधर अक्सर सिरदर्द की शिकायत रहने लगी है। हिन्दुस्तान के करीब-करीब सभी स्पेशलिस्टों को मैं नीना को दिखा चुका हूँ मगर पूरे 'इनवेस्टीगेशन' के बावजूद कोई खास फ़र्क़ पड़ता नज़र नहीं आ रहा है। मेरा खयाल है वह बग़ैर वजह हर समय कुछ-न-कुछ सोचती

रहती है।"

मैंने नागपाल को तसल्ली देने की गरज से कहा, "आप ठीक सोचते हैं—यह सिरदर्द सोचते रहने की वजह से ही होता होगा।"

"देखना पड़ेगा कि इसकी क्या वजह है। यों उसकी सेहत हर तरह से नार्मल है—उम्र भी नज़र नहीं आती पर भीतर उसके कुछ है जरूर जो उसके जिस्म को दिनोंदिन खोखला करता जा रहा है।" नागपाल के मस्तक पर चिन्ता की कई रेखायें बहुत स्पष्टता से उभर आईं।

"आदमी की देह एक अजीब धोखा है नागपाल साहब! आप बाहर से देखकर कुछ अन्दाज नहीं लगा सकते। यही वजह है कि आदमी से ज्यादा धोखेबाज इस दुनिया में कोई प्राणी नहीं है।"

नागपाल मेरी बात से कुछ ग़मगीन हो गए और बोले, "पता नहीं आदमी की जिन्दगी भी क्या अजीब शै है। आज जिसके लिए आप मरने-मिटने को भी तैयार हैं वही कल आपको न जाने क्यों सन्देह की आँखों से देखने लगता है। थोड़ा-सा वक्त गुजरता है और आदमी बाहर-भीतर से बिल्कुल बदला जाता है। मुझे कभी-कभी अपने ऊपर भी शक होने लगता है कि क्या मैं वही आदमी हूँ जो एक जमाने में अपने आप से साक्षात्कार करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता था—आज यह वक्त आ गया है कि मैं खुद से भी मुँह छिपाने की कोशिश करता हूँ। यह तो मैं यह मानने लगा हूँ कि एक आदमी में न जाने कितने आदमी हैं—इस एक ही दुनिया में न जाने कितनी दुनिया हैं जो हर पल बदलती रहती हैं।"

मैंने नागपाल को गम्भीर चर्चा का सूत्रपात करते देखा तो मैं उन्हें समझाने की गरज से बोला, "आप बेकार परेशान न हों नागपाल साहब। आदमी अपनी सीमाओं को छोड़कर आखिर कहाँ जा सकता है? अगर गलतफहमियाँ दूर कर सकने का कोई भी रास्ता नजर आता हो तो आदमी को अपने आस-पास गलतफहमियों को नहीं पनपने देना चाहिए।"

"आप ठीक कहते हैं अपने आस-पास आदमी को गलतफहमियों और नाराजगी को नहीं बढ़ने देना चाहिए वर्ना वह थोड़े समय में ही अमरबेल की तरह व्यक्तित्व को घेरकर उसकी बढ़ोत्तरी को रोक लेती है।"

नागपाल ने मेरी बात को ही आगे बढ़ाया।

"आप मुझे क्षमा करेंगे—मैं व्यक्तिगत तौर पर आपसे कुछ नहीं कह रहा हूँ—आपका इस बात से कोई सम्बन्ध भी नहीं है—इसको मैं सामान्य तौर पर ही आपके सामने रख रहा हूँ।" मेरी बात को पूरी सुने बग़ैर ही नागपाल बोले—"आप इतनी सारी माफियां मांगे बिना ही आपसी बातचीत जारी रखें; अगर वह व्यक्तिगत भी होगी तो मुझे कुछ बुरा नहीं लगेगा बहरहाल आप मेरे खैरख्वाह ही तो हैं।"

"नहीं वह बात नहीं है—मुझे सिर्फ़ संकोच है—क्योंकि बैलचर होने की वजह से 'कन्जुगल लाइफ़ (दाम्पत्य) के बारे में मैं कुछ नहीं जानता हूँ।"

"यह ज़रूरी भी नहीं है कि आपने दाम्पत्य न भोगा हो तो आप उसकी बारीकियों से भी परिचय न रखते हों।"

मैंने अपनी बात अव्यक्तिगत स्तर पर लाकर सामान्य ढंग से ही कहनी शुरू की, "जहाँ तक मैं समझता हूँ स्त्री-पुरुष का रिश्ता हो चाहे दोस्ती का—आपसी समझ के बिना कोई भी सम्बन्ध कहीं-न-कहीं जाकर गड़बड़ाने लगता है। यह भी कतई ज़रूरी नहीं है कि आप एक ईमानदार आदमी हों तो आपको हमेशा वैसा ही समझा जाय। दरअसल हमारा 'स्टैंड' हमेशा साफ नज़र आना चाहिए।"

"वह तो होना ही चाहिए" नागपाल ने अपनी गर्दन हिलाकर मुझे समर्थन दिया।

पर गड़बड़ी इतने पर भी हो ही जाती है नागपाल साहब। हम अपने निकट रहने वालों की मानसिक तौर पर अनजाने में ही उपेक्षा कर जाते हैं। हमारा व्यवहार परस्पर कभी-कभी इतना ठण्डा होने लगता है कि मित्रों के बीच में भी बग़ैर वजह ग़लतफ़हमियाँ जड़ जमाने लगती हैं। दरअसल हम यह समझते हैं कि पारस्परिक रिश्तों को निभाने के लिए केवल पारस्परिक उत्तरदायित्व पूरे कर लेना काफ़ी है मगर मेरा ख्याल है कि दायित्वों के निर्वाह के साथ-साथ हमें शब्दों में भी कंजूस नहीं होना चाहिए।"

"लेकिन जहाँ गहरे प्यार के रिश्ते होते हैं वहाँ शब्दों की ज़रूरत

भी क्या है मलिक साहब ?" नागपाल ने मेरी धारणा पर शंका व्यक्त की ।

"शब्दों की बहुत जरूरत है जनाब वर्ना रिश्तों में गूंगापन समाने लगता है—क्या आप किसी गूंगी औरत का सम्पूर्ण समर्पण पाकर 'फुलफिलमैंट' (सम्पूर्णता की अनुभूति) महसूस कर सकते हैं ?"

नागपाल मेरे प्रश्न पर चुप होकर कुछ सोचने लगे, फिर बोले "शायद यह भावना तो मन में होगी ही कि काश ! इसके पास इतने अच्छे दिल के साथ एक मीठी जुबान भी होती ।"

"बस यही मैं कहना चाहता हूँ कि यह कुदरत का मनुष्य को एक बहुत बड़ा तोहफा है जिसे हम अक्सर नजरन्दाज करने लगते हैं । हमें लगने लगता है शब्द बेकार हैं, खोखले और धोखेबाज हैं । हां शब्द भी थोथे होते हैं लेकिन अगर उनके पीछे भावना की पवित्रता हो तो शब्दों का प्रभाव मन्त्रों के समान गहरा होता है ।"

"आपने मुझे आज सोचने का नया नजरिया दिया है मलिक साहब, मैंने बहुत वक्त से इस तरफ़ कोई गौर नहीं किया । इस 'आइडिया' को डेवलप करके एक अच्छी फिल्म बनाई जा सकती है । आप कुछ लिखिये इस सब्जैक्ट को लेकर । मैं चाहूँगा कि आप शब्दों और जुबान के महत्त्व को सामने रखने वाली कोई लाजवाब कहानी हमें दें ।"

मैंने हँसते हुए कहा—"मैं कोई अफसाना-निगार नहीं हूँ जनाब—अखबारी पत्रकारिता का एक कलमघसीट हूँ । मुझसे आप इतनी बड़ी उम्मीदें न लगाइये जनाब ! और मैं आपकी इस बात से भी सहमत नहीं हूँ कि आपको भाषा या शब्दों के महत्त्व का ज्ञान नहीं है । आप रात-दिन फिल्में बनाते हैं, मनुष्य के मन की गहराइयों में डूबकर भाव और भावनाओं के संसार का निर्माण करते हैं । एक-एक संवाद की सार्थकता को महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए उसे कई प्रकार से बोलकर अथवा बुलवा कर देखते हैं । भला मैं कैसे स्वीकार कर सकता हूँ कि आपको शब्दों की गरिमा का ज्ञान नहीं है ।"

नागपाल ने धीरज से मेरी बात सुनकर कहा—"आप भी ठीक कहते हैं और ग़लत मैं भी नहीं कहता हूँ । यह सही है कि मैं शब्दों की

दुनिया में ही हर समय तैरा करता हूं लेकिन तैराक ही डूबता भी है। आपने महसूस किया होगा कि जब आप ड्राइव करते हैं तो उसमें आप को कोई दिक्कत नहीं आती। कभी-कभी बहुत तेज रफ़्तार से गाड़ी चलाते समय सड़क पर कोई ताक़ीद नज़र पड़ जाती है 'धीरे चलाइये तेज रफ़्तार से दुटर्घना हो सकती है।' तब आपको इस सूचना से ज्ञान मिलता है कि बग़ैर जरूरत दुटर्घना में फंसने से क्या लाभ; थोड़ी देर में ही पहुंच जायेंगे तो कौन-सा आसमान फट जायेगा। क्या आप कह सकते है कि आप सड़क के मोड़ पर लटकी इस ताकीद से पहले से परिचित नहीं थे या तेज रफ़्तार से गाड़ी चलाने के नतीजों से वाक़िफ नहीं थे ? आप और में क्या नहीं जानते लेकिन बाज वक्त मामूली-सी बात भी दिमाग से उतर जाती है। उस वक्त वह मामूली लगने वाली बात आपको कोई याद दिला देता है तो आप भारी ग़लती से बच जाते हैं।"

"ठीक है हम बहस के सही मुद्दे पर पहुंच गये। मैं यही कहना चाहता था कि कोई ताक़ीद हमारे भीतर से यदा-कदा उभरती रहनी चाहिये और हमारे आपसी रिश्तों की कोमलता को उसे मज़बूत बनाते रहना चाहिये।"

नागपाल बातों के मूड में थे। वह मेरी बात से उत्साहित होकर बोले—"अब आपसी समझ की यही मिसाल लीजिये कि कल तीसरे पहर तक आप मुझे सरसरी तौर पर जानते थे और मैं भी सिर्फ आपके नाम भर से वाक़िफ़ था लेकिन चन्द घंटों की बात-चीत और एक-दूसरे को समझने की कोशिश ने हम लोगों के सम्बन्धों को एक ख़ास दिशा दे दी।"

मैंने नागपाल की बात से अपनी सहमति व्यक्त की और कहा, "यह सारी दुनिया ही इस पारस्परिक समझ पर बेस करती है नागपाल साहब ! और बड़े-बड़े राष्ट्रों के अन्तर्राष्ट्रीय तनाव भी आखिर इसी बिन्दु पर हल होते हैं, फिर छोटी-छोटी पारिवारिक समस्याओं का दूसरा कोई निदान क्या हो सकता है ?" इसके बाद मैंने बात का रुख़ दूसरी तरफ़ मोड़ दिया कि कहीं हम लोगों की बातचीत का आधार व्यक्तिगत स्तर पर न आ जाय "हां, आपने यह तो बतलाया ही नहीं कि आपकी मीटिंग

कैसी रही ! क्या आप ठीक समय से पहुँच गये थे—रास्ते में तो कोई अड़चन नहीं आई ?"

सोफ़े पर पीठ टिकाते हुए उन्होंने अपने पैर आगे की तरफ़ फैलाकर अपना सिगार जला लिया और बोले—"पहुँचने में कोई दिक़्क़त नहीं हुई—लोग मेरा बेताबी से इन्तज़ार कर रहे थे। उन लोगों का प्लान एक बड़ी फ़ैक्टरी एस्टेब्लिश करने का है। उन लोगों ने मुझे हर तरफ़ से घेर लिया है। मैं कहता हूँ मैं फ़िल्म इन्डस्ट्री का आदमी हूँ—कल-कारख़ानों से मेरा क्या सरोकार, मगर वह लोग हैं कि मेरी कोई बात ही नहीं सुनना चाहते। बहरहाल…।"

नागपाल ने अपनी टाई की गाँठ ढीली की और कोट उतारकर बाज़ू की कुर्सी पर डाल दिया। वह कुछ मिनटों तक चुपचाप सिगार पीते रहे और फिर घनिष्ठता व्यक्त करते हुए बोले, "मुझे वाकई रह-रहकर अफ़सोस हो रहा है कि आपके साथ मैं पूरे वक्त नहीं रह सका। आपके जैसे 'जीनियस' के साथ एक दिन रहने में ही जो मिल सकता है वह लोगों में बरसों तक सम्बन्ध बनाये रखने पर भी नहीं मिल सकता। मैं आपसे एक आग्रह जरूर करूँगा कि भविष्य में आप थोड़ा-सा वक्त मेहरबानी करके कभी-कभी मुझे देना न भूलें।"

"यह भी भला कोई कहने की बात है नागपाल साहब ? मैं आपसे हमेशा मिलने में खास गौरव का अनुभव करूँगा।"

नागपाल ने मेज पर रखी व्हिस्की की बोतल पर आँखें डालकर कहा, "आपने थोड़ी-बहुत पी भी या नहीं ?"

मैंने बोतल की तरफ़ संकेत करके कहा, "आप यह नहीं कह सकते कि व्हिस्की को मेरे से कोई शिकायत होगी। मैंने उसे भरपूर कन्ज़्यूम किया है।"

नागपाल सन्तोष व्यक्त करते हुए बोले, "देट्स वेरी गुड ! चलो मुझे खुशी है कि बोतल कुछ तो खाली हुई। मैं समझता हूँ नीना ने भी आपको अपनी कम्पनी दी होगी। वैसे मैं यह भी मानता हूँ कि अगर कोई भी साथ देने वाला न हो तब कुछ मौकों पर शराब खुद एक अच्छा साथी साबित होती है।"

मैं नागपाल की बात सुनकर यकायक न जाने क्यों सोचने लगा। कोई चीज़ मेरी पूरी चेतना में गूंजती-सी लगी। लेकिन तभी मुझे वह बात याद आ गई जो नागपाल ने बाहर जाने से पहले नीना को लक्ष्य करके कही थी "पीना हमेशा कम्पनी के लिए होना चाहिये—बग़ैर मतलब पीना और अकेले पीना बहुत बुरा होता है।" और इस समय नागपाल अपने को अपने ही शब्दों से काट रहे थे 'अगर कोई भी साथ देने वाला न हो तब···शराब खुद एक अच्छा साथी साबित होती है। पर मैंने नागपाल के इस पारस्परिक विरोधी वक्तव्य के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा बल्कि बहुत उत्साह प्रकट करते हुए बोला, "मिस्टर नागपाल, आज मैंने जी भर कर पी ली है। ऐसी शानदार जगह और शराब साथ-साथ हमेशा कहाँ मिलती है? हो सकता है मैं लालच की वजह से कुछ ज़्यादा ही ढाल गया होऊँ। इतनी बेदर्दी से पीने के लिए आप मुझे माफ़ करेंगे। मैं करता भी क्या आखिर सारा वातावरण ही मेरे पीने के पक्ष में था। मुझे यह रात हमेशा याद रहेगी। सबसे बड़ी विशेषता तो इस माहौल की यह है कि इतनी गटक जाने के बाद भी मैं स्वयं को एकदम तरो-ताज़ा महसूस कर रहा हूँ। अब मुझे सौ फ़ीसदी यह अहसास हो रहा है कि लालच वाक़ई बुरी बला है और फिर वह भी अमृत सरीखी दारू का।"

नागपाल के चेहरे पर गहरा सन्तोष दिखलाई पड़ा और वह बहुत दयालु भाव से बोले "आपने बहुत मेहरबानी की। मैं तो ऐसे ही मेहमानों को पसन्द करता हूँ जो 'नीना विला' को अपना घर ख़याल करते हैं। हम हिन्दुस्तानियों की ज़िन्दगी में सब कहीं इतना तकल्लुफ़ रहता है कि हम खुलकर बहुत कम आनन्द प्राप्त करते हैं; हर जगह दबे-भिचे रहते हैं।" इसके बाद उन्हें एकाएक मेरे यहाँ आने के उद्देश्य का ख़याल आ गया और वह बोले "आपने लोगों की ज़िन्दगी की गहराइयों में उतरकर जो कुछ भी लिखा है इत्तिफ़ाक से वह मेरी नज़रों से गुज़रा है। आपके लेखन में गहरी समझदारी के साथ-साथ लोगों के बारे में ज़बरदस्त हमदर्दी का भी अहसास रहता है। विदेशी लेखकों में तो मैंने इस चीज़ को काफ़ी सही ढंग से व्यक्त होते देखा है।"

मैंने कहा, "विदेशी लोग अपने काम में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें घरेलू माहौल में सकून ढूंढने की ज्यादा जरूरत महसूस नहीं होती। इसके अलावा वह इस बात की भी कम ही परवाह करते हैं कि लोग उनके बारे में क्या कुछ कहते हैं। उनका काम उनके घर की जिन्दगी से प्रभावित नहीं होता है पर हम भारतीयों की स्थिति इस दिशा में एकदम उल्टी है। हम लोगों की व्यक्तिगत जिन्दगी का हमारे काम पर सीधा असर पड़ता है। चाहे हम किसी भी क्षेत्र में काम करें हमारे पारिवारिक सम्बन्ध हमारे काम में पूरी तरह 'रेफ्लेक्ट' होते हैं।"

"आप सही कहते है क्योंकि हम लोग अभी तक अपने घर-परिवार से टूटे नहीं हैं। घर बसाकर रहना हमारे खून और संस्कारों में है मसलन एक पति, पत्नी से सन्तुष्ट नहीं है लेकिन वह फिर भी इसी बात की कोशिश करता है कि जैसे भी हो उनका साथ खिंचता रहे। यही हालत पत्नी की भी होती है पर विदेशों में यह हालत ज्यादा देर खींचने की जरूरत पति-पत्नी में से कोई महसूस नहीं करता। हालांकि बहुत कुछ आर्थिक कारणों पर निर्भर करता है। जब यहां औरतें 'फाइनेंशली' आत्मनिर्भर हो जायेंगी तो देख लीजियेगा यहां भी परिवार तड़क कर टूटने लगेंगे।"

अपनी बात खत्म करके नागपाल सोफे से उठते हुए बोले, "चलिये मैं आपको आपके कमरे में पहुंचा दूं हालांकि आप अब ज्यादा देर सो तो नहीं पायेंगे। इट इज आलरेडी डे डान (यद्यपि अब लगभग सुबह हो रही है।")

मैं भी सोफे से उठकर खड़ा हो गया और उनके पीछे चलते हुए बोला, "आपके और आपके घरेलू वातावरण के बारे में मुझे एक ही रात में इतना कुछ मालूम हो गया है कि जानने के लिए अब कोई खास बात बाकी नहीं रह गई है।"

मेरे कथन पर नागपाल ने मुड़कर मेरा चेहरा देखा शायद उन्होंने मेरे शब्दों में व्यंग का पुट महसूस किया था लेकिन मेरे चेहरे पर वैसा कुछ नहीं था और मैं यह बात सहज रूप में ही कह रहा था।

मैं नागपाल की बात सुनकर यकायक न जाने क्यों सोचने लगा। कोई चीज़ मेरी पूरी चेतना में गूंजती-सी लगी। लेकिन तभी मुझे वह बात याद आ गई जो नागपाल ने बाहर जाने से पहले नीना को लक्ष्य करके कही थी "पीना हमेशा कम्पनी के लिए होना चाहिये—बग़ैर मतलब पीना और अकेले पीना बहुत बुरा होता है।" और इस समय नागपाल अपने को अपने ही शब्दों से काट रहे थे 'अगर कोई भी साथ देने वाला न हो तब···शराब खुद एक अच्छा साथी साबित होती है। पर मैंने नागपाल के इस पारस्परिक विरोधी वक्तव्य के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा बल्कि बहुत उत्साह प्रकट करते हुए बोला, "मिस्टर नागपाल, आज मैंने जी भर कर पी ली है। ऐसी शानदार जगह और शराब साथ-साथ हमेशा कहाँ मिलती है? हो सकता है मैं लालच की वजह से कुछ ज्यादा ही ढाल गया होऊँ। इतनी बेदर्दी से पीने के लिए आप मुझे माफ़ करेंगे। मैं करता भी क्या आखिर सारा वातावरण ही मेरे पीने के पक्ष में था। मुझे यह रात हमेशा याद रहेगी। सबसे बड़ी विशेषता तो इस माहौल की यह है कि इतनी गटक जाने के बाद भी मैं स्वयं को एकदम तरो-ताज़ा महसूस कर रहा हूँ। अब मुझे सौ फ़ीसदी यह अहसास हो रहा है कि लालच वाक़ई बुरी बला है और फिर वह भी अमृत सरीखी दारू का।"

नागपाल के चेहरे पर गहरा सन्तोष दिखलाई पड़ा और वह बहुत दयालु भाव से बोले "आपने बहुत मेहरबानी की। मैं तो ऐसे ही मेहमानों को पसन्द करता हूं जो 'नीना विला' को अपना घर ख़याल करते हैं। हम हिन्दुस्तानियों की ज़िन्दगी में सब कहीं इतना तकल्लुफ़ रहता है कि हम खुलकर बहुत कम आनन्द प्राप्त करते हैं; हर जगह दबे-भिचे रहते हैं।" इसके बाद उन्हें एकाएक मेरे यहाँ आने के उद्देश्य का ख़याल आ गया और वह बोले "आपने लोगों की ज़िन्दगी की गहराइयों में उतरकर जो कुछ भी लिखा है इत्तिफ़ाक से वह मेरी नज़रों से गुज़रा है। आपके लेखन में गहरी समझदारी के साथ-साथ लोगों के बारे में ज़बरदस्त हमदर्दी का भी अहसास रहता है। विदेशी लेखकों में तो मैंने इस चीज़ को काफ़ी सही ढंग से व्यक्त होते देखा है।"

मैंने कहा, "विदेशी लोग अपने काम में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें घरेलू माहौल में सकून ढूंढने की ज्यादा जरूरत महसूस नहीं होती। इसके अलावा वह इस बात की भी कम ही परवाह करते हैं कि लोग उनके बारे में क्या कुछ कहते हैं। उनका काम उनके घर की जिन्दगी में प्रभावित नहीं होता है पर हम भारतीयों की स्थिति इस दिशा में एकदम उल्टी है। हम लोगों की व्यक्तिगत जिन्दगी का हमारे काम पर सीधा असर पड़ता है। चाहे हम किसी भी क्षेत्र में काम करें हमारे पारिवारिक सम्बन्ध हमारे काम में पूरी तरह 'रेफ्लेक्ट' होते हैं।"

"आप सही कहते हैं क्योंकि हम लोग अभी तक अपने घर-परिवार से टूटे नहीं हैं। घर बसाकर रहना हमारे खून और संस्कारों में है मसलन एक पति, पत्नी से सन्तुष्ट नहीं है लेकिन वह फिर भी इसी बात की कोशिश करता है कि जैसे भी हो उनका साथ खिंचता रहे। यही हालत पत्नी की भी होती है पर विदेशों में यह हालत ज्यादा देर खींचने की जरूरत पति-पत्नी में से कोई महसूस नहीं करता। हालांकि बहुत कुछ आर्थिक कारणों पर निर्भर करता है। जब यहां औरतें 'फाइनेन्सली' आत्मनिर्भर हो जायेंगी तो देख लीजियेगा यहां भी परिवार तड़क कर टूटने लगेंगे।"

अपनी बात खत्म करके नागपाल सोफे से उठते हुए बोले, "चलिये मैं आपको आपके कमरे में पहुंचा दूं हालांकि आप अब ज्यादा देर सो तो नहीं पायेंगे। इट इज आलरेडी डे डान (यद्यपि अब लगभग सुबह हो रही है।")

मैं भी सोफे से उठकर खड़ा हो गया और उनके पीछे चलते हुए बोला, "आपके और आपके घरेलू वातावरण के बारे में मुझे एक ही रात में इतना कुछ मालूम हो गया है कि जानने के लिए अब कोई खास बात बाकी नहीं रह गई है।"

मेरे कथन पर नागपाल ने मुड़कर मेरा चेहरा देखा शायद उन्होंने मेरे शब्दों में व्यंग का पुट महसूस किया था लेकिन मेरे चेहरे पर वैसा कुछ नहीं था और मैं यह बात सहज रूप में ही कह रहा था।

मैं नागपाल की बात सुनकर यकायक न जाने क्यों सोचने लगा। कोई चीज़ मेरी पूरी चेतना में गूंजती-सी लगी। लेकिन तभी मुझे वह बात याद आ गई जो नागपाल ने बाहर जाने से पहले नीना को लक्ष्य करके कही थी "पीना हमेशा कम्पनी के लिए होना चाहिये—बग़ैर मतलब पीना और अकेले पीना बहुत बुरा होता है।" और इस समय नागपाल अपने को अपने ही शब्दों से काट रहे थे 'अगर कोई भी साथ देने वाला न हो तब···शराब ख़ुद एक अच्छा साथी साबित होती है। पर मैंने नागपाल के इस पारस्परिक विरोधी वक्तव्य के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा बल्कि बहुत उत्साह प्रकट करते हुए बोला, "मिस्टर नागपाल, आज मैंने जी भर कर पी ली है। ऐसी शानदार जगह और शराब साथ-साथ हमेशा कहाँ मिलती है? हो सकता है मैं लालच की वजह से कुछ ज़्यादा ही ढाल गया होऊँ। इतनी बेदर्दी से पीने के लिए आप मुझे माफ़ करेंगे। मैं करता भी क्या आखिर सारा वातावरण ही मेरे पीने के पक्ष में था। मुझे यह रात हमेशा याद रहेगी। सबसे बड़ी विशेषता तो इस माहौल की यह है कि इतनी गटक जाने के बाद भी मैं स्वयं को एकदम तरो-ताजा महसूस कर रहा हूँ। अब मुझे सौ फ़ीसदी यह अहसास हो रहा है कि लालच वाक़ई बुरी बला है और फिर वह भी अमृत सरीखी दारू का।"

नागपाल के चेहरे पर गहरा सन्तोष दिखलाई पड़ा और वह बहुत दयालु भाव से बोले "आपने बहुत मेहरबानी की। मैं तो ऐसे ही मेहमानों को पसन्द करता हूँ जो 'नीना विला' को अपना घर ख़याल करते हैं। हम हिन्दुस्तानियों की जिन्दगी में सब कहीं इतना तकल्लुफ़ रहता है कि हम खुलकर बहुत कम आनन्द प्राप्त करते हैं; हर जगह दबे-भिचे रहते हैं।" इसके बाद उन्हें एकाएक मेरे यहाँ आने के उद्देश्य का ख़याल आ गया और वह बोले "आपने लोगों की ज़िन्दगी की गहराइयों में उतरकर जो कुछ भी लिखा है इत्तिफ़ाक से वह मेरी नजरों से गुज़रा है। आपके लेखन में गहरी समझदारी के साथ-साथ लोगों के बारे में ज़बरदस्त हमदर्दी का भी अहसास रहता है। विदेशी लेखकों में तो मैंने इस चीज़ को काफ़ी सही ढंग से व्यक्त होते देखा है।"

मैंने कहा, "विदेशी लोग अपने काम में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें घरेलू माहौल में सकून ढूँढने की ज्यादा जरूरत महसूस नहीं होती। इसके अलावा वह इस बात की भी कम ही परवाह करते हैं कि लोग उनके बारे में क्या कुछ कहते हैं। उनका काम उनके घर की जिन्दगी से प्रभावित नहीं होता है पर हम भारतीयों की स्थिति इस दिशा में एकदम उल्टी है। हम लोगों की व्यक्तिगत जिन्दगी का हमारे काम पर सीधा असर पड़ता है। चाहे हम किसी भी क्षेत्र में काम करें हमारे पारिवारिक सम्बन्ध हमारे काम में पूरी तरह 'रेफ्लेक्ट' होते हैं।"

"आप सही कहते है क्योंकि हम लोग अभी तक अपने घर-परिवार से टूटे नहीं हैं। घर बसाकर रहना हमारे खून और संस्कारों में है मसलन एक पति, पत्नी से सन्तुष्ट नहीं है लेकिन वह फिर भी इसी बात की कोशिश करता है कि जैसे भी हो उनका साथ खिंचता रहे। यही हालत पत्नी की भी होती है पर विदेशों में यह हालत ज्यादा देर खींचने की जरूरत पति-पत्नी में से कोई महसूस नहीं करता। हालांकि बहुत कुछ आर्थिक कारणों पर निर्भर करता है। जब यहाँ औरतें 'फाइनेन्सली' आत्मनिर्भर हो जायेंगी तो देख लीजियेगा यहाँ भी परिवार तड़क कर टूटने लगेंगे।"

अपनी बात खत्म करके नागपाल सोफे से उठते हुए बोले, "चलिये मैं आपको आपके कमरे में पहुँचा दूँ हालांकि आप अब ज्यादा देर सो तो नहीं पायेंगे। इट इज आलरेडी डे टान (यद्यपि अब लगभग सुबह हो रही है।")

मैं भी सोफे से उठकर खड़ा हो गया और उनके पीछे चलते हुए बोला, "आपके और आपके घरेलू वातावरण के बारे में मुझे एक ही रात में इतना कुछ मालूम हो गया है कि जानने के लिए अब कोई खास बात बाकी नहीं रह गई है।"

मेरे कथन पर नागपाल ने मुड़कर मेरा चेहरा देखा शायद उन्होंने मेरे शब्दों में व्यंग का पुट महसूस किया था लेकिन मेरे चेहरे पर वैसा कुछ नहीं था और मैं यह बात सहज रूप में ही कह रहा था।

"आप एक लाइफ़-स्केच तो तैयार कर ही सकते हैं, मेरा मतलब है आपको आऊट लाइन तो मिल ही गई होगी।" उन्होंने शालीनता से पूछा।

"लाइफ़-स्केच तो बहुत छोटी चीज़ है—मुझे तो इतना मसाला मिल गया है कि मैं एक पूरी बायग्राफ़ी (जीवनी) लिख सकता हूं। यह जीवनी हमारी पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित होगी और बाद में एक पुस्तक की शक्ल में छपाने की व्यवस्था की जायेगी।"

नागपाल ने एक क्षण की हिचकिचाहट के बाद कहा, "मुझे अखबार के प्रतिनिधियों से मिलने में कभी-कभी बहुत उलझन महसूस होती है। उनकी उपस्थिति में मैं अक्सर अपना मुंह बन्द रखता हूं पर आप जैसे समझदार पत्रकार की बात अलग है। आप हमेशा गहराई की तरफ़ जाकर मानवीय सम्बन्धों को तरजीह देते हैं।" फिर उन्होंने शब्दों की गर्मी के साथ मेरी पीठ थपथपाई "मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि 'पर्सनेलटीज़' पत्रिका का पत्रकार अपनी ज़िम्मेदारी बख़ूबी पहचानता है।"

चलते-चलते हम लोग गैलरी पार करके बाहर निकल गये और गेस्ट रूम तक जा पहुंचे। मुझे गेस्ट रूम में पहुंचाकर वह बोले, "अच्छा मिस्टर मलिक, अब कुछ घण्टों के लिए अलविदा।"

दस

लगभग दस बजे मैं आँखें मलते हुए उठा। नौकर मेरे लिए चाय लेकर आया था। चाय बनाते हुए वह मुझसे बोला, "साहब ने आपको सलाम भेजा है।"

मैंने पूछा—"नागपाल साहब को उठे हुए कितना वक्त हो गया।"

"साहब तो मीटिंग से लौटने के बाद बिस्तर पर गये ही नहीं हैं। वह पिछले तीन-चार घंटे से अपने दफ्तर में बैठे काम कर रहे हैं।" नौकर की इस सूचना पर मुझे बहुत हैरानी हुई। नागपाल आदमी नहीं बल्कि एक मशीन है जो बिगड़ जाने से पहले एक क्षण को रुकना नहीं जानती। पता नहीं वह कौन-सी अद्भुत प्रेरणा है जो उसे हर समय काम में डुबाये रखती है! मुझे लगा नागपाल को किसी बाहरी शक्ति की प्रेरणा से सरोकार नहीं है, वह अपने भीतर ही इतना आश्वस्त है कि अनथक काम करता रह सकता है।

मैंने चाय पी और दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर अपनी डायरी में पूरी दैनन्दिनी लिखने के लिए बैठ गया। यद्यपि विस्तार से लिख सकने की तो इस समय गुन्जाइश नहीं थी लेकिन सूत्र रूप में लिख लेना बहुत आवश्यक था।

मैं अभी अपना काम पूरा भी नहीं कर पाया था कि नौकर मुझे बुलाने आ गया "साहब नाश्ते पर आपका इन्तजार कर रहे हैं।" मैंने अपनी डायरी ब्रीफ़केस के हवाले की और नौकर के साथ चल पड़ा।

नागपाल नाश्ते की मेज पर बैठे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मुझे देखकर मुस्कराते हुए बोले "आपको कुछ देर सोना नसीब हो पाया या नहीं ?"

मैंने उनके चेहरे और कपड़ों पर नज़र डाली। वह नहा-धोकर तैयार बैठे थे और उनकी आँखों तथा चेहरे पर थकान नाम को भी नहीं थी। यह क़तई नहीं लगता था कि वह शख्श पूरी रात पलक तक नहीं झपका सका है और उसकी सारी रात अफ़रा-तफ़री में दौड़ लगाते बीती है। मैंने आश्चर्य व्यक्त किया, "आप तो एकदम तैयार बैठे हैं जबकि आपने एक मिनट के लिए भी विस्तर का सहारा नहीं लिया। इधर मुझे देखिये कम-से-कम चार घन्टे तक तो सो ही लिया हूँ मगर फिर भी उतनी ताजगी महसूस नहीं कर रहा हूँ।"

नागपाल मोहक ढंग से मुस्करा कर बोले—"मलिक साहब, मेरी जिन्दगी एक सिपाही और मजदूर का मेल है। मुझे कई-कई रातें बीत जाती हैं जब विस्तर का मुँह भी नहीं देख पाता लेकिन सुबह उठते ही गुस्ल जरूर ले लेता हूँ शायद इसी की वजह से सुस्ती मेरे पास तक नहीं फटकती।"

नाश्ते की मेज पर मैंने उन्हें अकेले देखकर पूछा—"क्या नीना जी, अभी नहीं उठीं ?"

"मेरा खयाल है वह अब मुश्किल से ही उठ पायेगी। अगर वह रात को देर तक जाग लेती है तो अगले दिन सिर दर्द से सख्त परेशान रहती है। वह 'नर्वसनैस' की गिरफ़्त में आ चुकी है लेकिन यह मैं उसे बतलाना नहीं चाहता। अगर वह अपने शरीर की बीमारियों के बारे में सब कुछ साफ़-साफ़ जान जायेगी तो उसे और भी ज्यादा घबराहट होने लगेगी। कभी-कभी यही अच्छा होता है कि हम अपनी बीमारियों के बारे में कुछ भी न जानें। वक्त बीतता चला जाता है और एक स्वाभाविक अन्त हमें अपने में डुबो लेता है।"

"यह फ़िलासफ़ी अपनी जगह ठीक है लेकिन यह सिर्फ उन लोगों

पर लागू हो सकती है जिन्हें न अपने शरीर के रोगों का ज्ञान है और न वह इतने समर्थ हैं कि अपनी बीमारियों का उपचार करा सकें। लेकिन जिन लोगों को अपने जिस्म को ही बचाये रखने की फ़िक्र है वह तो खुर्दबीन तक से छानबीन करना चाहेंगे कि उनके बदन में रोग कहाँ छिपा हुआ है।"

मेरी बात पर नागपाल साहब हँसने लगे और बोले "एम्पटी माइंड इज डेविल्स शॉप" (खाली दिमाग़ शैतान का कारखाना) इसीलिए तो कहा गया है।"

हम लोगों ने बातें करते-करते आराम से नाश्ता ख़त्म किया और कुर्सियाँ छोड़ कर उठ गये। नागपाल मुझसे बोले—"मैं चन्द मिनटों में लौटता हूँ। फाइलें ज़रा ब्रीफ़केस में डालनी हैं। आज सेक्रेटरी तो है नहीं वर्ना मैं आपको अकेला न छोड़ता। प्लीज़ एक्सक्यूज़ मी।"

मैं वहीं फिर से कुर्सी पर बैठ गया और मैंने एक सिगरेट जला ली। सात-आठ मिनट बाद नागपाल साहब अपना ब्रीफ़केस हाथ में लटकाये आ गये और बोले "आइम रेडी टु क्वीट—मैं चलने को तैयार हूँ।"

"चलिये" कहकर मैं भी अपनी कुर्सी से उठ गया हालाँकि नागपाल का कहना यही था कि नीना सो रही होगी लेकिन मुझे तब भी उम्मीद थी कि 'अलविदा' कहने का अवसर शायद मिल ही जायेगा। हो सकता है नागपाल को मेरी आन्तरिक भावना का ज्ञान हो गया हो। वह हॉल से निकलकर ज़ीने के क़रीब पहुँचकर ठहर गए और यथाशक्ति अपने स्वर में मिठास भरकर बोले—"नीना डार्लिंग, हम लोग जा रहे हैं।"

"ओ० के० डियर मिस्टर मलिक, मेरा आदाब लीजिये। विदा के मौक़े पर हाज़िर न हो सकने के लिए मुझे माफ़ कीजियेगा लेकिन फिर कभी ज़रूर आइयेगा।" उसने अपने कमरे में लेटे-लेटे ही कहा।

मैंने अपने शब्दों में यथाशक्ति लापरवाही भरते हुए कहा, "नीना जी, मैंने आपको माफ़ कर दिया। आपने मेरी जो ख़ातिर-तवाज़ो की उसके लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद।"

"ओह थैंक्स" नीना का डूबता-सा स्वर मुझ तक पहुँचा।

नागपाल ने गैलरी पार करने से पहले फिर एक वार ऊँची आवाज़ में कहा, डार्लिंग वाई-वाई "अच्छा अब हम चलते हैं।"

इस वार कैसा भी उत्तर नहीं आया। हो सकता है नागपाल की आवाज़ नीना तक पहुँची ही न हो। मैं और नागपाल 'नीना विला' से निकलकर वाहर आ गये। कहीं कुछ ऐसा ज़रूर था जो शब्दों की व्याख्या में नहीं आ सकता था। यह शायद अकेले आदम का निर्वासन था।